दाऊद सब का सब लौटा लाया

बख्त सिंह

"हेब्रोन"
गोलकोंडा चौरस्ता,
हैदराबाद – ५०००२० (आं.प्र.)

विषय – सूची

अध्याय		पृष्ठ
१.	पुनः प्राप्ति की आशा	
२.	कुल्हाड़ी का पाठ	
३.	दाऊद की प्रथम क्षति	
४.	दाऊद की द्वितीय क्षति	
५.	दाऊद की तृतीय क्षति	
६.	क्षतिः कारण, फल एवम् निराकरण	
७.	आज्ञापालनः पुनः प्राप्ति का रहस्य	
८.	क्षति के कुछ कारण	
९.	दाऊद की चतुर्थ क्षति	
१०.	पुनः प्राप्ति के रहस्य	
११.	परमेश्वर के दिव्य विधान	
१२.	परमेश्वर की सामर्थ्य का रहस्य	

प्रथम अध्याय
पुन:प्राप्ति की आशा
(१ शमूएल ३०)

दाऊद और उसके साथियों को भारी हानि उठानी पड़ी थी। उनके सारे घर जला दिये गये तथा उनके स्त्री-बच्चे और धन-दौलत अमालेकियों द्वार लूट लिये गये। उनकी क्षति इतनी अधिक थी कि शक्तिशाली पुरुष होते हुए भी वे फूट-फूटकर रो पड़े। नारियाँ तो किसी भी समय और किसी भी स्थान में रो सकती हैं और कोई उनसे पूछता ही नहीं वे प्रात: मध्याह्न और सन्ध्या को रो सकती हैं। वे बस और ट्रेन में, प्लैटफार्म पर और प्लैटफार्म के बाहर तथा दिन में कितनी ही बार रो सकती है - - पर कोई यह नहीं कहता कि आप इतना क्यों रो रही हैं? किन्तु पुरष तो कोई अति गंभीर कारण होने पर ही रोते है। यहाँ तो शक्तिशाली योद्धा-गण इतना रो रहे थे कि उनकी आँखों के सब आँसू सूख गये, उनके गले सूख गये, और सिर में भारी पीड़ा उठी। उनमें रोने की शक्ति शेष न रही। मानवीय दृष्टिकोण से उनकी क्षति-पूर्ति की आशा ही व्यर्थ थी।

तथापि, इसी अध्याय में हम पढ़ते है, कि परमेश्वर की सहायता और कृपा से, उन्होंने जो कुछ खोया था वह तो पुन: प्राप्त कर लिया, और इसके अतिरिक्त भी बहुत-कुछ पाया। उन्होंने पुन: इतना अधिक प्राप्त किया, कि पिछले वर्षो में लिया हुआ समस्त उधार वापस करने में वे समर्थ हो गये। उन बीते वर्षों में वे जहाँ-कहीं भी रहे, वहाँ अपने भोजन और आश्रय का व्यय भी न दे सके थे। चाहे किसी स्थान में वे कुछ दिन रहे कुछ माह रहे या अधिक समय तक रहे, उन्हें भोजन और आश्रय प्राप्त होता रहा। धर्मशास्त्र में हम यह पढ़ते है, कि दाऊद ने आपने ऊपर की गई भलाइयों का पूरा हिसाब रखा था। अनेक भले व्यक्तियों ने उसे दाल, पक्षी और माँस दिये। उसे पता था कि किसने उसे ताजा

भोजन दिया और किसने बासी भोजन दिया। पद २७ से ३१ में उन स्थानों की एक सूची दी गई है जहाँ-जहाँ वह ठहरा था, तथा ३१ पद में यह सूचित किया गया हे, कि चाहे किसी स्थान में वह थोड़े दिन रहा हो या अधिक दिन रहा, उन स्थानों में, अपने ऊपर की गई कृपा के प्रति आभार प्रदर्शन के लिये उसने उपहार भेजे।

हमारी कोई वस्तु खो जाने पर हम सब उदास होते है, और हम सबने कही न कही, कभी न कभी कुछ न कुछ खोया है। अपनी वस्तु खोने के कारण कुछ लोगों ने विलाप भी किया है। किसी ने अपनी चाबियाँ या कलम या छाता खोया है। दूसरों ने रेलगाड़ी पर अपना बिस्तर खोया है या कलाई घड़ी ही भूल गये है। हमारी हानि कैसी भी हो, उससे हमें दु:ख तो होता ही है, किन्तु यही खोई हुई वस्तु जब हम वापस पा जाते हैं, तब हमें अत्यधिक हर्ष होता है। खोई हुई वस्तु प्राप्त होने पर हमें एक विचित्र ही आनन्द होता है, विशेषत: तब जब हमें उसे पाने की कोई आशा न रही हो।

कुछ समय पहले की बात है कि हेब्रोन के एक भाई को टेलीफोन का बिल चुकाने के लिये १३० रु. दिये गये, और उसने बिल और रुपये दोनों ही एक टेबल की दराज में रख दिये। उस दिन वह बहुत ही व्यस्त रहा, और सोचा कि अगले दिन बिल चुका दूंगा। दूसरा दिन भी ऐसे ही बीत गया। वह इतना व्यस्त था कि उसने सोचा कि दूसरे दिन चुका दूंगा। तीसरे दिन जब वह बिल चुकाने को जाने लगा, तब उसे बिल और रुपये दोनों ही नहीं मिले। वह सारे कार्यालय में ढूंढने लगा। उसने प्रत्येक दराज और अलमारी खोली, किन्तु उसे बिल और पैसे नहीं मिले। उसने कोना-कोना छान डाला। मालूम होने पर हम सभी बहुत दु:खी हुये। हम विभिन्न व्यक्तियों पर सन्देह करने लगे। क्या यह व्यक्ति हो सकता है? या क्या यह व्यक्ति हो सकता है? फिर उसी दिन हमने नये ताले खरीदे, और बहुत सावधान रहने लगे। कार्यालय में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति हम शंकित रहने

लगे। दो माह पश्चात् जब लोग भवन के प्रत्येक कमरे की सफाई की चेष्टा कर रहे थे, तब वे पिछले कमरे में आये, जहाँ एक आलमारी थी, वे आलमारी के पीछे सफाई करना चाहते थे, इसलिये उन्होंने आलमारी को खिसकाया और वहाँ उन्हें दीवार में एक छेद दिखाई दिया। उस छेद में उन्हें बिल और पैसे दोनों ही प्राप्त हुए। एक कमरे से दूसरे कमरे में इन वस्तुओं की ले जाने वाला यह चूहा कितना प्रशिक्षित रहा होगा। हमें यह पैसा मिलने की कोई आशा न थी, फिर भी हमने प्रार्थना की थी "कि प्रभु यह पैसा मिलने और चोर को पकड़ने में तू हमारी मदद कर।" सो अब हमें बिल और पैसे दोनों ही मिल गये, बाद में चोर की भी पकड़ सके! इस प्राप्ति का आनन्द कितना अधिक था! उस दिन अहाते का प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न था और यह कह रहा था, कि हमारी क्षति-पूर्ति हो गई, हमारी क्षति-पूर्ति हो गई।

अध्यात्मिक रुप से भी हमारे साथ यही बात होती है। अपनी त्रुटियों और असफलताओं के कारण हमें अनेक आत्मिक क्षति उठानी पड़ती है। कई ऐसे हैं जिनका आनन्द ही लुट गया है। अनेकों ने कठिनाइयों और परीक्षाओं के कारण अपना विश्वास ही खो दिया है। अनेकों ने परमेश्वर के कारण अपना विश्वास ही खो दिया है। अनेकों ने परमेश्वर की उपस्थिति को ही अपने-अपने जीवन में खो दिया होगा। अनेक व्यक्ति अब तक परमेश्वर की इच्छा पहचानने का रहस्य भी नहीं सीख पाये। अनेकों ने अपनी उस शक्ति को खो दिया है, जो उन्होंने नया जीवन पाने के समय प्राप्त की थी। अनेकों ने अपना प्रथम प्रेम खो दिया है। ऐसे कितने ही हृदय होंगे, जिनकी आत्मिक क्षति हुई है। वे धर्मशास्त्र के द्वारा अब आनन्द नहीं पा रहे हैं। अब उन्हें प्रार्थना का वह बोझ नहीं है, जो एक समय था। कई व्यक्ति प्रत्यक्ष रुदन करते है, कई छिपकर करते है, किन्तु क्षति-पूर्ति होने का विश्वास उनके हृदय में नही है। वे अपने मन में कहते हैं "हो सकता है, मैं अपने पिछले

आनन्द और शान्ति को पुन: प्राप्त न कर सकूं।" वे कहते होगें "मैं पहले की तरह प्रभु की सेवा नहीं कर सकता।" कुछ भी हो, आपने कैसी भी आत्मिक क्षति उठाई हो हमारे पास आपके लिए एक सन्देश है। आपकी क्षति का कोई भी कारण हो, आपके लिए एक आशा है। आपकी क्षति की पूर्ति हो सकती है, बल्कि आपने जो कुछ खोया है, उससे कही अधिक प्राप्त कर सकते है।

धर्मशास्त्र का आरंभ एक बहुत बड़ी क्षति की कथा से होता है – (उत्पति ३:२४अ) किन्तु उसी पुस्तक में परमेश्वर ने यह सिद्ध किया है कि यद्यपि आरंभ में आदम ने सब कुछ खो दिया तथापि हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य वह सब कुछ वापस पा सकता है। उत्पत्ति १:२८ में परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखा। उसने उसे समस्त पृथ्वी, मछली, पक्षी तथा पशुओं पर अधिकार और प्रभुता दी। वास्तव में वह समस्त पृथ्वी का सम्राट था। अब अध्याय ३ में वह एक चोर की नाई खदेड़ दिया गया, और परमेश्वर का वचन कहता है, कि स्वयं परमेश्वर ने उसे निकाल-भगाया। आरंभ में वह परमेश्वर से प्रत्यक्ष वार्तालाप कर सकता था, किन्तु अब वही परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित किया जा रहा है। अदन की वाटिका में स्थित अपने घर से वह भगाया गया उसे समस्त अधिकार त्यागना पड़ा। कितना भयंकर सर्वनाश! उस प्रथम मनुष्य आदम की क्षति का अनुमान कोई मनुष्य नहीं कर सकता। किन्तु प्रकाशित वाक्य २१ और २२ अध्यायों में हम देखते हैं कि किस प्रकार उत्पत्ति ३ की क्षति की पूर्ति की गई। वहाँ हम पाते हैं, कि मनुष्य नई सृष्टि पर राज्य कर रहा है, जो उस पुरानी सृष्टि से कहीं अधिक महिमामय होगी।

वास्तव में परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पत्ति ३ में हुई हानि से कही बढ़कर दिया। परमेश्वर ने क्रूस की शक्ति के द्वारा वापस लौटाने का काम प्रारंभ किया। इसलिए

प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में 'मेम्ना' शब्द का अठ्ठाइस बार व्यवहार किया गया है। इसमें यह सन्देश है, कि प्रत्येक पापी की प्रति एक हानि तथा प्रत्येक विश्वासी की प्रत्येक हानि की पूर्ति परमेश्वर की कृपा और उसकी सहायता के द्वारा हो सकती है। कलवरी के बलिदान में यही प्रदर्शित किया गया है।

हम मनुष्यों को दो समूहों में विभाजित कर सकते है: कुछ ऐसे हैं जिन्होंने उद्धार नहीं पाया है। अभी तक उन्हें वास्तविक शान्ति प्राप्त नहीं हुई है। वे यह नहीं कह सकते है कि परमेश्वर ने उनके पापों को क्षमा कर दिया है। वे आशा रहित और ईश्वर-रहित जीवन व्यतीत कर रहे है। उनका जीवन पराजय, दु:ख और अंधकार का जीवन है। संसार में अपना कहने को उनके पास कुछ भी नहीं है। वे भिक्षुक की नाई दरिद्रता में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस तरह उनका समय पैसा और शक्ति दिन व दिन व्यर्थ हो रहे है। यह तो वह समूह है, जो अंधकार में है ओर जिसका सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ और नष्ट हो रहा है। "मरणासन्न होने पर" जाने-अनजाने वे क्रन्दन कर उठेंगे "मेरा जीवन व्यर्थ हो गया! शीघ्र ही मैं मर जाऊँगा। किन्तु मेरा जीवन तो व्यर्थ ही गया।" किस पीड़ा के साथ वे यह उच्चारण करेंगे और यह प्रकट करेंगे यह मान लेंगे कि जो कुछ उनका था, और जो कुछ उन्होंने किया-सब व्यर्थ ही था।

सत्यता से अपने हृदय की परीक्षा कीजिए – परमेश्वर के समक्ष आपकी क्या अवस्था है? आप अपने अवकाश धन और शक्ति के द्वारा क्या प्राप्त कर रहे है? क्या ये वस्तुएँ आपको वास्तविक शान्ति और आनन्द प्रदान करती है? क्या आप परमेश्वर के किसी काम आते है? क्या आप कह सकते हैं, कि परमेश्वर ने आपके जीवन का कोई अंश उपयोग में लाया है? आप अपने प्रति विश्वास योग्य और सच्चे हों।

एक पापी के रुपमें आपका जीवन निश्चय ही नष्ट हो रहा है। धर्मशास्त्र के अनुसार हमारी धार्मिकता भी गन्दे चिथड़ो के समान है। यद्यपि हम यह कहें कि हम महान और

धनाढय व्यक्ति हैं और इस बात का घमण्ड करें, कि हम बहुत धन कमाते हैं, किन्तु हम पाप में रहते हैं, तो हमारे श्रेष्ठतम प्रयासों को भी परमेश्वर गन्दे चिथड़ों की नाई 'तिरस्कृत' करता है। मैं ने कुछ इतने गन्दे और गलत चिथड़े देखे हैं कि कुष्ठ रोगी और दरिद्र भिखारी भी उनका स्पर्श न करेंगे। बस मनुष्य का हृदय भी ऐसा ही गन्दा और निरर्थक है। यहाँ तक कि हमारी धार्मिकता भी प्रभु की दृष्टि में गन्दे चिथड़ो की तरह हैं। जब तक हमारे पापों की क्षमा न हो, और हमारे हृदय स्वच्छ न किय जायें, हम मैले चिथड़ों की ही तरह रहेंगे, तथा हमारा समय, धन और शक्ति भी व्यर्थ ही होंगे। किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि हमारे हृदय स्वच्छ होने पर हम परमेश्वर के भवन के बहुमूल्य पत्थरों में परिवर्तित किये जा सकते है। क्या आप इस बात के लिये उत्सुक हैं, कि आपके पाप क्षमा किये जायें? यीशु मसीह इस संसार में इसीलिए आये, मरे और जीवित हुए, कि हमारी समस्त क्षति की पूर्ति हो सके। यद्यपि हमने अपना जीवन अब तक व्यर्थ नष्ट किया है, तथापि अब हम फिर से परमेश्वर के सहकर्मी और सहयोगी हो सकते हैं। (१ कुर. ३:६)

क्या आपने किसी दक्ष माली को किसी अच्छे खेत या उद्यान में काम करते देखा है? उस भूमि में कार्यारंभ करने से पूर्व वह कितनी तैयारी करता है। किसी समय वही एकदम बंजर और व्यर्थ, काँटो और झाड़ियों से पूर्ण रही होगी, जो कि अब कुछ महीनों बाद फलों और रंग-बिरंगे फूलों से परिपूर्ण है। उस भूमि का कोना-कोना व्यवहार में आता है। यह प्रतिफल प्राप्त करने के लिये, उद्यान में रात-दिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। भूमि में परिश्रम करने की आवश्यकता थी। प्रतिदिन पानी देकर सप्ताह और महीनों तक प्रतिदिन उसकी रक्षा की गई थी। अन्त में जाकर यह विश्वास करना कठिन हो गया, कि यह वही खेत या भूमि है, जो आज ये सब फल-फूल दे रही है। इसी प्रकार परमेश्वर, जिसने हमारी तुलना मैले चिथड़ों से की थी, यह कह उठेगा "मेरी सुन्दर खेती!" "मेरा सुन्दर उद्यान!" बस् इसी तरह आपका जीवन परिवर्तित हो सकता है! आपके पापों के द्वारा

आपकी जो क्षति हो चुकी है। उसकी सम्पूर्णत: पूर्ति हो सकती है। अपने पापों के कारण आपने अपने परिवार और अपने परमेश्वर के नाम पर कलंक लगाया है! अपने पापों के कारण आपने अपना जीवन, स्वास्थ और देह नष्ट किया है। अपने पापों के कारण ही आप अपने परमेश्वर से बहुत दूर हैं। परमेश्वर की वस्तुओं के विषय में आप को रत्ती भर भी ज्ञान नही है। परमेश्वर के सामने आप मूर्ख है तथा जो कुछ भी आप कर रहे हैं वह व्यर्थ ही है। आशाहीन होकर ही आप काल-कवलित होंगे।

क्या आप अपना परिवर्तन चाहते हैं? हमारे पास आपके लिये एक सन्देश है। प्रभु यीशु मसीह के चरणों में आइये। पश्चातापी हृदय से आइये। अपने पापों के लिये शोकित होइये। आज ही परमेश्वर आपको क्षमा करके परिवर्तित कर देगा। यही कारण है कि वह आपको ढूढ़ने और बचाने इस संसार में आया।

इक्कतीस वर्ष पूर्व मेरा जीवन नष्ट हो रहा था सम्पूर्ण रुप से मेरा जीवन नष्ट हो रहा था। उस समय मेरा जीवन लज्जास्पद पराजय और निष्क्रियता का जीवन था। पर आज मैं यह साक्षी दे सकता हूँ, कि अब मैं जो कुछ कहता और करता हूँ, उसका शाश्वत मूल्य है। जब मैं कोई त्रुटि करता हूँ, तब मेरा प्रभु मुझे ठीक करने, डाँटने और मुझे वापस ले आने के लिये है।

दाऊद को अपने जीवन में चार महान क्षति उठानी पड़ी, और हम विश्वासी भी अपने जीवन में महान क्षतियाँ उठाते है। परमेश्वर की कृपा और सहायता से दाऊद को सब कुछ वापस मिल गया न केवल वह जो उसने खोया था पर उससे भी अधिक प्राप्त किया। हम विश्वासी भी सन्देह एवम् मूर्खता अंधेपन तथा पराजय के कारण अनेक क्षति सहते हैं, पर परमेश्वर के वचन के द्वारा हम जान सकते हैं कि विश्वासी की क्षति-पूर्ति किस प्रकार हो सकती है।

सन १६४७ में पाकिस्तान और भारत के विभाजन के समय बहुत से हिन्दू तथा सिख अपने घरों से भगाये गये। जब सरकार द्वारा यह कहा गया कि वे उन वस्तुओं की एक सूची तैयार करें, जो खो गई या पीछे छूट गई। तब उन्होंने कुछ क्षति-पूर्ति को आशा में सरकार को अपनी सूची प्रस्तुत की किन्तु बहुतों ने मिथ्या विवरण दिया। यदि किसी ने ६००० रु. खोए, तो उसने २६००० रु. का ब्यौरा दिया। यह तो सांसारिक ज्ञान की बात हुई। आप अपने और ईश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने, और परमेश्वर को आपकी क्षति पूर्ति करने दें। उससे बिनती करें – "हे प्रभु मेरी समस्त हानि की पूर्ति होने में तू मेरी सहायता कर।" क्या आपकी शान्ति नष्ट हो गई? क्या आपका आनंद खो गया? या आपका विश्वास कुछ कम हो गया? क्या आपका मन शंकित है? क्या परमेश्वर के वचन के लिये आपकी भूख और प्यास नष्ट हो गई?

मैं कुछ व्यक्तियों को जानता हूँ, जो बड़ी मात्रा में चावल खा सकते हैं। वे पहला, दूसरा तीसरा और चौथा परोसन भी खा सकते है। वे एक दर्जन फुलके, एक दर्जन पूरियाँ, दही आदि चाहते हैं। किन्तु जब वे अस्वस्थ हो जाते है, तब अल्प मात्रा भी अस्वीकार कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति की ओर देखने पर प्रत्येक यह समझ जाता है कि यह बीमार है। प्रत्येक व्यक्ति उसे देखकर यह कहता है, मैं ने स्वयं उसे बहुत खाते देखा है, पर अब वह भोजन को अस्वीकार करता है, तथा उसे आग्रहपूर्वक खिलाना पड़ रहा है।

आत्मिक रुप से-परमेश्वर के वचन के लिये आपकी भूख कहाँ चली गई? अपने मसीही जीवन के आरंभ में आप धर्मशास्त्र के कई अध्याय पढ़ा करते थे, आप बड़े आनन्द से प्रत्येक सभा में उपस्थित होते थे, किन्तु अब आप आधा अध्याय पढ़ने मे ही कठिनाई अनुभव करते हैं। प्रभु के वचन के लिये आपकी क्षुधा बुझ गई, आपने प्रार्थना का बोझ भी खो दिया, परमेश्वर के वचन को समझने का ज्ञान भी नष्ट हो गया। अब आप यह भी नहीं जानते कि परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द कैसे उठायें। परमेश्वर के भवन में प्राप्त

होने वाले अनेक अधिकार आपने खो दिये। कृपया परमेश्वर को अपनी समस्त हानियों के विषय बताइये, तब प्रार्थना कीजिए, "हे प्रभु अब मेरी समस्त क्षति की पूर्ति के लिए मेरी सहायता कर।" परमेश्वर के बचन के द्वारा आपको यह विश्वास दिलाया गया है, कि आपने जो कुछ गंवाया है, उससे अधिक ही प्राप्त करेंगे।

इंगलैंड में वस्त्र-धुलाई की कुछ दूकानें है, जहाँ जाने पर यदि आपके वस्त्र खो जायें या फट जायें, वे आप को यह लिखकर भेजते है। "हमें खेद है कि आपकी धोती या कमीज खो गई या फट गई, कृपाकर हमें स्पष्टत: बताइये, कि वह क्या था।" क्योंकि उनके पास आपके कपड़े खोने या फटने पर वे उसकी क्षति-पूर्ति करेंगे। आपकी शिकायत मिलने पर वे कहेंगे, कि "कृपाकर हमें अपना माप सूचित करें, हम आपको नई पोशाक देंगे। भले ही आपका खोया हुआ कोट पुराना रहा हो, फिर भी उसके स्थान पर वे आपको नया कोट देंगे। मेरे साथ यह घटना इंगलैंड में घटी थी – भारत में नहीं। एक बार धोबी के यहाँ मेरा कोट नष्ट हो गया। तब उन्होने मुझे नये कोट के लिये पैसे दिये, जिससे हमने उससे भी अच्छा कोट बनवाया। किन्तु इंगलैंड ने जितना मेरे लिये किया, परमेश्वर उससे भी अधिक आपके लिये करेगा। आपने जितना गंवाया है, परमेश्वर उससे भी अधिक आपको देगा। किन्तु आपको विश्वासयोग्य सत्यनिष्ठ और निष्कपट होना, तथा उसे समस्त क्षतियां बतानी होगी। आगे अध्ययन करने पर हम परमेश्वर के वचन से यह ज्ञात करेंगे कि दाऊद की चार क्षतियों की पूर्ति किस प्रकार हुई, तथा अपनी समस्त आत्मिक क्षति हम कैसे पूर्ण करा सकते हैं।

द्वितीय अध्याय
कुल्हाड़ी का पाठ
(२ राजा छ: १-७)

अनेक व्यक्ति हैं, जो अपने आत्मिक जीवन में लगातार हानि उठाते जा रहे हैं। किन्तु हम विश्वास करते हैं, कि ईश्वर चाहता है कि हमारी समस्त क्षति की पूर्ति हो। वह नहीं चाहता कि हमारा कुछ भी नष्ट हो जाए। जब वह हमें कुछ प्रदान करता है तब वह चाहता है कि हम अनन्तकाल तक उसका आनन्दोपभोग करते रहें। हमें शाश्वत जीवन कुछ वर्षो के लिये ही नही किन्तु अनन्तकाल के लिये दिया गया है, यही जीवन हममें तथा हमसे अनन्तकाल तक प्रवाहित होते रहना चाहिये। शत्रु अपनी ओर से इस प्रवाह में बाधा डालने की पूर्ण चेष्टा करता है, किन्तु परमेश्वर सभी बाधाओं को हटाकर हमें पूर्ण प्रवाह का निश्चय प्रदान करता है।

हमारे घर के नलों मे हमेशा बाधारहित प्रवाह नहीं भी हो सकता है। जल-प्रदान व्यवस्था में कोई त्रुटि नहीं है, चूँकि जल-संग्राहलय में बहुत पानी है, किन्तु नल के अन्दर ही कुछ रुकावट है। आप नल-मिस्त्री को बुलाते है, जो अपने कार्य में दक्ष है। वह नल की सफाई करके रुकावट को दूर करता है और जल प्रवाह अबाध रुप से होने लगाता है। नल घंटो टपकता रहता है, इस प्रकार बहुत सा जल नष्ट हो जाता हे, अभी मात्र एक 'वाशर' की आवश्यकता है और पानी टपकना बन्द हो जाता है। एक बार हमारे घर के पीछे स्थित नल की भी यही स्थिति हुई। वर्षो उसमें से जल टपक कर व्यर्थ गया। किसी ने भी एक नया 'वाशर' लगाकर उसे रोकने का कष्ट नहीं किया। अन्त में एक दिन किसी को हम पर दया आई और उसने 'वाशर' बदल कर पानी का टपकना बन्द करवाया।

बहुत से विश्वासी भी टपकने वाले हैं। वे सब कुछ नष्ट कर रहे हैं - - उनके समय धन और शक्ति का अपव्यय हो रहा है। कभी-कभी तो एक अत्यन्त सामान्य वस्तु के द्वारा ही इस अपव्यय को रोका जा सकता है। हमारी हानि चाहे अज्ञानवश या गलती के कारण हुई हो, उसकी पूर्ति की जा सकती है। धर्मशास्त्र हमें बतलाता है कि हमारी जो भी आत्मिक क्षति हुई हो, उसकी पूर्ति की जा सकती है। यह असंभव दिखाई दे सकता है. किन्तु परमेश्वर की सहायता से उसकी कृपा और उसके वचन के द्वारा यह क्षति पूर्ति हो सकती है।

इस सामान्य पाठ की शिक्षा हमें २ राजा छ: १-७ में बताई गई; नवीन भविष्यद्वक्ताओं की कथा के द्वारा दी गई है। वे एलीशा के साथ अध्ययन कर रहे थे, और उन्हें वह स्थान रहने के लिये छोटा जान पड़ा। वे एक बड़ा मकान चाहते थे, और इसके लिये उन्हें लकड़ी की आवश्यकता थी। लकड़ी के लिये उन्हे यर्दन नदी के पार जाना था। अत: वे एकत्र होकर वहाँ गये। यद्यपि वे सभी युवक थे, भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र थे, उनमें कुछ ज्ञान भी था। इसी लिये वे एलीशा को भी साथ ले गए। (पद ३) वे कह सकते थे कि बूढ़े को साथ रखकर क्यों झंझट उठायें? वह तो हमें किसी प्रकार सहायता नही दे सकता। वह अधिक दूर चल भी नहीं सकता। यदि वह हमारे साथ आयेगा तो हमें कदाचित उसे उठाकर ले जाना होगा उसे खिलाना पिलाना होगा, सोवा सुश्रूषा भी करनी होगी। ऐसा ही कई नवयुवक सोचते है। वे सोचते हैं, कि उन्हे अपने पिता की सेवा नहीं करना चाहिये क्योंकि पिता ने केवल तृतीय श्रेणी तक शिक्षा पाई है और वह अंग्रेजी के एक शब्द का भी उच्चारण नही कर सकता। आज के युवक यह सोचते है, कि वे अपने गुरुजनो से अधिक ज्ञान रखते हैं। हो सकता है उनके गुरुजन धारा-प्रवाह वार्तालाप नहीं कर सकते। शायद एक शब्द बोलने के पहले ही वे हलकाते या तुतलाते हों। सो नवयुवक यह सोचते हैं, कि

ऐसे वृद्ध पुरुष या स्त्री के पास वे अपनी व्यक्तिगत समस्यायें लेकर क्यों जायें? वे सोचते हैं, कि वे अपने माता-पिता तथा सम्बन्धियों से अधिक ज्ञानवान हैं, और इसी कारण बहुत से नवयुवकों ने अपनी ही गलती से अपना जीवन नष्ट कर लिया। इन नवयुवकों में समझ थी, तथा एलीशा से साथ चलने का अनुरोध करके उन्होंने इसका प्रदर्शन किया।

लकड़ी काटते समय किसी युवक की कुल्हाड़ी बेंट से छूटकर पानी में गिर पड़ी (पद ५)। यह नवयुवक अधिक चतुर न रहा होगा, अन्यथा चलने के पहले वह कुल्हाड़ी की जाँच कर लेता। उसे यह देख लेना चाहिये था, कि कुल्हाड़ी की बेंट दृढ़ है तथा कुल्हाड़ी उसमें अच्छी तरह कसी हुई है। किन्तु अनुभवहीनता के कारण, यह देखे बिना ही कि कुल्हाड़ी ढीली है उसने लकड़ी काटना शुरु कर दिया, और प्रथम वार में ही वह कुल्हाड़ी बेंट से अलग होकर नदी में गिर पड़ी। नदी गहरी थी, अत: नवयुवक चिल्लाने लगा – "अब मैं क्या करुँ?" वह कुल्हाड़ी उसकी भी नहीं थी। दूसरे से उधार माँग कर लाया था; और उसने यह प्रतिज्ञा कि होगी, कि लकड़ी काटने के पश्चात् वह कुशलतापूर्वक कुल्हाड़ी उसके मालिक को लौटा देगा। एक भविष्यद्वक्ता का पुत्र होने के नाते उसे अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनी थी।

बहुत से लोग उधार लेना बहुत अच्छी तरह जानते हैं। वे बड़े चतुर होते हैं। जब कभी वे उधार लेना चाहते हैं, विशेष रुप से जब वे पैसा उधार लेना चाहते है, वे बड़े भोले बनकर कहते हैं – "जिस दिन मुझे मजदूरी मिलेगी उसी दिन मैं आपको वापस कर दूँगा। उनके बात करने के ढंग से महाजन का हृदय पिघल जाता है। वह सोचता है।" मुझे इस बेचारे की सहायता करनी चाहिये। यह भला मनुष्य मालूम पड़ता; और अपने वचन का पालन करेगा। "इस प्रकार उधार माँगनेवाला जो कुछ भी माँगता है, उसे मिल जाता है। किन्तु क्या वह अपने वचन पर स्थिर रहता है? जो वस्तुएँ पिछले वर्ष में उधार ली गई थी,

वे अभी भी लौटाई नहीं गईं है। ऐसे व्यक्तियों को जब आप याद दिलाते है, तब प्रथम तो वे अच्छी तरह उत्तर देते हैं किन्तु कुछ दिनों के बाद वे आपके शत्रु बन जाते है। वे उधार लेना तो भली प्रकार जानते हैं, किन्तु लौटाना नहीं जानते। अनेक विश्वासियों ने अपना आनन्द और शान्ति तथा अधिकार भी खो दिया है। वे अपने वचन का पालन नहीं कर सकते। अपनी अपनी प्रतिज्ञाओं को वे पूर्ण नहीं करते। वे अपना ऋण नहीं चुकाते। किन्तु इस कथा वाले नवयुवक ने-यद्यपि अपनी मूर्खता के कारण कुल्हाड़ी खो दी; उसे लौटा देना चाहा। नयी कुल्हाड़ी खरीदने के लिये उसके पास पैसे नहीं थे, इसी से दु:खी था। "आह मैं क्या करुँ? कैसे उस व्यक्ति को अपना मुख दिखाऊँ? मैंने कितने निश्चय पूर्वक यह कहा था —" मैं आपकी कुल्हाड़ी आपको सुरक्षित वापस कर दूंगा। "अब तो मैंने उसे खो दिया। मैं क्या करुँ?" वह एक चतुर युवक था, क्योंकि अन्य युवकों के पास जाने के बदले वह एलीशा के पास गया वह यह कह सकता था। मेरे युवक साथियों मेरी कुल्हाड़ी पानी मे गिर गई है, कृपया जल में जाकर मुझे वह ला दीजिए "किन्तु एक बुद्धिमान युवक होने के नाते युवकों के पास जाने के बदले वह वृद्ध एलीशा के पास गया (पद ५-६)। उसने उससे कहा, आह मेरे स्वामी!" उसे विश्वास था, कि यदि कोई उसकी सहायता कर सकता है, तो वह एलीशा ही है (पद १५)। वह नवयुवक जब एलीशा के पास गया तब उसने अपनी अयोग्यता और असफलता को स्वीकार किया। उसने कहा "आह मेरे स्वामी! अपनी अज्ञानता से मैंने कुल्हाड़ी खो दी। मैं उसे लौटाना चाहता हूँ, क्योंकि वह तो माँगी हुई थी। मेरे स्वामी, मुझे बताइये कि मैं क्या करुँ? एलीशा ने कहा," मुझे वह स्थान बताओ जहाँ कुल्हाड़ी गिरी। अत: नवयुवक ने वह स्थान बता दिया, और एलीशा ने एक वृक्ष की डाल काटकर पानी में डाल दिया। तत्काल ही कुल्हाड़ी पानी पर तैरने लगी। पुआल के एक टुकडे की नाई लोहा पानी के ऊपर आकर तैरने लगा। इस प्रकार इस नवयुवक की क्षति-

पूर्ण हुई। यह एक सामान्य कहानी है किन्तु इसमें वह गंभीर अर्थ छिपा हुआ है, जो हमें आत्मिक क्षति पूर्ति की शिक्षा देता है।

हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि नवयुवकों ने एलीशा से साथ चलने का अनुरोध किया। इसी प्रकार आप भी इस बात का ध्यान रखिये, कि आप यह निश्चित रुप से जान लें, कि जहाँ कही भी और जब कभी भी आपको जाना है सच्चा एलीशा, प्रभु यीशु मसीह आपके साथ जाता है। स्वयं की शक्ति और बुद्धि पर भरोसा न कीजिये। इन पर आपकी आशीष और उन्नति निर्भर नहीं करती। यदि प्रभु आपके साथ नहीं जाता, तो आप जो कुछ भी करें वह समृद्धि-सम्पन्न कभी न होगा।

दूसरी बात यह है कि यदि आप कुछ खो देते हैं, तो उसे स्वीकार करने में लज्जित न हों। यह युवक कह सकता था, "यह मेरी गलती नही थी बेंट टूटा हुआ था।" किन्तु अपनी गलती को छिपाने का कोई प्रयास उसने नही किया। अपनी मूर्खता और लज्जा को न छिपायें और अन्य लोगों की सहायता न लीजिए – सीधे प्रभु यीशु के पास जाइये। युवक प्रथम एलीशा के पास आया। आप भी पहले प्रभु के पास जाइये। उसके चरणों में जाइये। अपने को दीन बनाकर अपनी क्षति और असफलता को उसके सामने स्वीकार कीजिए। आपकी प्रार्थना इस प्रकार हो "आह मेरे स्वामी,! मैं क्या करुं?" प्रभु आपको उस स्थान पर ले जायेगा, जहाँ पर आपकी हानि हुई थी। परमेश्वर आपकी सहायता किस प्रकार करता है यह देखने के लिये आप अभिलाषी और तत्पर हों। एलीशा द्वारा काटी हुई लकड़ी प्रभु मसीह के क्रुस का निर्देश करती है। हमारे पापों के लिय वे एक पेड़ पर टंगे और मरे और उसी क्रुस के द्वारा हमारा क्षति की पूर्ति हो सकती है। लोहा जल पर तैरने लगा, यद्यपि यह अस्वाभाविक है। परन्तु एलिशा के लिए यह आश्चर्य कर्म तो कुछ भी

नहीं था। इसी रीति से हम विश्वास के द्वारा क्रुस को अपने जीवन में अपना सकते हैं, और उसके द्वारा हम देखेगें कि हमारी समस्त क्षति की पूर्ति होती है।

अब यह नवयुवक एक नूतन अनुभूति और विश्वास के साथ जा सका। क्षति की पूर्ण पूर्ति को चुकी थी तथा उसे शान्ति आनन्द और ज्ञान भी प्राप्त हो चुका था। इसी तरह परमेश्वर आपकी भी सहायता करे। यह सामान्य नियम स्मरण रखे। सर्व प्रथम आप उसे वह स्थान दिखायें जहाँ से आपकी क्षति का आरंभ हुआ और कहें – हाँ प्रभु अमुक तिथि और अमुक समय मैंने मूर्खता की, इसी कारण मेरे जीवन में यह हानि हुई। इस प्रकार यदि आप प्रभु के पास पापों का अंगीकार करें तो क्रूस की शक्ति के द्वारा वह आपकी प्रत्येक हानि की पूर्ति करने में आपकी सहायता करेगा। क्रूस परमेश्वर की शक्ति है तथा एक सरल एवं जीवित विश्वास का होना अनिवार्य है। "दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया।" दाऊद के स्थान पर आप अपना नाम रखकर देखें – और अनुभव करें कि आप अपनी क्षति की पूर्ति करा सकते हैं। आप चाहे जो भी हो, आप भी जो कूछ खो चुके हों, उससे अधिक प्राप्त कर सकते हैं। हमारा प्रभु हमारे साथ है। उसने कहा: "देखो मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।" उसके पास जाने में न हिचकिचाएँ। आप अपनी हानियों को उसे बताएँ। यह भी विश्वास करें कि वह आपकी समस्त हानियों की पूर्ति में सहायता करने के लिये क्रूस पर बलिदान हुआ।

तृतीय अध्याय
दाऊद की प्रथम क्षति
(१ शमूएल २९-३०)

हमें यह बात सर्वदा स्मरण रहे कि आत्मिक क्षति की पूर्ति पूर्णरुपेण हो सकती है। आपकी हानि कितनी ही बड़ी क्यों न हो, और उसका कैसा भी कारण हो, वह पुन: लौटाई जा सकती है। वास्तव में वापस पाने के समय जितना हम खो चुके उससे अधिक ही प्राप्त करते हैं। किन्तु हमें परमेश्वर के वचन और उनके दिव्य नियमों का पालन करने को सहमत होना पड़ेगा जिन्हें कोई मनुष्य परिवर्तित नहीं कर सकता। न ही वे धन, शिक्षा और ओहदे के द्वारा बदले जा सकते है। विशेष क्या ये ही नियम प्रत्येक के लिए लागू होते हैं।

इसके पूर्व हम देख चुके हैं, कि दाऊद को बड़ी हानि उठानी पड़ी। यद्यपि वह एक भला, बुद्धिमान तथा दयालु राजा था ईश्वर के हृदयानुकुल था, फिर भी वह शैतान के द्वारा चार अवसरों पर भ्रम में पड़ गया, और उसे चार बड़ी-बड़ी हानियाँ उठानी पड़ी। किन्तु परमेश्वर की सहायता और कृपा के द्वारा उसने सब कुछ वापस पा लिया। आइए अब हम उन चार कारणों पर विचार करें, और देखें कि किस प्रकार उसने सब कुछ वापस पाया। प्रथम कारण तो १ शमूएल २६:१-४ में है। दाऊद, शाऊल के विरोधी में पलिश्तियों की सेना में भर्ती होना चाहता था। क्योंकि परमेश्वर ने शाऊल के स्थान पर दाऊद को राजा होने के लिए चुना था, इसलिए शाऊल उसका शत्रु हो गया, और अनेक बार उसे मार डालने का प्रयत्न किया। बहुत वर्षो तक शाऊल, दाऊल को मारने का प्रयास करता रहा, और दाऊद अपने प्राण बचाने के लिए शरण ढूँढता हुआ इधर-उधर भागता रहा। अन्त में पलिश्तियों के राजा के पास उसे शरण मिली।

पलिश्ति अपने सरदारों की अधीनता में एकत्र हो कर शाऊल के विरुद्ध युध्द करने को चले। दाऊद भी उनके साथ चला किन्तु पलिश्तयों के सरदार शंकित हो उठे, और उन्होने कहा "इब्रानी है, कौन जानता है कि यह हमारी सेना छोड कर शाऊल की सेना से मिल न जायेगा?" एकमात्र राजा आकीश ने दाऊद पर विश्वास किया था। उसने कहा, "मैं दाऊद को वर्षों से जानता हूँ। वह हमारे साथ बहुत दिनों से रह रहा है। हम उस पर नि:संदेह विश्वास कर सकते है।" पलिश्तियों के दूसरे सरदारों ने दाऊद पर विश्वास न किया, और उसे बहुत दु:खी हुआ, "मेरा शत्रु शाऊल पिछले कई वर्षों से मुझे मार डालने की चेष्टा में लगा हुआ है। मैंने उसकी कोई हानि नही की। यद्यपि मुझे दो अवसर मिले, जब मैं उसकी हत्या कर सकता था, मैंने उसक छोड दिया। किन्तु वह मुझे अभी भी मार डालना चाहता है।" अन्त में वह पलिश्तियों की सेना में सम्मिलित हुआ जो शाऊल से युद्ध करने जा रही थी। दाऊद जातना था कि शाऊल शमूएल द्वारा अभिषिक्त राजा है और यद्यपि शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है फिर भी वह परमेश्वर का अभिषिक्त है। इसी कारण परमेश्वर ने दाऊद को यह अवसर नहीं दिया कि वह शाऊल को स्पर्श करे। किन्तु दाऊद अधीर हो गया। वह कष्टों से उकता गया था। वह अपने हृदय में कहता था – "मैं ने शाऊल की कोई हानि नहीं की फिर भी वह मुझे मारना चाहता हैं मेरे लिए न तो कोई आश्रय है न टिकने का स्थान है, मैं वास-स्थान भोजन और वस्त्र के लिए अपने मित्रों पर निर्भर हूँ। मै कब तक कष्ट सहता रहूँ?" प्रत्येक बात की एक सीमा होती है।

जब हमारा कष्ट दीर्घकालीन होता है, तब हम भी अपने मन में ऐसे प्रश्नोत्तर करते हैं। हम कहते हैं – कब तक मैं दु:ख भोगता रहूँ? आखिर मैं भी एक मनुष्य हूँ। मुझ असहाय की ओर तनिक दृष्टिपात करो, पिछले कितने ही वर्षों से मैं कष्ट उठा रहा हूँ। मैं

धर्मशास्त्र पढ़ता हूँ और परमेश्वर को प्रसन्न रखने योग्य सब कार्य करता हूँ। मैं किसी की कोई हानि नहीं कर रहा हूँ, फिर भी परमेश्वर मेरे कष्टों पर दृष्टिपात नहीं करता।" इस प्रकार हम कुड़कुड़ाना आरंभ करते है। हमारे हृदय में सन्देह और भय हे, तथा अपनी समस्याओं पर विजय पाने के लिये हम अनुचित अस्त्रों का प्रयोग आरंभ करते हैं। किन्तु दाऊद परमेश्वर का जन था। उसने अनेक अवसरों पर परमेश्वर की मध्यस्थता को अनुभव किया था; हर समय सहायता लिये वह परमेश्वर के पास गया। कही जाने के पहले वह परमेश्वर की सम्मति लेता था। वह जानता था, कि परमेश्वर की इच्छा कैसे मालूम की जाती है। १ शमूएल ३०:१-१० में हम देखते हैं, कि कही जाने के पहले परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये वह प्रधान याजक से विचार-विमर्श कर लिया करता था। महायाजक ऊरीम और तुम्मीम में जड़ित पत्थरों की सहायता से – पुराने नियम में परमेश्वर की इच्छा जान सकता था। जिस व्यक्ति के पास भी कोई समस्या होती थी, वह माहायाजक से विचार – विमर्श करता था। वह उसके पास जाकर कहता था, "कृपाकर इस विषय पर मेरे लिये परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करें।" अब दाऊद जानता था कि अनेक अवसरों पर परमेश्वर उसकी सहायता करने को उसके साथ रहा हैं। फिर भी इस बार वह परमेश्वर से पूछे बिना ही पलिश्तियों के साथ हो लिया। प्रभु पर निर्भर न रहकर वह शाऊल से प्रतिशोध लेने को व्यग्र हो उठा। सामान्य, मानवीय रीति के अनुसार वह कहने लगा "शाऊल ने मुझे बहुत सताया है। यद्यपि मैं अभिषिक्त होकर राजा बना हूँ, फिर भी आज मुझे गुफाओंमें निवास करना पड़ रहा है। न मुझे शरणस्थान है, न घर है न भोजन की व्यवस्था है। अब मैं अधिक प्रतिक्षा नहीं कर सकता।" अत: उसने पलिश्तियों की सेना में सम्मिलित होने का निश्चय किया।

जब दाऊद और उसके साथी सिगलग को वापस आये, तब उन्होंने अपने घरों को भस्म हुआ पाया। उनकी स्त्रियाँ, बालक और धन-दौलत अमालेकियों द्वारा लूट लिये गये थे। यह सब दाऊद की असफलता के कारण हुआ। पलिश्तियों के पास जाने के पूर्व उसे परमेश्वर से पूछ लेना था। किन्तु उस समय वह अपनी बुद्धि और शक्ति पर निर्भर था। जब वह वापस आया, उसने देखा कि सभी झोपड़ियाँ जला दी गईं थी, और शत्रु उनकें धन-दौलत, स्त्री-बच्चों को बन्दी बनाकर ले गये थे। सो वे जब जोर-जोर से चिल्लाकर देर तक रोते रहे। जब तक रोने की शक्ति शेष रही, वे रोते रहे। उनका दु:ख अत्याधिक था। दाऊद के साथी उसे पत्थरवाह करना चाहते थे। विपत्तियों के समय हमारे मित्र भी शत्रु बन जाते हैं (१ शमूएल ३०:६) दाऊद को यह जानकर अत्याधिक दु:ख हुआ, कि लोगों ने उसे पत्थरवाह करने की बात वाही। वे उसके ही सैनिक थे, किन्तु अपने संकट के कारण वे अपने नेता को पत्थरवाह करना चाहते थे। दाऊद अकेला पड़ गया था। पलिश्ती उसे चाहते नही थे, और अब उसके अपने ही लोग कह रहे थे, "हम तुझे पत्थरवाह करेंगे।" वह अकेला था; बिल्कुल नि:सहाय! उसकी पत्नियाँ और बच्चे सभी लूट लिये गये। तब अचानक वह होश में आया (पद ६) इन शब्दों को रेखांकित करें – क्योंकि एक दिन जब आपके प्रियजन, तथा वे जिन्हें आप प्रेम करते हैं, आपका परित्याग कर देंगे, उस दिन ये शब्द आपकी सहायता करेंगे। दाऊद ने प्रभु में उत्साह प्राप्त किया। अब उसे चेत हुआ और उसने कहा, "है परमेश्वर मेरी त्रुटियों के लिये मुझे क्षमा कर, क्योंकि तेरी इच्छा जाने बिना ही मैं पलिश्तियों में सम्मिलित हो गया। प्रभु मुझे क्षमा कर। आज मेरा कोई मित्र नहीं, मेरे साथ सहानुभूति दिखाने वाला कोई नही है।" तब दाऊद ने एब्यातार याजक को बुला भेजा, और उससे कहा "कृपाकर मेरे लिये परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करो। हम क्या करें? क्या हम अपने शत्रु अमालेकियों का पीछा करें?" ईश्वर ने कहा, "हाँ जाओ।" फिर उसने

कहा, “हे प्रभु यदि हम जायें, तो क्या अपना समस्त वापस पा लेंगे?” और ईश्वर ने कहा – (पद ८) “नि:सन्देह, नि:सन्देह, तुम सब कुछ पा जाओगे।” ईश्वर ने कहा और दाऊद ने विश्वास किया, और उन्होंने अमालेकियों का पीछा किया। मैदान में उन्हें एक मिस्त्री पुरुष भूमि पर पड़ा मिला। वह अस्वस्थ था। अत: उन्होंने उसे कुछ भोजन और जल दिया। जब वह कुछ स्वस्थ हुआ, तब दाऊद ने उससे पूछा, “तुम कौन हो? उसने कहा,” मैं अमालेकियों का एक दास हूँ। मार्ग में मैं अस्वस्थ हो गया और मेरे स्वामी ने मुझे त्याग दिया, और वे लोग चले गये।” उस व्यक्ति की सहायता से दाऊद ने अमालिकियों के उस स्थान का पता लगाया, जहा अमालेकी डेरा डाले हुए थे। वे सब आनन्दपूर्वक नाच-गाना करते हुए खा पी रहे थे। दाऊद और उसके साथियों ने अचानक उन पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने अपने स्त्री बच्चों को सामान सहित वापस पा लिया, और अमालेकियों को नष्ट कर दिया। लूट का माल इतना अधिक था, कि उससे उनके समस्त ऋणों का भुगतान हो गया। हमने देखा कि दाऊद ने उन सभों के पास दान और उपहार भेजे, जिनके साथ उसने निवास किया था।

हम अध्याय ३१:३-६ में पढ़ते हैं, कि किस प्रकार पलिश्तियों और शाऊल का युद्ध हुआ। इस युद्ध में शाऊल मर गया। जब दाऊद ने शाऊल की हत्या करने की चेष्टा की थी, तब परमेश्वर ने उसे ऐसा करने से रोका, क्योंकि शाऊल परमेश्वर का अभिषिक्त था। अब शाऊल और उसके पुत्र युद्ध में मारे गये। दाऊद को शाऊल के विरुद्ध युद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। दाऊद के अनजाने ही यहोवा उसके हेतु कार्य कर रहा था। परमेश्वर ने दाऊद को एक महान और श्रेष्ठ सेवा के लिये निर्वाचित किया था। एक राजा ही नहीं, परमेश्वर ने उसे एक भविष्यद्वक्ता होने के लिये भी निर्वाचित किया था। वह ईश्वर का भविष्यद्वक्ता ही नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने उसे अपनी स्वर्गीय योजना भी दी

थी। यही कारण है, कि उसे अनेक बार कसौटी में जाकर खरा उतरने की आवश्यकता थी। विश्वासी होने कें नाते हम भी परमेश्वर के द्वारा अति महान एवं श्रेष्ठ उद्देश्य के निमित्त निर्वाचित हुए हैं। उस आव्हान के निमित्त हमें भी असीम यंत्रणाओं में से पार निकलता है। अपने जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करना हमारा कर्तव्य है।

पुराने नियम में लोगों को महायाजक के पास जाना पड़ता था, किन्तु अब परमेश्वर स्वयं ही महायाजक है। वह मेरा मुक्तिदाता, मेरा प्रभु, मेरा राजा, मेरा मित्र और मेरा वकील भी है। मैं उसके पास किसी भी समय जा सकता हूँ। याजक को दो ऊरीम और तुम्मीम नामक पत्थर दिये गये थे, अब प्रभु यीशु मसीह ने दो पत्थर अर्थात्-दिव्य प्रकाश और दिव्य सत्य मेरे अन्तर में ही रख दिया है। (भजन ४३:३) के अनुसार जब मैं ईश्वर की इच्छा ज्ञात करने को उसके भवन में जाता हूँ, तब अन्तर्वासी मसीह के रुप में उसका प्रकाश और उसका सत्य मेरा पथप्रदर्शन करते है।

वह मेरा सत्य, मेरी ज्योति और मेरा मार्गदर्शक है। किन्तु अनेक विश्वासी अपने अधिकार का उपयोग नहीं करते। परमेश्वर से परामर्श न लेकर वे किसी दूसरे के पास परामर्श करने जाते है। अनेक विश्वासी स्वयं की बुद्धि काम में लाते हैं, और स्वयं की योजना बनाते है। वे अपने मित्रों और अपनी सांसारिक बुद्धि पर अधिक भरोसा करते हैं। परमेश्वर द्वारा अभिशासित न होकर वे लौकिक बुद्धि के द्वारा अभिशासित होते है। इसी प्रकार वे व्यापार, विवाह तथा अन्य विषयों में भूल करते हैं, और जब आप उनसे प्रश्न करें "आपने परमेश्वर की इच्छा के लिये प्रतीक्षा क्यों न की?" तो वे उत्तर देते हैं – "मैं कब तक प्रतीक्षा करुँ? मैं ने इतने वर्षो तक प्रतीक्षा की है। मेरे बाल श्वेत हो रहे हैं, यदि मैं और अधिक ठहरुँ तो कौन मुझसे विवाह करेगा? नहीं, नहीं ऐसे तो काम नहीं चलने का! मैं प्रतीक्षा करता रहा, करता रहा – और अधिक नहीं कर सकता।"

यही कारण है कि आज अनेक व्यक्ति कष्ट भोग रहे हैं। उन्होंने परमेश्वर की इच्छा की उपेक्षा की, परमेश्वर की योजना को विस्मृत कर दिया, अत: वे भारी क्षति सह रहे है। एक दिन दाऊद की भांति वे इतना रोयेंगे, कि उनके पास रोने की शक्ति शेष हो जायेगी। उनके मित्र भी उनका परित्याग कर देंगे। तब वे समझेंगे कि परमेश्वर की इच्छा का बहिष्कार करना, तथा उसकी इच्छा का बहिष्कार करना, तथा उसकी इच्छा जानने में असफल होंना कितना महंगा पड़ता हैं।

परमेश्वर की इच्छा ज्ञान करने का निश्चय कर लें। कृपया पलिश्तियों के साथ न जायें, चाहे वें चाचा, चाची या कोई भी सम्बन्धी हों। कोई भी समस्या हो, चाहे वे पारिवारिक हों, या मांडलिक हो, उसके लिये अपनी बुद्धि का प्रयोन न करें। अन्यथा फूट फूट कर रोने और अपने अंतरंग मित्रों से बिछड़ने को तैयार हो जाएँ।

अन्त में दाऊद परमेश्वर के पास लौट आया। आह परमेश्वर का धन्यवाद हो कि कितनी नम्रता और दीनता से परमेश्वर के निकट आकर उसने उत्साह प्राप्त किया। दाऊद ने प्रभु से पूछा और प्रभु ने उससे बात की। तब दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया, बल्कि जो खोया था, उससे भी अधिक पाया। वह दिन धन्य था। उसने, उसके जनों ने, तथा स्त्रियों और बच्चों ने हर्ष मनाया।

अब आप स्वयं ही परख सकते हैं, कि परमेश्वर आपकी क्षति की पूर्ति ही नहीं करता वरन् उसके पास जाने पर वह आपके दु:ख को हर्ष में परिवर्तित कर देता है। पलिश्तियों पर निर्भर न रहें, न ही अपने मित्रों का भरोसा करें, किन्तु मात्र परमेश्वर पर विश्वास करें। हर स्थिति में उसकी इच्छा जानने की चेष्टा करें। उससे पूछना सीखें। उसकी आवाज सुनना सीखें ताकि उसकी आज्ञापालन कर सकें। चाहे परिस्थिति असम्भव हो, फिर भी उसका आदेश पालन करें।

चतुर्थ अध्याय
दाऊद की द्वितीय क्षति
(१ इति: १३ – १५)

अब हम दाऊद की द्वितीय महान क्षति की ओर ध्यान दें। सर्व प्रथम हम परमेश्वर के वचन के दो अंशो का पठन करें। प्रथम अंश तो १ इतिहास १३ में तथा द्वितीय अंश १ इतिहास १५ में है। कितने उत्साह और परिश्रम से दाऊद ने परमेश्वर का सन्दूक उसके स्थान में लाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु अफसोस! कि गिनती ४ और ७ में परमेश्वर के आदेशानुसार इस्त्राएलियों और हारुन के पुत्रों तथा कहानियों के पुत्रों को एकत्र करने के स्थान पर उसने सन्दूक को एक नयी गाड़ी में ले जाने में अपनी मानवीय बुद्धि और उत्साह का प्रयोग किया था। आपको स्मरण होगा, कि १ शमुएल में किस प्रकार परमेश्वर का सन्दूक पलिश्तियों के द्वारा पकड़ा गया था, तथा इसी के कारण उनको एक महान संकट का सामना करना पड़ा था क्योंकि उन्होंने पहले सन्दूक को दागोन नामक अपने देवता के मन्दिर में रखा, तत्पश्चात् उसे गत और एक्रोन को भेजा। यहोवा का सन्दूक जहाँ-जहाँ गया, वहाँ विपत्ति पड़ी। (१ शमूएल ५:१० – १२) अंत में ६ अध्याय में पलिश्तियों ने यहोवा के सन्दूक को इस्त्राएलियों के देश में लौटा दिया।

वर्षो पश्चात् जब दाऊद ने परमेश्वर के (सन्दूक) को पुन: उसके स्थान पर ले जाने का विचार किया, तब उसने भी पहले पलिश्तियों का अनुकरण किया। यहोबा ने गिनती ४-१५ तथा ७-६ में यह स्पष्ट आदेश दिया था, कि यहोवा के सन्दूक को लेवियों के पुत्र कहातियों के पुत्र अपने कंधो पर ही उठाकर चलें। उसे गाड़ी पर कभी भी न ले जाया जाये। तथापि दाऊद ने उमंग में आकर लेवियों से पूछने के बदले १ इतिहास १३:१ के (अनुसार) सहस्त्रपतियों और शतपतियों से सम्मति ली। "और समस्त मंडली ने कहा

हम ऐसा ही करेंगे, क्योंकि यह बात उन सब की दृष्टि में उचित प्रतीत हुई। (पद ४) परिणाम यह हुआ कि सन्दूक को एक नयी गाड़ी पर रखा गया। मार्ग में बैलों ने ठोकर खाई। जब उज्जा ने सन्दूक को सम्भालने के लिये अपना हाथ बढ़ाया, तब ईश्वर का क्रोध उज्जा पर भड़क उठा, और उसने उसे मारा इस प्रकार वे सन्दूक को उसके निर्धारित स्थान पर न ला सके। किन्तु अध्याय १५ में हम देखते हैं, कि अध्याय १३ में की गई भारी भूल के लिए दाऊद ने पश्चाताप किया। फिर उसने लेवियों और हारुन की सन्तानों को एकत्र किया। (१ इति. १५:४-५) और स्वीकार किया कि उसने गिनती और व्यवस्थाविरण में सीधे-सादे और स्पष्ट रुप में दिये गये दैविक नियम के अनुसार परमेश्वर का आदेश नहीं लिया, फलस्वरुप उसे तथा समस्त राष्ट्र को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। किन्तु अब, जब उसने परमेश्वर के वचन के अनुसार उसके नियम का पालन करना आरंभ, किया तब वह और समस्त प्रजा हर्षोल्लास के साथ निर्धारित स्थान पर परमेश्वर का सन्दूक ला सकने में समर्थ हो सके।

इस महान घटना के बाद दाऊद ने वह आश्चर्य जनक धन्यवाद का गीत लिखा, जिसे हम भजन संहिता १०५ में पाते हें और सन्दूक के अपने स्थान पर पहुँचाए जाने पर दाऊद का हृदय जिन भावों से परिपूर्ण हो उठा था, उन्हीं की अभिव्यक्ति हम इस वचन में पाते हैं। “आहा! यहोवा का धन्यवाद करो, उसके नाम को पुकारो, मनुष्यों के बीच उसके कार्यो का वर्णन करो, उसके आश्चर्य कर्मो का गुणगान करो। इत्यादि (पद १-७, १४, १५) दाऊद का हृदय स्तुति से परिपूर्ण था। वह प्रभु के प्रेम में मस्त हो गया, वह लोगों से कहने लगा-” “परमेश्वर तथा उसके सामर्थ की खोज करो, सदा सर्वदा उसके दर्शन के अभिलाषी बने रहो (पद ४) ! यदि हम परमेश्वर के दर्शनों के खोजी बने न रहें, तथा प्रत्येक कार्य में उसके आदेश का पालन करने के आकांक्षी न हों, और अपनी प्रत्येक

क्रिया, कर्तव्य और योजना के विषय चाहे वे गृहस्थी की हों या मंडली की हों, उसके नियम का पालन न करें, तो यह निश्चय है कि हमें भारी क्षति उठानी पड़ेगी। हम अपनी आकांक्षा बुद्धि और निर्णय के द्वारा शासित नहीं हो सकते।

परमेश्वर के वचन का अनुसरण करने में असफल होने के कारण आज परमेश्वर के लोगों को महान क्षति उठानी पडती है। उदाहरण स्वरुप परमेश्वर का वचन इतना स्पष्ट है, कि पुरनियों और प्राचीनों का चुनाव कभी भी मतदान के द्वारा न हो, प्रस्तुत अत्याधिक प्रार्थना तथा हृदय की एकता के उपरान्त उन्हें आगे लाना चाहिये। इस प्रकार जब वे पूरी तरह से जाँच लिये जाएँ, तभी उनका पृथक्करण हो। किन्तु शोक का विषय है, कि इस अध्यात्मिक सेवा के लिये हम संसार के प्रत्येक विभाग में, तथा प्रत्येक मसीही सभा में देखते हैं, कि प्राचीनों अथवा मंडली के समिति-सदस्यों का (चाहे आप जो भी दूसरा नाम उन्हें देना चाहें) चुनाव मतदान के द्वारा होता है। जो प्रार्थना के द्वारा प्राचीन प्राप्त करने की पद्धति पर विश्वास करते हैं, वे भी इस अत्यावश्यक कार्य सम्पादन में इतने असावधान और उदासीन हो जाते हैं, कि इस कार्य के सम्बन्ध में प्रभु के सेवक तथा सहकर्मी के रुप में सम्मिलित होकर प्रार्थना किये बिना ही किसी व्यक्ति की मानवीय योग्यता, उसकी भीषण पटुता, अथवा उसकी सांसारिक अवस्थिति अथवा अन्य साधन-सम्पन्नता के द्वारा संचालित होते है। यही कारण है, कि कतिपय धर्म-परिषदों में झगड़े विवाद तथा ईर्ष्या द्वेष प्रविष्ट हो गये है। क्योंकि जो लोग मंडली समिति के सदस्य अथवा प्राचीनों के चुनाव में हार जाते है, वे विजयी व्यक्तियों से झगड़ा-विवाद करने लगते है। इस विवाद का प्रभाव मंडली के सभी सदस्यों पर पड़ता है। इसका परिणाम निष्फलता और वृद्धि रोध हैं, और लोग सभा में उपस्थित होकर भी क्षुधित और तृषित रह जाते हैं।

आरंभिक कलीसिया में विश्वासी आवश्यकता के समय परमेश्वर का ही भरोसा करते थे। उन्हें धन के लिये न तो भिक्षाटन करना पड़ता था, न ही दूसरों को संकेत देना पड़ता था, किन्तु परमेश्वर पर विश्वास करते थे और परमेश्वर उनकी सहायता करता था। परन्तु आजकल तो फैशन सा हो गया है कि जब विश्वासियों को धन की आवश्यकता पड़ती है, तो वे या तो संकेत देने लगते है, अथवा विनय करते है, यहाँ तक कि धन खींचने के लिये वे दबाव डालने वाली विधियाँ भी प्रयोग करते है। ऐसा धन परमेश्वर के द्वारा पवित्र नहीं ठहर सकता। और क्योंकि ऐसे व्यक्तियों ने परमेश्वर के वचन और नियम की उपेक्षा की है, वे आत्मिक हानि उठा रहे हैं।

यद्यपि दाऊद एक महान राजा था, उसने अनेक युद्ध किये और परमेश्वर का प्रिय पात्र था, हाँ और वह एक बुद्धिमान राजा था, और परमेश्वर ने उसे बड़े सामर्थ के साथ प्रयोग किया था, फिर भी परमेश्वर का सन्दूक उसके स्थान पर लाने के लिये उसने स्वयं की बुद्धि का प्रयोग किया और समस्त प्रजा ने सोचा कि यह उचित है। जब उसने यह विचार प्रकट किया कि एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन करके, सन्दूक को विजय के साथ उसके स्थान पर लाया जाये, तो सब ने इस पर अपनी सम्मति दी। उन सब ने सोचा कि वे परमेश्वर की बड़ी भारी सेवा कर रहे है किन्तु यह सब कुछ उनकी ही बुद्धि के अनुसार था, न कि परमेश्वर के वचन और उसकी स्वर्गीय योजना के अनुसार।

तत्पश्चात् जब दाऊद ने अपने अपराध का अँगीकार किया, परमेश्वर ने उसे क्षमा किया, क्योंकि परमेश्वर दयामय है, करुणामय है, और जब हम अपने आप को नम्र करते है, और अपने अपराधों और असफलताओं को मान लेते हैं, तब वह हमें क्षमा तो करता ही है, वह हमारी समस्त क्षति की पूर्ति करने में भी हमारी सहायता करता है। परिणाम-स्वरुप समस्त राष्ट्र ने एक महान आनंद की अनुभूति की तथा परमेश्वर के आदेशानुसार जब

कहाती-सन्तानों के कंधो पर यहोवा का सन्दूक लाया गया, तब परमेश्वर के वचन का सम्मान भी हुआ।

यहोवा का यह सन्दूक स्वयं प्रभु यीशू मसीह को निर्देश करता है। जिन्होंने यथार्थत: पुन: जीवन प्राप्त किया है, तथा जिनका उसके द्वारा अह्वान हुआ है, उन्हें ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि, उसका दावा पेश करें, तथा मनुष्यों को मुक्ति का मार्ग दर्शाएँ। शोक का विषय है, कि आजकल अनेक व्यक्ति ऐसे है, जिनका परमेश्वर की सेवा के लिए कभी अह्वान नहीं हुआ, फिर भी उन्हें सेवा कार्य के लिए बरबस भेज दिया जाता है। यही कारण है कि पैंसठ प्रतिशत से भी अधिक प्रचारक जिन्हें इंगलैंड, स्काटलैन्ड, अमेरिका कनाडा या ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से बाहर भेजा जाता है वे अपनी ५ वर्ष की अवधि समाप्त होने पर कभी भी प्रचार क्षेत्र में लौटकर नही जाते। वे निराश होकर घर वापस जाते हैं। अनेको का तो दिल ही टूट जाता है। क्योंकि वे कभी भी परमेश्वर के द्वारा नहीं बुलाये गये थे। किन्तु वे किसी समिति अथवा मानवीय प्रभाव के द्वारा भेजे गये थे। इसी प्रकार कई व्यक्तियों को उनकी सम्पत्ति अथवा स्थिति के कारण मसीही समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, किन्तु उन्हें सेवकाई के लिए कभी भी नही बुलाया गया, इसी से वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मंडली की व्यवस्था करने में असमर्थ हैं।

यही बात विवाद के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। ऐसे अनेक व्यक्ति है जो विवाद विषय में विचार करते समय अपनी मानवीय बुद्धि का प्रयोग करते हैं। नवयुवक होने के नो वे एक दूसरे को पसन्द करते है। वे एक दूसरे के प्रति आकृष्ट होते है। किन्तु वे केवल स्नेह, प्रेम अथवा आकर्षण की भावनाओं का ही अधिपत्य मानते हैं। हो सकता है, कि वे उस समय अनुकूल हों, तथा परमेश्वर उन्हें जीवन की इच्छा जानने को उसके पास नहीं आते। मैं विश्वासियों के विषय कह रहा है, आविश्वासियों के विषय नहीं। क्योंकि हर

विषय में विश्वासियों को ही परमेश्वर के सम्मुख आने, और उसकी इच्छा जानने का सौभाग्य है। परमेश्वर ने उनसे बातें करने का वचन दिया है, जो उसका स्वरुप देखना चाहते, और उसकी इच्छा जानने की अभिलाषा करते हैं। अनेक विश्वासी हैं, जो परमेश्वर से अपने विवाह, और जीवन संगी के विषय पूछने के बदले, स्वयं से, अपनी भावनाओं और संवेगो से, या अपने आदरणीय मित्र या सम्बन्धियों से विचार विमर्ष करते हैं, और कभी भी घुटनों पर आकर प्रार्थना नहीं करते। वे उनके साथ प्रार्थना करने को मना कर देते हैं, जो परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करने में उनकी सहायता कर सकते हैं। इसी कारण से अनेक परिवार दु:खी हैं। वे अपना वैवाहिक जीवन बड़ी आशाओं के साथ आरंभ करते हैं, किन्तु शीघ्र ही दम्पत्ति को ज्ञात हो जाता है, कि वे एक साथ नहीं रह सकते तथा परिवार में सतत संग्राम होता रहता है, और उनके अपने हृदय में वे दु:खी रहते हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार विश्वासियों को यह सौभाग्य है, कि हम प्रत्येक विषय में - चाहे वे मंडली के कार्य, सेवाकार्य या परमेश्वर के भवन की कोई भी सेवा हो – परमेश्वर को सिद्ध इच्छा ज्ञात कर सकते हैं। वर्तमान काल में ऐसे अनेक उत्साही व्यक्ति हैं जिन्हें देश के ही नही संसार के भी विभिन्न भागों में सुसमाचार प्रचार करने की तीव्र आकांक्ष है। बड़े उत्साह से वे घर-घर, गली-गली, देश विदेशी में जाकर समय धन और शक्ति व्यय करके प्रचार के लिए जाते हैं, फिर भी जो परिणाम मिलना चाहिए वह नहीं मिलता। आरंभ के कुछ महीनों में वे बहुत आनन्दित हो सकते हैं, जब कि वे यह देखते हैं, कि लोग पुस्तकें खरीद रहे हैं, और परमेश्वर के वचन में दिलचस्पी ले रहे हैं किन्तु तुलनात्मक रुप से देखा जाय तो इन सबके परिणाम स्वरुप बहुत ही कम व्यक्ति नया जन्म प्राप्त करते हैं। हम उन पर आरोप नहीं लगा सकते क्योकि वैसी ही बातों पर हम पर भी आरोप लगाया जा सकता है। मेरा स्वयं का भी ऐसा अनुभव है, जब मैंने प्रथमत:

सेवकाई कराची में आरंभ की (१६३३ में), तब मैं घर-घर और गली-गली में, अनेक भाषाओं में सुसमाचार और पुस्तिाकांए लेकर जाता था, क्योंकि उन दिनों भारत के विभिन्न प्रान्तों के निवासी कराची में थे। मैं सेवाकार्य प्रात:काल ही आरंभ कर देता था। मैं बहुत सारे प्रचार-पत्र, पुस्तकें और धर्मशास्त्र वितरित करने में समर्थ था। इस प्रकार मैने अनेक आश्चर्यजनक सम्पर्क स्थापित किये। अनेक हिन्दु, सिक्खों और मुसलमानों ने अभिरुचि दिखाई। लोगों ने मुझे अपने घरों में भी आमंत्रित किया। मैंने उनसे मुक्ति मार्ग के सम्बन्ध में घंटो बातें की, उनके साथ बैठा रहा। मैंने उन्हें अपनी साक्षी दी। किन्तु कोई फल नहीं देखा। बहुत ही कम लोगों ने नया जन्म प्राप्त किया। जो भी हो मैंने समझ लिया कि मेरा कर्तव्य पूरा हो चुका। आत्माएँ तो एक ही दिन में नया जीवन नहीं पातीं। परमेश्वर अपने निर्धारित समय पर फल देकर आशीषित करेगा। किन्तु मैं निराश हो गया, थक गया, बड़ा आश्चर्य हुआ, कि कोई फल क्यों नहीं हुआ।

अतएव मैं प्रार्थना करने लगा, "हे प्रभु, क्या कारण है कि मैं अपने परिश्रम एवं सेवा का कोई फल नहीं पाता? मैं कई बार उपवास करता हूँ, मैं बहुत त्याग भी करता हूँ, कई मील पैदल चलता हूँ, इतने लोगों से बातें भी करता हूँ। किन्तु इतना करते हुए भी मुझे कोई फल दिखाई नहीं देता।" तब परमेश्वर ने मुझसे स्पष्ट कहा – "मैंने तो तुम्हें उपवास रखने, निराहार रहने अथवा मीलों पैदल चलने को कभी नहीं कहा, तुम तो सब कुछ अपनी बुद्धि के द्वारा कर रहे हो।" मुझे बड़ा धक्का लगा। प्रारंभ में मै जब भारत लौटा था, तब प्रभु ने मुझसे कहा था कि तुम कभी भी अपनी योजना मत बनाना। किन्तु किसी कारणवश मैं यह नही समझ पाया था, कि उन शब्दों का अर्थ क्या है। अब मैं यह नही समझ पाया था, कि उन शब्दों का अर्थ क्या है। अब मैं वह अनुभव करने लगा कि प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा हम प्रभु को सम्मुख पा सकते हैं और अपना दैनिक कार्य आरंभ

करने के पूर्व ही उसकी स्वर्गीय योजना प्राप्त कर सकते हैं। उस दिन मैं ने यह निश्चय किया कि मैं बाहर नहीं जाऊंगा। प्रभु मुझसे बात करनेवाला था, अत: मैं लगातार प्रार्थना करता रहा और बहुत लम्बे समय तक प्रार्थना करने के बाद परमेश्वर ने मुझसे बात की, और कहा, -- "आज मैं तुम्हें सिपाही बाजार नामक स्थान को भेजना चाहता हूँ।" मैंने अपने मित्रों को बुलाकर कहा, कि परमेश्वर ने मुझे कहा है, कि "सिपाही बाजार में एक आत्मा तैयार है। कृपया आप भी मेरे साथ चलें।" उन्होंने उत्तर दिया, "वह स्थान तो बड़ी दूर है लगभग चार मील होगा, अब दोपहर हो चली है, गर्मी भी बहुत अधिक है। हम कल प्रात:काल ही चलेंगे, तब ठण्डा और अच्छा समय होगा।" मैंने कहा, - "नहीं परमेश्वर ने स्पष्ट कहा है और मुझे विश्वास है कि कोई भूखी आत्मा सुसमाचार की प्रतीक्षा कर रही है। हम उसे निराश नहीं कर सकते। हमें जाना ही होगा" उन दिनों में सुसमाचार-प्रचार के लिये हम कभी भी बस या रेलगाड़ी से विभिन्न स्थानों पर नहीं जाया करते थे। तीन-चार मील चलने के पश्चात् हमने एक दूकान के सामने खाली मैदान देखा। हमने वहाँ खड़े होकर एक गीत गाया, और प्रचार करना आरम्भ किया। एक मुसलमान दूकान में से निकलकर आया, और उसने कहा – "देखो मैं एक मुसलमान हूँ, और यह मेरी दूकान है।" मैं किसी भी मसीही को यहाँ प्रचार नहीं करने दूँगा। मैंने कहा, "ठीक है, परमेश्वर का संदेश किसी को भी बलपूर्वक नहीं दिया जा सकता, यदि हम आपको छोड़ यहाँ से चले जायें, तो न्याय के दिन परमेश्वर के सामने आपको उत्तर देना होगा। अत: यदि आप हमें नहीं चाहते, तो हम यहाँ से चले जायेंगे। परन्तु आप परमेश्वर को उत्तर देने को तैयार हो जाएँ।

हम आगे बढ़े। पुन: हमने खुला स्थान देखा और रुक गए, एक भजन गाया और प्रचार करने लगे। तब वहाँ एक सिपाही आया। उसने कहा "यह थाना है। आप यहाँ खड़े

नहीं हो सकते।" मैं कहा "हे प्रभु तूने मुझे सिपाही बाजार जाने को कहा। हमें तो कोई चाहता ही नहीं।" अत: हम लोगों ने तनिक और आगे बढ़ने का निश्चय किया। हम आगे बढ़े और फिर एक खुली जगह देखी प्रभु ने कहा – "अब यहाँ रुक जाओ।" अत: हमने प्रचार किया, एक भजन गाया, और प्रार्थना की। हम प्रचार करने के पूर्व हमेशा प्रार्थना करते है, क्योंकि हमने अनुभव किया है, कि प्रार्थना के बाद प्रचार करना अधिक उत्तम है। हमने यह नियम बनाया है, कि जहाँ तक संभव हो हम घुटनों पर आकर ही प्रार्थना करें, क्योंकि लोगों के हृदय नर्म होते हैं, जब ये हमें घुटनों पर गिरकर, वचन के लिये, वचन को लोगों के लिये ग्रहणयोग्य बनाने के लिये, प्रार्थना करते हुए देखते हैं। तो हम ने प्रार्थना की, और वचन देने के बाद प्रार्थना समाप्त करते ही एक व्यक्ति मेरे निकट आया, जिसका नाम अमरनाथ था। उसने मुझ से कहा, "महाशय, प्रभु ने आपको मेरे लिए भेजा है। मैं एक हिन्दु हूँ, और पंजाब विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट हूँ। चार वर्षो से मैं शान्ति की खोज कर रहा हूँ, किन्तु कोई भी मेरी सहायता करने में समर्थ नहीं है। मैंने हिन्दुओं के प्रसिद्ध स्थानों में भ्रमण किये है, किन्तु किसी भी प्रकार मुझे सन्तोष नहीं मिला।" उसने यह भी कहा, कि "किसी सच्चे मसीही से मिलने की मुझे इच्छा थी, किन्तु मुझे यह ज्ञात न हो सका कि मै कहाँ जाऊँ?" उसने फिर कहा, "आप लोगों को मसीही गीत गाते सुनकर मुझे बड़ा आनन्द मिला। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर ने आपको मेरे ही लिए भेजा है। उसी दिन उसने शान्ति पाई, तथा जब मैंने देखा कि अनेकों व्यक्ति बाइबल पाठ के द्वारा शान्ति प्राप्त कर रहें है, तो मेरे हृदय में महान आनन्द का स्त्रोत फूट पड़ा।

उस दिन से तो पूरा नक्शा ही बदल गया। प्रभु हमें सभी प्रकार के स्थानों में ले गया। कई स्थान तो एकदम सूनसान थे, तथा यद्यपि लोग संख्या में तो बहुत कम थे, तथापि प्रभु ने आत्माओं को बचाना आरंभ किया। हमने निर्णय कर लिया था, कि हम पहले एक

साथ मिलकर प्रार्थना करेंगे, और तब बाहर जाएँगे। जब हमने ऐसा किया तब लोगों ने त्राण पाया, तथा हम लोगों को फल दिखाई पड़ने लगा। तब से अब तक काम बन्द नहीं हुआ।

मुझे याद आता है, कुछ वर्षो पूर्व परमेश्वर ने मुझे एक एकान्त ग्राम बरनूल जाने को कहा। मैं स्वयं वहाँ कभी नही गया था, किन्तु पुन: मुझे परमेश्वर ने कहा – "बरनूल को जाओ।" तब मैंने अपने मित्र से कहा, "आओ, हम चलें! बरनूल नामक शहर में हमारी कोई प्रतीक्षा कर रहा हैं। वह तैयार भी है।" वह तैयार हो गया। यह जगह बहुत दूर थी। हमें सौ मील के लगभग तो रेल से जाना पड़ता, कुछ दूर चलने के पश्चात् नाव से जाना था, फिर पैदल चलना था। मैं यह जानता था, कि वहाँ कोई है, और हमें जाना ही है। हमने कुछ पुस्तकें साथ लीं, और प्रभु ने मुझे एक उर्दू बाइबल भी लेने को कहा। इस प्रकार लगभग दिन भर, रेल, नाव और पैदल यात्रा करने के पश्चात् हम सूर्यास्त से तनिक पहले ही बरनूल पहुँचते। चौरास्ते के एक किनारे मैं, और दूसरे किनारे पर मेरा मित्र खड़ा था। और जब मैं खड़ा था, तब एक मनुष्य मेरे निकट आया। उसने कहा – "मैं देख रहा हूँ कि आप एक मसीही हैं। मैं एक मुसलमान हूँ। यह मेरा गाँव हैं, और मैं अपने गांव में किसी मसीही को प्रचार नहीं करने दूंगा।"

मैंने कहा, "यह सच है कि आप एक मुसलमान हैं, और यह आपका गांव है, किन्तु मैं किसी मनुष्य के द्वारा नहीं भेजा गया हूँ। मैं सत्य ही कहता हूँ कि मुझे परमेश्वर ने भेजा है। मैं किसी समाज के लिये काम नहीं करता, न ही मेरे काम का मुझे कोई वेतन मिलता है। मैं बाइबल से घृणा करता था, तथा मैं मसीहियों से भी घृणा करता था। मेरा पालन-पोषण सिक्ख धर्म में हुआ, और मुझे कोई उपदेश सुने बिना या किसी सभा में भाग लिये बिना ही प्रभु यीशु मसीह १६२६ के दिसम्बर मास में प्राप्त हुए, एवम् मेरे सम्पूर्ण जीवन को सम्पूर्णत: बदल दिया। तत्पश्चात् सन १६३२ इ. में मैंने परमेश्वर की सेवा के लिए

अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। अब वह मुझे आदेश देता है, तथा वह जहाँ भेजता है, वहाँ मैं जाता हूँ। मैं उसके आदेश का पालन करता हूँ। वह एक जीवन्त उद्धारकर्त्ता है, जिसने सभी पापियों इस गाँव का तो नाम भी मैं नहीं जानता था। तब उसने कहा – "ठीक है, आप ठहरे कहाँ हैं? मैंने उत्तर दिया, बस यहीं।, उसने कहा – बहुत अच्छा, आप चलिए मेरे साथ ठहरिये, मैंने कहा आपकी बड़ी कृपा है!" उसने उत्तर दिया – "मान लिजिए, मैं लोगों को यदि आमंत्रित करुँ तो क्या आप सुसमाचार सुनाएँगे?" और इसी मुसलमान व्यक्ति ने अपने सेवकों को भेजकर हिन्दु-मुसलमान को एक बड़ी संख्या में एकत्रित कर लिया (वह गांव का मुखिया था) तथा वह स्वयं दुभाषिया बना। वचन समाप्त होने पर बहुत से लोगों ने अभिरुचि दिखाई, तथा पुस्तकें खरीदकर घर गए। तप्तश्चात् हमने थोड़ा भोजन किया। जब हम लोग एक साथ भोजन समाप्त कर चुके, तब एक मुसलमान सिपाही मेरे पास आया। उसने कहा – "महाशय परमेश्वर ने आपको मेरे लिए भेजा है" तब उसने मुझे बताया, कि कई वर्ष पहिले किसी ने उसे उर्दू में एक सुसमाचार पुस्तिका दी थी। उस ने उसे बार-बार पढ़ा था; और प्रतीक्षा करता रहा, कि कोई आकर मुक्ति का मार्ग और भी पूर्णता और स्पष्टता से बताये। इसी कारण परमेश्वर ने मुझे उर्दू बाइबल लेने को कहा था। जब वह मैंने उसे दिया तो वह कृतज्ञ हुआ, और उसने सच्ची शांति पाई।

इस प्रकार जब कभी भी हम लोग सम्मिलित हो कर प्रार्थना करने में समर्थ हुए, तब-तब हमें नवीन रुप से फल, आशीष तथा परमेश्वर की शक्ति प्राप्त हुई। ऐसा केवल एक ही बार नहीं; किन्तु विगत बत्तीस वर्ष की सेवा में ही ऐसा हुआ है। हमने अनुभव से देखा है कि जब हम किसी सेवा के लिए यथेष्ट रुप से तथा धैर्यपूर्वक प्रभु से बिनती कर सकने में समर्थ होते हैं, तब प्रभु विशेष रुप से हमारे साथ होता है। यही कारण है कि जब

हम नियमित सुसमाचार सेवा सुसमाचार सभाओं तथा पवित्र सभाओं का आयोजन करते हैं, तब बहुत आशीष की वर्षा होती है। जब हम प्रार्थना करते है, तब परमेश्वर हमें आशीष प्रदान करता है।

हमें कभी धन की याचना नहीं करनी पड़ी, क्योंकि हम अपनी सेवा के लिए परमेश्वर की योजना प्राप्त कर लेते है। आजकल हम बहुत लोगों को देखते हैं, कि जब वे किसी वृहत् योजना की कल्पना करते हैं, और उन्हें अर्थाभाव होता है, तो वे याचना करने लगते है। धन-याचना करना उन्हें पूर्ण न्यायसंगत प्रतीत होता है। वे सब प्रकार की सांसारिक प्रणालियों का प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि वे अपवित्र व्यक्तियों से भी धन प्राप्त करने में नहीं हिचकते वे परमेश्वर के वचन के द्वारा या भी नही देखते कि, प्रेरितों को धन प्राप्ति के लिए कभी याचना नहीं करनी पड़ी। लोग स्वप्रेरित थे, उन्हे यह शिक्षा दी गई थी, कि किसी प्रकार आनन्द पूर्वक दे सकें। हमने भारत में प्रभु के लिए अपनी सेवा के विषय देखा है, कि हमें धन के लिए कभी किसी को संकेत नहीं करना पड़ा। कभी-कभी तो हमारी आवश्यकता बहुत भारी रही परन्तु हमने सम्मिलित रुप से प्रार्थना की, और चूंकि वह प्रभु का कार्य रहा और उसका ही उत्तरदायित्व था, कि हमारी आवश्यकतांए पूर्ण करे इसलिए उसने ही पूर्ण किया। कोई भी बिल चुकाने के लिए हमें एक दिन भी रुकना नहीं पड़ा। हमें यह प्रतिज्ञा प्राप्त हैं, कि परमेश्वर सब कुछ समय पर पूर्ण करेगा। अत: हर स्थिति में हमें भी किसी सभा अथवा सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए प्रभु की योजना के सम्बन्ध में निश्चित होना चाहिए। सहायता के लिए हम भारत अथवा किसी अन्य व्यक्ति पर भरोसा नहीं रखते। परन्तु हम परमेश्वर की आज्ञानुसार चलने का उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं। हमारे व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन तथा मांडलिक जीवन के लिए भी यह नितान्त आवश्यक है। जब हम दिव्य आदेश का अनुसरण करते हैं, तो हमें यह ज्ञात हो

जाता है, कि स्वयं परमेश्वर ही हमारी समस्त आवश्यकताओं के लिए उत्तरदायी है। जब हम अपनी बुद्धि लड़ाते है, जैसा दाऊद ने किया था, और परमेश्वर के आदेश को परिवर्तित कर डालते हैं, तो हमें भारी क्षति उठानी पड़ती है। हमारे लिए यह गम्भीर चेतावनी है, कि हम परमेश्वर की प्रार्थना में लगे रहें, उसके वचन का पालन करें तथा उसकी आज्ञानुसार चलें।

कलिसिया के निर्माण कार्य के लिए यह विशेष रुप से अनिवार्य है। हम परमेश्वर की इच्छानुसार चरवाहा चाहते हैं। हमें मंडली के साथ मिलकर कई दिन तथा आवश्यकता पड़ने पर कई सप्ताह और कई माह प्रार्थना करनी पड़ती है, ताकि हम उन्हें खोज सकें, जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया, तैयार किया और महान कार्य के लिए चुना है। परमेश्वर की सेवा का जो उत्तरदायित्व हमें वहन करना है उसके लिए हमें सर्वदा परमेश्वर की मनसा और योजना ज्ञात करना चाहिए। हम परमेश्वर के वचन को परिवर्तन करने का प्रयत्न कभी यह कह कर न करें, कि अब तो जमाना और समय बदल गया है। परमेश्वर का वचन कभी बदल नहीं सकता। अत: प्रार्थना करें कि प्रभु आपको आपकी समस्त क्षति पूर्ण करने में सहायता दे, जिन्हें आपने अपनी बुद्धिकेद्वारा सेवा करके, उसकी सेवा में, अथवा उसकी इच्छा, अपने विवाह के विषय न जानने के कारण अपने विवाहित जीवन में उठाई हो, सम्भव है कि आपके पश्चाताप के द्वारा दूसरे लाभान्वित हों, तथा अपने विवाहित जीवन में यदि सचमुच आप दोनों मिलकर अपनी की हुई भूलों के लिए पश्चाताप करें, एवम् परमेश्वर से क्षमा माँगे तो वह नि:सन्देह आपको क्षमा प्रदान करेगा तथा आप केवल अपनी प्रत्येक घटी की ही पूर्ति नहीं कर पाएँगे बल्कि उसके द्वारा आपके जीवन का उपयोग होगा एवम् दूसरों को भी आशीष मिलेगी।

पंचम अध्याय
दाऊद की तृतीय क्षति
(२ शमूएल ११)

दाऊद ने सब कुछ वापस पाया। अब हममें से प्रत्येक उस अंश में अपना नाम बैठा दें, एवम् विश्वास के द्वारा उन शब्दों की सत्यता की माँग करते हुए प्रार्थना करें कि पवित्रात्मा उन शब्दों को हमारे हृदयपटल पर खोद दे। आप चाहे कितने ही मूर्ख हों। और कुछ भी स्मरण करने में असमर्थ हों, फिर भी इतने थोड़े शब्दों को स्मरण रखने की चेष्टा करें। "दाऊद ने सब कुछ वापस पाया।" इन शब्दों को दुहराते समय, इन अंश में अपना नाम रखें, और यह प्रार्थन करें कि ये आपके अनुभवों का प्रतिनिधित्व कर सकें। आपकी क्षति कितनी ही बड़ी हो, और उसका कारण कैसा ही लज्जाजनक क्यों न हो, उसकी पुन: प्राप्ति हो सकती है। हमारे प्रभु मसीह इस संसार में आये, कि किसी भी देश में रहनेवाले, और किसी भी मात्रा में हुई क्षति की पूर्ति हो सके।

बाल्यावस्था से लेकर अब तक हममें से प्रत्येक ने कई वस्तुएँ खोई होंगी। विद्यार्थी जीवन में हमनें पुस्तकें पेंसिल और रबर तथा कलमें खोई हैं। अनेकों ने अपनी चप्पलें, चावियाँ, कलम और घड़ियां खोई हैं आप कल्पना कर सकते हैं, कि इन पिछले वर्षो में आपने कितनी वस्तुएँ खोई है? एक सूची तैयार करने का प्रयत्न कीजिए, और जब यह कल्पना करें कि एक दिन वे सभी वस्तुएँ आपको वापस मिल गई। कैसा महान आनन्द होगा! इसी प्रकार अनेकों ने अपना स्वास्थ्य, मित्रगण, बच्चे और आनन्द भी खो दिया है। एक कल्पना कीजिए कि आपकी क्षतिपूर्ति के लिए ये सब खोया हुआ आपको वापस मिल जाता है। किन्तु आत्मिक रुप से हमने जो कुछ खोया है, उसे पूर्ण रुप से पुन:प्राप्त कर लेने पर हमें कैसा महान आनन्द होगा। अपनी मूर्खतावश हम यह भी नहीं जानते कि आत्मिक

रुप से हम कितना कुछ खो रहे हैं। अपनी आत्मिक क्षति का उचित अनुमान लगाने में सहायता प्राप्त करने के लिए हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

२ शमूएल ११ में दाऊद की तीसरी क्षति की कहानी विश्वासियों तथा अविश्वासियों दोनों ही के लिए एक सन्देश देती है।

सर्वप्रथम तो हमें मानव हृदय की दुष्टता और छलन देखने को मिलती है। हम चाहे जो हों, - और बाह्यरुप से हम कितने भी भले दिखाई देते हों, किन्तु हमारा अन्तर समान रुप से दूषित और मलिन है। हमारे जीवन में कोई सत्य नहीं है। हम आपनी वास्तविक अवस्था को जानना नहीं चाहते हैं। जब हमारी वास्तविकता बताई जाती है, तब हमारे अहम को चोट लगती है। इसी कारण परमेश्वर का वचन पढ़ने समय अनेक व्यक्ति क्रोधित तथा कुंठित होते हैं। वे उस हबशी के समान हैं, जिसने कभी दर्पण नहीं देखा था। एक बार एक पगडंडी पर जाते हुए उसे एक दर्पण मिला। उसमें उसने प्रथम बार अपने काले मुख को देखा-वह कोयले से भी अधिक काला था। और उसके मोटे होंठ और कान लटक रहे थे। अपने कुरुप चेहरे को देखने पर उसे इतना क्रोध आया कि उसने उस दर्पण को पत्थर से तोड़ डाला। उसने दर्पण से कहा – "तुम क्या समझते हो? तुम मेरा उपहास कर रहे हो? मैं इतना काला नहीं हूँ। तुम झूठे हो।" उसने दर्पण तो तोड़ डाला। किन्तु उससे उसका रुप परिवर्तन तो नहीं हुआ।

हममें से कोई भी अपनी वास्तविकता नहीं जानना चाहता। हम जैसें हैं, उससे कुछ उत्तम दिखाई देना चाहते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो घर में अत्यन्त मलिन वत्र धारण करते हैं। उनके तकिए, ऐसे जान पड़ते हैं कि छ:माह धोए न गए हैं। उनके तकिए के खोल इतने गन्दे हैं, मानों तीन वर्ष से न धोए गए हैं। फिर भी ये ही व्यक्ति जब बाहर जाते है, तब बहुत ही भले और आकर्षक, स्वच्छ और चुस्त दीख पड़ते है। कुछ लोग हैं, जिनके बैठक-कमरे

में प्रत्युक वस्तु मूल्यवान स्वच्छ और सुन्दर रहती है। किन्तु जब आप उनके स्नानागार में जाएँ तो अपनी नाक बन्द करने के लिए आपको किसी कपड़े की आवश्यकता होगी। उनके रसोईघर में प्रत्येक वस्तु काली और गन्दी होगी। ऐसा क्यों? क्योंकि श्रीमती जी.बी.ए.पास है। उन्हे केश सँवारने और श्रृंगार करने में ही समय व्यतीत हो जाता हे, किन्तु घर की देखभाल करने का समय उनके पास नहीं है। इसी प्रकार अनेक व्यक्ति आत्मिक दृष्टि से भी बाहर कुछ है; और भीतर कुछ है और प्रभु प्रत्येक के हृदय की वास्तविक अवस्था को जानता है, और वह हमें यथार्थ रुप से बताता है कि हमारी वास्तविक अवस्था को जानता है, और वह हमें यथार्थ रुप से बताता है कि हमारी वास्तविक आन्तरिक अवस्था क्या है। अत्यन्त हीनता सूचक होने पर इसे जान लेना उत्तम है, कि परमेश्वर हमारी वास्तविक अवस्था के विषय में क्या कहता है।

जब आप चिकित्सा के लिए किसी चिकित्सक के पास जाते हैं, तब जब तक आपका रोग निदान न हो जाये, तब तक आपकी चिकित्सा नहीं की जा सकती। क्षयरोग नामक एक रोग है। प्राचीन काल में मनुष्य इस बीमारी का कारण नहीं जानते थे, सो किसी को यह रोग होने पर वे सोचते थे कि उसे प्रेतात्माओं ने पकड़ा है। रोगी को मरने के लिए एक कोने में छोड़ दिया जाता था। कभी-कभी तो रोगी वर्षो पड़ा रहता था। किन्तु किसी प्रकार जब मनुष्यों ने इसके कारण का पता लगाया, तब उस रोग की औषधि भी खोज निकाली। जब मैं डेनमार्क गया, तब मैंने अनेकों सैनेटोरियम खाली पड़े देखे। प्राचीन समय में जब वे इस बीमारी का कारण नहीं जानते थे, तब वहाँ बहुत-से रोगी थे। किन्तु जब उसके कारण और निदान का पता चला, तब यह रोग उस देश से बहिष्कृत कर दिया गया। इसी प्रकार अपने हृदय की वास्तविक स्थिति जानना हमारे पक्ष में उत्तम है। जब परमेश्वर अपने दासों के द्वारा या अपने वचन के द्वारा आपके हृदय की वास्तविक स्थिति को बताता

है, तब आप क्रोधित न हों। बाइबल का कथन है, कि मनुष्य का हृदय अत्यन्त ही दुष्ट है और उसे कौन जान सकता है?

(यिर्मयाह १७:६)

अब आइए, हम २ शमूएल ११ की कथा को देखें। जहाँ दाऊद की कहानी है। १ शमू १६:१८ में जब हम पहले पहल उससे मिलते है, तब ऐसा लगता है, मानों उससे अधिक सुसंस्कृत, एवम् भला कोई नहीं है। इससे सभी सहमत थे। युवावस्था से ही वह परमेश्वर का चुना हुआ पात्र था। अब देखिए कि मनुष्य चाहे किसी जाति, अथवा देश का क्यों न हो, यह अर्थ नहीं, कि उसका हृदय बदला हुआ है। लोग अपनी आन्तरिक अवस्था को नहीं जानते। दाऊद पाप पूर्ण जीवन व्यतीत करने को उत्पन्न नहीं हुआ था। कुछ बच्चे जन्म से ही दुष्ट प्रवृति के होते है। जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते है, वैसे-वैसे वे अपने वचनों और व्यवहारों के द्वारा अपने दुष्ट स्वभाव के चिह्न प्रदर्शित करते हैं। परन्तु दाऊद वैसा नहीं था। वह एक भला व्यक्ति था। अनेक वर्षो से वह उत्तम जीवन व्यतीत कर रहा था। वह बुराई से घृणा करता था। वह बुराई से दूर रहता था। किन्तु दाऊद के अनजाने ही उसके मन में कहीं एक दुष्ट प्रकृति छिपी हुई थी। जब तक परमेश्वर उसे सम्पर्णत: न बदलता, वह परमेश्वर के योग्न न होता। २ शमू. ११ में वर्णित दाऊद के जीवन में यह घटना इस लिए घटी, ताकि वह अपने आपको वैसा ही देख सके, जैसा परमेश्वर उसे देखता था। बड़ी धूर्तता एवम् चालाकी से शैतान ने उसकी परीक्षा ली। इस अध्याय के प्रथम पद में हम यह जान लेते हैं, कि दाऊद के समक्ष इस प्रलोभन को उपस्थित करने की ताक में शैतान किस प्रकार अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था।

हमें सूचित किया जाता है, कि राजाओं को युद्ध में जाने का समय आ गया था। दाऊद को, जो युद्ध-प्रेमी था, तथा बुद्धिमान पुरुष था, युद्ध में भाग लेना उचित था। किन्तु

वह यरुशलेम् के भवन में बैठा रहा। देखने पर तो यह साधारण छोटी सी भूल थी, किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में यह भारी भूल थी। वह वीर पुरुष था, अत: उसे युद्ध में जाना उचित था। परन्तु ऐसा न कर वह यरुशलेम में रह गया। दूसरा पद हमें यह सूचित करता है, कि सन्ध्या का समय था, परन्तु दाऊद शक्तिशाली पुरुष होते हुए भी सन्ध्या तक सोचा रहा। इसी प्रकार बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं, जो उस समय भी सोते रहते है जब कि उन्हें जागृत रहना चाहिए। वे कही भी तथा किसी भी समय सो जाते हैं, यहाँ तक कि सभाओं में भी। तब यदि कोई उन्हें जगाकर कहता हैं, कि मत सोओं; तो वे कहते हैं, "मैं सो नहीं रहा था, प्रार्थना कर रहा था।" ऐसी छोटी विधियों के द्वारा वह शक्तिशली पुरुष आलसी बन गया। क्या आप विधियों के द्वारा वह शक्तिशाली पुरुष आलसी बन गया। क्या आप देख नहीं सकते, कि शैतान किस प्रकार क्रम से दाऊद को प्रलोभन दे रहा था? बड़ी धूर्ततापूर्वक उसने दाऊद का अर्धपतन लाने का प्रयत्न किया। और जब वह राजमहल की छत पर आलस भाव से चहलकदमी कर रहा था तब उसे प्रलोभवन के ठीक सम्मुख ला, खड़ा कराया गया।

तद् उपरान्त इस पाप को ढ़ापने के लिए दाऊद को अनेक उपाय, विधियाँ और साधन सोचने पड़े। जो पाप उसने किया था, उसे ढँकने के लिए अनेक रीतियों से पापकर्म में प्रवृत्त होने के सम्बन्ध में विचार करना पड़ा। इस प्रकार वह प्रपंच बन गया। जब उसने देखा कि उसका पाप प्रकट होने वाला है, तो उसने उस स्त्री के पति उरिय्याह को बुलवा भेजा। जब ऊरिय्याह आया, तो दाऊद उससे युद्ध का समाचार पूछने लगा, मानो वह योआबा, सैनिकों और सेना के विषय में चिन्तित हो। "कृपया मुझ बताओ, कि योआबा कैसा है? मेरे सैनिक कैसे है? युद्ध का क्या समाचार है?" ये प्रश्न पूछने के द्वारा उसने अपने की बहुत ही निर्दोष दर्शाया। कैसा कपट! केवल अपने पाप को ढाँपने के लिए।

उसने ऊरिय्याह की प्रतिष्ठा नि:स्वार्थ भाव से नहीं की। जो कुछ भी किया केवल अपने पाप को छिपाने के लिए किया। फिर उसने कहा, "ऊरिय्याह तुम बहुत थके हुए हो। तुम्हें एक लम्बी यात्रा पर जाना है। मुझे तुम्हारे लिए बडा दु:ख है। तुम घर जाकर गर्म जल से स्थान करो, और फिर विश्राम करो। तुम्हें विश्राम की आवश्यकता है।"

उस दिन राजा कितना भला और दयालू बन गया। वह तो एक सामान्य सैनिक था, किन्तु राजा उसे कितना उसे कितना ऊँचा उठा रहा था। ऊरिय्याह महल से गया ही था, कि एक व्यक्ति राजा के भोजन में से अच्छे-अच्छे पदार्थ, जैसे, बिरियानी और मुर्गे का माँस तथा अन्य उत्तम पदार्थ जिन्हें उसने अपने जीवन में कभी देखा भी नहीं था, उसके पास ले आया। उस दिन राजा दाऊउ उरिय्याह के प्रति कितना दयालु था। एक पाप दूसरे की ओर ले जाता है, दूसरा तीसरे की ओर, तथा तीसरा चौथे की ओर ले जाता है। एक महान और ज्ञानी राजा पहले तो प्रथम श्रेणी का व्यभिचारी बन, तत्पश्चात् प्रपंचक, आडम्बरशील तथा मिथ्यावादी हो गया। ये सारे कार्य उसे केवल एक पाप को छिपाने के लिए करने पड़े। परन्तु उरिय्याह घर न जाकर महल के फाटक पर ही सो रहा। दाऊउ ने पुन: जोर लगाया "ऊरिय्याह, तुम तो अब भी बहत थके हुए हो। कुछ दिनों के लिए तुम अवकाश ले सकते है।" साधारण नियम तो यह है, कि जब कोई सैनिक अवकाश के लिए आवेदन करता है, तो उसे स्वीकृति मिलने में छ: मास लग जाते है। वह भले ही कहे, 'मेरी स्त्री बीमारी है' – तथापि अधिकारी वर्ग यही कहेगा, 'अभी तुम्हें छुट्टी नहीं मिल सकती।' किन्तु यहाँ दाऊद कह रहा है "आवेदन पत्र के बिना ही तुम्हारी छुट्टी इतने दिनों के लिए बढ़ा दी गई है।" किसी की समझ मे नहीं आया, कि ऐसा क्यों किया जा रहा है। परन्तु फिर भी ऊरिय्याह अपने घर में नहीं गया। जब सेना युद्ध भूमि में है तो उसे अपना सुख नहीं देखना चाहिए। इस प्रकार दाऊद की चालबाजी न चल सकी। अन्त में योआबा के द्वारा दाऊद को

ऊरिय्याह की हत्या करवानी पड़ी। कितने दु:ख की बात है। एक बुद्धिमान राजा अन्त मैं हत्यारा बन गया। उसने उसकी हत्या की बात कभी नहीं सोची थी। उसने कभी व्यभिचारी बनने का विचार नहीं किया था। अपनी प्रकृति के उस गुप्त भाग को वह कभी नहीं जान सका था। जब परीक्षा आई तब उसे ज्ञात हुआ कि उसका हृदय कितना कलुषित था।

कुछ रोग ऐसे होते हैं, जो आरंभ में प्रकट नहीं होते यद्यपि उनके कीटाणु हमारे शरीर में विद्यमान रहते हैं। कई वर्षो के पश्चात् ही हम उन्हें परिलक्षित कर पाते हैं। हम उन्हें नहीं जान पाते, क्योंकि हम स्वस्थ हैं, अच्छी तरह सोचे हैं, भोजन की क्षुधा भी है। जब लोगों को यह सूचना मिलती है, कि हम अस्वस्थ हैं, तो वे कहते हैं, - हमें तो यह पता नहीं था कि आपका स्वास्थ ठीक नहीं था। यहाँ तक कि कुछ वर्षो में हम रोगग्रस्थ हो सकते हैं, और हमारी स्थिति चिन्ताजनक भी हो सकती है, पर हम यह नहीं जान पाते, कि पिछले अनेक वर्षो से यह रोग तो हमारे शरीर के अन्दर ही था।

बाइबल में दाऊद की यह कथा क्यों वर्णित की गई है? यह हमारी सतर्कता के लिए है, ताकि शैतान हमें भी धोखा न दे जाये। यह जान लेना उत्तम है कि शैतान किस विधि से हमें धोखा देता है। हम सब ही पापमय प्राकृति लेकर पैदा हुए हैं, किन्तु यह शिक्षा दाऊद को पाप में गिरने के बाद ही मिली, जैसा कि वह भजन ५१ में कहता हैं - 'देखो मैंने पाप में ही आकार धारण किया।' हम १ शमूएल १६ में देख चुके हैं, कि किस प्रकार सभी व्यक्ति यह कह रहे हैं, कि "दाऊद कितना सुन्दर नवयुवक है परमेश्वर से डरने वाला, दृढ़ विश्वासयुक्त, प्रेमी तथा सबके लिए सबके लिए उत्तम।" इनमें से कोई भी मानवीय योग्यता सर्वदा नहीं ठहर सकती। कोई भी व्यक्ति सदैव भला नहीं रह सकता, तथा कोई भी शिक्षा हमारी आन्तरिक प्रकृति को नहीं बदल सकती। हम सब पापी स्वाभाव के साथ

उत्पन्न हुए हैं, और एक दिन यह पाप-प्रकृति अपने आप को व्यक्त करेगी तथा हमसे लज्जा-स्पद कार्य करवा लेगी, हो सकता है, इसमें अनेक वर्ष लगें।

आप अपनी वास्तविक स्थिती परमेश्वर से नहीं छिपा सकते। हमें क्षमा करने एवम् परिवर्तित करने के लिए परमेश्वर हमारे पापी स्वभाव को अनावृत करता है। अपने योग्य पात्र को उपयोग में लाने के लिए प्रथम परमेश्वर को दाऊद को परिवर्तित और रुपान्तरित करना पड़ा। उसे स्वच्छ निर्मल और शुद्ध करना पड़ा। दाऊद भजन ५१ में क्या कहता हैं – देखिए उसने यह अनुभव किया, कि वह क्या था और उसके हृदय की वास्तविक अवस्था क्या थी (पद ६, ६१०) जो दाऊद प्रत्येक देशवासी की प्रशंसा का पात्र था, स्वयं ही यह स्वीकार कर रहा है। वह भग्न हृदय से कहता है – "हे यहोवा मुझे निर्मल हृदय दे। मुझे नवीन हृदय दे। मुझे पवित्र हृदय दे, तथा मुझे धोकर शुद्ध बना। मुझे भली-भाँति धो डाल तथा मेरे समस्त अधर्म के कामों को मुझसे दूर कर।"

परमेश्वर की दृष्टि में आपकी वास्तविक अवस्था क्या है, यह जानने की इच्छा आपको होना चाहिए। यदि कोई मनुष्य आपसे कहता है कि आप पापी हैं। तो आप उत्तर देंगे। "मुझे पापी कहने का आपको क्या अधिकार है? आप मेरे पडोसियों और मित्रों से पूछिए।" किन्तु आप परमेश्वर की दृष्टि में क्या हैं? कृपाकर परमेश्वर को आपकी परीक्षा लेने दीजिए। पाप को पाप ही कहिए। कई व्यक्ति जो अंधे हैं, उन्हें यदि आप अंधा कह कर पुकारें तो बहुत क्रोधित होते हैं। किन्तु यदि आप कहें – "सूरदास जी, आप अच्छे तो हैं?" तो वे बड़े प्रसन्न होते हैं। उत्तर भारत में लोग अंधे को अंधा नहीं कहते। वे उसे एक प्रसिद्ध हिन्दु भक्त सूरदास के नाम पर सूरदास कह कर पुकारते हैं। परन्तु बाइबल पाप को पाप कहती है। आप चाहे जो भी हो, परमेश्वर की दृष्टि में आप पापी हैं, एक भयंकर अशुद्ध, एक सूखे पत्ते और मुर्झाया फूल एक कीड़ा, और मिट्टी ही हैं।

बाइबल का कथन है कि हमारा जन्म ही इसी प्रकार हुआ है। परमेश्वर की स्तुति हो कि वह सब कुछ बदल सकता है। एक अशुद्ध व्यक्ति पवित्र बनाया जा सकता है। एक पापी एवम् दृष्ट व्यक्ति वस्त्र धारण कर सकता है। उसे सभी प्रकार के पापों से मुक्त किया जा सकता है। परमेश्वर के सामने मान लें, कि आप सचमुच क्या हैं। अपनी अवस्था में परिवर्तन करने को कोई चेष्टा न करें। कहिए – "हाँ प्रभु, मैं पापी हूँ।" किन्तु यह न कहें, कि "मैं तो अपने पड़ोसी से कहीं अच्छा हूँ।" ऐसा न कहें कि मैं तो एक उपाधि-प्राप्त पापी हूँ, अथवा मैं एक सुसंस्कृत पापी हूँ। परमेश्वर आपसे प्यार करता है। अतएव उससे अपनी वास्तविक अवस्था व्यक्त कर डालिए। उसके सामने कहिए – "हे प्रभु मुझे धो डाल।" मैं मलिन एवं पापी हूँ। हे प्रभु मेरे अन्तर में स्वच्छ हृदय उत्पन्न कीजिए। मेरी पुरानी प्रकृति को मिटा डालिए।" इस प्रकार आप अपनी सभी क्षतियों की पूर्ति कर सकेंगे। आपका नष्ट होता हुआ जीवन अत्यन्त फलवन्त हो उठेगा। आपका प्रत्येक वचन, प्रत्येक कर्म स्थायी रुप से फलदायी होगा। आपके पापमय जीवन का स्मरण भी न रह जाएगा। जब परमेश्वर क्षमा करता है, तो सर्वदा के लिए क्षमा करता है। मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता है तो वह सर्वदा के लिए भूल जाता है। वह आपके पापों को ढांप देता है। आपके पाप सदा के लिए लुप्त हो जाएँगे। उन्हें मिटा दिया जायेगा, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने आपके बदले में अपने प्राण दिए तथा आपके पापों के समस्त भार से आपको उऋण कर दिया। उससे विनय कीजिए कि वह आपका हृदय स्वच्छ कर दे। क्योंकि अपकी विनती के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता। क्या आप कहेंगे – "हे प्रभु, मुझमें शुद्ध एवम् स्वच्छ हृदय उत्पन्न कर। मुझे सम्पूर्णत: धो डाल, शुद्ध और पापरहित बना। वह आपकी प्रार्थना सुनेगा, तथा उत्तर देगा। शर्त यह है, कि आप सच्चे और नम्र होकर पास जाएँ।

षष्टम अध्याय
क्षति: कारण, फल एवम् निराकरण

दाऊद ने अपनी समस्त क्षति की पूर्ति कर ली। इन शब्दों से ही क्षति का संकेत मिलता है। हम पहले भी कह चुके है, कि हम सबसे भिन्न-भिन्न प्रकार की क्षति उठाई है। अपनी पुरानी चप्पल तक के खो जाने पर हम कुछ दिन दु:खी रहते हैं। कभी-कभी धोबी हमारी कोई पुरानी कमीज, जिसमें छेद ही छेद थे, खो देता है, तब भी हम दु:खी होते हैं, और उससे कमीज वापस लाने को कहते हैं। मनुष्य होने के नाते हमें पार्थिव वस्तुआं की अधिक चिन्ता रहती है। किन्तु क्या इतनी ही चिन्ता अपनी आत्मिक क्षति के प्रति भी होती है? ध्यान रखिए, प्रत्येक मुहूर्त जो प्रभु के बिना व्यतीत होता है, वह हमारी सदा काल की क्षति है।

अनेक वर्षो पूर्व मुझे एक वयोवृद्ध पुरुष मिले। जब मैंने उनसे पूछा – "क्या आपने परमेश्वर के उद्धार का अनुभव किया हैं? तो वे मुझसे तर्क करने लगे। उन्होंने समझा कि मुझे संसार का कोई अनुभव नहीं तथा मैंने जो कुछ कहा उसे उन्होंने मजाक में उड़ा दिया। वे शायद यह सोच रहे थे – "अरे, यह तो एक लड़का है। यह किस प्रकार मेरी सहायता कर सकता है? कई माह बाद मेरी इन वृद्ध पुरुष भेंट हुई। वे आँखो में आँसू भरकर मुझसे मिले, और कहा – "भाई तुम मुझे पहिचानते हो? मैंने कहा –"हाँ, कई मास पूर्व आप अमुक स्थान पर आये थे।" तब उन्होंने मुझसे कहा – "तुम्हारे जाने के बाद मै बेचैन रहने लगा। यद्यपि मैंने तुम्हारे शब्दों को भूल जाने की चेष्टा की, मैं सफल नहीं हो सका।" पवित्र-आत्मा ने उन्हें बाध्य किया था, कि वे मेरे दिए हुए पदों को पढ़े। तब उन्होंने कहा – "मैं अपनी स्थिति को जान गया, कि मैं कितने अंधकार में जीवन व्यतीत कर रहा था, तथा किस प्रकार प्रभु यीशु मसीह ने मेरे पापों को क्षमा कर दिया, जब कि मैंने उसे अपना

मुक्तिदाता मान लिया।" तब वे रोने लगे – कहा – "साठ साल का मेरा जीवन व्यर्थ हो गया है। अब मैं चाहता हूँ, कि प्रभु मुझे उपयोग में लाए। मैंने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया है।" वे बार-बार कहते रहे – "मेरा जीवन व्यर्थ गया। और मेरे जीवन का सुनहरा अवसर व्यतीत हो गया है। अब अपना शेष जीवन मैं प्रभु की प्रसन्नता के लिए व्यतीत करना चाहता हूँ।"

क्या आप जानते हैं कि यदि परमेश्वर की दृष्टि में आप के पाप क्षमा न हुए हों, तो आपका जीवन केवल व्यर्थ हो गया। योएल १:४ में हम चार प्रकार के कीटों के सम्बन्ध में पढ़ते हैं, जो किसानों की फसलों को खा डालते हैं। ये हैं, गाजाम, येलेक और हासील नामक टिड्डीयाँ। कभी-कभी तो ऐसा होता हे किसान भूमि जोतने और बीज बोने में बड़ी आशा से दिनरात परिश्रम करते हैं। बीज उग आता है। किन्तु फसल काटने के समय वे देखते हैं कि किसी ने आकर फसल नष्ट कर दिया हे। संभव हे उनकी फसल का एक भाग गाजाम ने नष्ट कर दिया है, दूसरे को अर्बे ने खा लिया है, तीसरे को येलेक ने, और चौथे को हासील ने। तो अब कितना बचा? कुछ भी नही। सब नष्ट हो गया। आपका जीवन उसी खेत के समान है, जो गाजाम, अर्बे, येलेक और हासील टिड्डियों के द्वारा भक्षण किया जा रहा है।

जब हम बच्चे थे, तो हमारी कई बुरी आदतें थी। अपने हठके द्वारा हमने अपने माता-पिता को दु:खित किया, अनेक गलत कार्य करके अपना समय नष्ट करते रहे। किन्तु कुछ समय पश्चात् हमने अपनी भूल पहचानी। तब हमने कहा – "यदि हम थोड़ा परिश्रम और करते तो परीक्षा में अनुत्तीर्ण न होते। बड़े होते गये, तथा यौवन सुलभ मोह के दास बनते गये। इस प्रकार अपनी वासनामय अभिलाषाओं में हमने अपने अपने जीवन का सर्वोत्तम समय नष्ट कर दिया। जब माता-पिता और शिक्षक शिक्षा देते हैं तो बहुत से

नवयुवक यह उत्तर देते हैं, कि – "आप क्या जानते है? आपको पता नहीं जीवन क्या है। आप इतने वृद्ध हैं कि ये बाते समझ नहीं सकते। आप तो साबुन भी व्यवहार में लाना नहीं जानते। मेरे वृद्ध पिता, आप तो जो वस्त्र पहिनते है, उसी से मुँह पोंछ लेते हैं, किन्तु हम तो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं। यह सुगंधित साबुन देखिये, और मुँह पोंछने के लिए यह उत्तम तौलिया देखिये। आप मुझे क्या सिखा सकते हैं?" इस प्रकार हममें से कितनों ने युवावस्था में अपना समय धन और शक्ति नष्ट की होगी। जब हमारे पास सामर्थ्य और सुअवसर रुपी धन था, तब हमने पास सामर्थ्य और सुअवसर रुपी धन था, तब हमने अपना जीवन लज्जास्पद कार्यो में व्यतीत किया। तत्पश्चात् वह समय आया, जब हम अर्थोपार्जन में लग गए। धन में अनुरक्त रहने के कारण हमने अनुचित साधनों द्वारा सम्पत्ति अर्जित की तथा धन-संग्रह किया, फिर हम अति अहंकारी बन गये। हमने कहा – "मैं कितना चतुर हूँ। इस अल्प समय में ही मैंने कितना अधिक धन-संचय कर लिया है। अवकाश ग्रहण करने पर मैं भूमि खरीदकर भवन बनाऊँगा, जिसमें कई कमरे होंगे तथा अपने पुत्र-पौत्रों के मध्य सुख-चैन और आनन्द का जीवन व्यतीत करुँगा।" किन्तु वृद्धावस्था आने पर आपके बच्चे एक-एक कर आपको त्याग देंगे। आपके दाँत गिर जाएँगे। आपका पैसा चिकित्सकों के पास जाएगा। फिर आप रोकर कहेंगे – "मेरा जीवन इन चालीस वर्षो तक व्यर्थ होता रहा। मेरा जीवन नष्ट होकर व्यतीत हो गया। मेरे जीवन के वर्षो को गाजाम, अर्बे, येलेक तथा हासील नामक टिड्डियों ने खा लिया।

वास्तव में आपकी व्यवस्था भी ऐसी हो सकती है। आप भी इस बात का अनुभव कर रहें हैं, कि आपका जीवन व्यर्थ गया और व्यर्थ होता जा रहा है। आप प्रसन्न हों। आपके लिए भी अभी आशा है। आप सभी क्षति की पुन:प्राप्ति कर सकते हैं। आपकी हानि कितनी ही बड़ी और अपमानजनक हो, फिर भी उसकी पूर्ति हो सकती है। आपका जीवन

आशातीत फलदायी हो सकता है, आपके जीवन का प्रतिक्षण अक्षय फल उत्पन्न कर सकता है। इसीलिए हमारा प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आया। यूहन्ना १५:५ में वह कहता हैं। "मैं दाखलता हूँ, और तुम डालियाँ हो।" प्रभु यीशु मसीह में स्थिर रहकर ही हम स्थायी फल उत्पन्न कर सकते है। कितने ही बीते वर्षो की कितनी ही क्षति क्यों न हो, उन सब की पूर्ति हो जाएगी। यही उद्धार का अद्भुत आश्चर्य कर्म है। यद्यपि हमने अपने जीवन को अनेक पापमय कार्यो में और लज्जाजनक रुप से नष्ट किया, फिर भी प्रभु मसीह में आकर और उसके साथ मिलकर हम आशातीत फल उत्पन्न कर सकते है।

कभी-कभी हमें आकस्मिक क्षति का सामना करना पड़ता है। हम २ राजा ४:३८ में पढ़ते हैं, कि अचानक से देश में भयंकर अकाल पड़ा। बृष्टि न होने के कारण कहीं भी अन्न का एक दाना न था। भीषण सूखा पड़ा और कहीं फसल न हुई और लोगों को खाद्य वस्तु एकत्र करने के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता था। लोगों के पास न चावल था न गेहूँ न सब्जियाँ ही थी। वे घास-पास खाकर जीते थे। आधुनिक युग में भी हम देखते ह। कि नगरों में भव्य इमारतें खड़ी की जा रही हैं, नई और चौड़ी सड़कें बनवाई जा रहीं है, बड़े-बड़े महाविद्यालय खोले जा रहे है, तथा नए-नए कारखाने और व्यापार स्थापित हो रहे है, और यह सब देखते हुए हम कह सकते है, कि हम एक भव्य संसार में रह रहे हैं, फिर भी प्रभु की दृष्टि में यह सब बंजरता और निरर्थक है। बाइबल संसार को मरु-भूमि और भयंकर अरण्य की संज्ञा देती है। एक दिन सभी पुरानी वस्तुएँ पृथक करके भस्म कर दी जाएँगी।

हम २ राजा ४ में देखते है, कि अकाल के कारण लोगों को जंगल में जाकर घास-पात एकत्र करना पड़ता था क्योंकि उनके पास उचित भोज्य वस्तु अथवा अन्न के दाने न थे। वे घास-पात खाकर जीवन निर्वाह कर रहे थे। संसार में आज भी यही स्थिति है। एक

ओर तो लोग संसारिक शिक्षा धन एवम् प्रगति पर गर्व कर रहे हैं दूसरी ओर वे पाप और गन्दगी में सड़ रहे हैं। सिनेमा घरों और कलुषित स्थानों में वे अपना कितना समय नष्ट कर रहे हैं। गन्दे पत्र-पत्रिकाएँ साथ रख कर उन्हें पढ़ने में वे अपना कितना अधिक समय नष्ट करते है। मैं ४३ वर्षो से संसार के विभिन्न भागों का भ्रमण कर रहा हूँ। मैं रेलगाड़ियों, बसों, वायुयानों तथा जहाजों पर लोगों से मिला हूँ। वे मेरे सहयात्री शिक्षित और उच्च पदस्थ थे। मैंने इन लोगों का ध्यान से निरीक्षण किया है, पुरुष एवम् स्त्री दोनों को देखा है, तथा यही पाया है कि वे अपने साथ गन्दी से गन्दी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ तथा उपन्यास लिए चलते हैं। वे इन पुस्तकों को घंटो पढ़ते है। इसी से प्रमाणित होता हे, कि यह संसार कितना कलुषित हो गया है।

२ राजा ४:३६ में जब ये व्यक्ति जड़ी-बूटी बटोरने जंगल गए, तो उन्होंने कुछ जंगली लताएँ देखी। उन्होंने समझा कि ये अति उत्तम एवम् खाने में स्वादिष्ट होंगे। अतएव उन्होंने उन्हें जमा करके एक बड़े बरतन में रखा। पतों के आकर्षक रंग के कारण उन्होंने सोचा कि वह खाने में स्वादिष्ट और उत्तम होगा, किन्तु वे धोखा खा गये। उसे पकाते समय उन्होंने कहा – “हमें तो कोई बहुत बढ़िया वस्तु मिली है। यह हमारे लिए उत्तम भोजन होगा। किन्तु जब भोजन परोसा जा रहा था, तथा उन्होंने भोजन करना आरम्भ किया, तब किसी ज्ञानी व्यक्ति को ज्ञात हो गया कि इस भोजन में कुछ गड़बड़ी है। अतएव वह चीत्कार कर उठा – “हे परमेश्वर के भक्त पात्र में तो मृत्यु है।” संभव है उसने चखकर या गंध से पहचान लिया, कि यह खाद्य प्राणनाशक और विषयुक्त है। कुछ तो भोजन करने वाले ही थे, और कुछ ने भोजन मुख में डाल भी लिया था। किन्तु सबने भोजन करना इस प्रकार बन्द कर दिया, मानो उन्हे लकवा मार गया हो। उनके हाथों ने मुँह तक जाना अस्वीकार कर दिया। क्यों? इसलिए कि उन्हें यह बताया गया था, कि पात्र मे मृत्यु है। हमें

यह बताया जाता है कि ये व्यक्ति सज्जन पुरुष तथा परमेश्वर के भक्त थे। किन्तु उन्हें जड़ी-बूटियों की पहचान न थी। यही कारण हैं उन्होंने इस लता को बटोरा था। अज्ञान रुप से अपने ही हाथों उन्होंने अपने पात्र में मृत्यु को रख छोड़ा था। इसी प्रकार स्त्री-पुरुष भलेमानुष होते हुए भी अपने परिवारों में मृत्यु लाते हैं। इसे अनेक पिता, माताएँ, पति पत्नियाँ, बच्चे, बहिनें अथवा भाई हैं, जो अपने घरों तथा अपने जीवन में ज्ञानभाव के कारण मृत्यु को ला रहें है। जहाँ कहीं वे जाते हैं, यद्यपि वे इसे अनुभव नहीं कर पाते, वे अपने बच्चों को आज्ञात रुप से मृत्यु-भक्षण करवा रहे हैं।

जिनका नया जन्म नहीं हुआ, वे इसी प्रकार के व्यक्ति हैं। वे नहीं जानते कि किस प्रकार उनके हृदय और परिवार में मृत्यु का प्रवेश हो रहा है। वे समझते हैं, कि वे जीवन का आनन्द लूट रहे हैं। हे मूर्ख पुरुषों, हे मूर्ख महिलाओं, क्या आप नहीं जानते कि आप जहाँ कहीं भी जाते हैं, अपने साथ मृत्यु ले जाते हैं। यह भी संभव है कि आप अपने शब्दों, वार्तालापों अथवा अपनी आदतों के द्वारा दूसरों के लिए मृत्यु ला रहे है। दिव्य ज्योति के द्वारा ही आप अपनी अवस्था परिवर्तित कर सकते हैं। परमेश्वर, का वचन कहता है, "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" आत्मिक मृत्यु के लिए केवल एक ही पाप यथेष्ट है।

कई विष भी बहुत धोखा देनेवाले होते हैं। एक छोटी सी बूँद भी मृत्यु का कारण बनने के लिए यथेष्ट है, तथा इस प्रकार अनेकों की मृत्यु हो चुकी है। ऐसा ही पापमय विचार, शब्द और कार्यों के साथ भी है। इनके द्वारा हम प्राणघातक विष खाते और पीते हैं। बाइबल की कहानी में हमने देखा कि वे परमेश्वर के भक्त बड़े आनन्द से उस भोजन को खाने जा रहे थे। किन्तु जब किसी ने उनसे कहा, कि उस पात्र में विष है, तब उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी का काम किया, और किसी वैद्य-डाक्टर के पास न जाकर वे परमेश्वर के भक्त के पास गए। वे कह सकते थे – "चलों हम लोग यरुशलेम में किसी विशेषज्ञ से परामर्श

करें।" परन्तु वे बुद्धिमान व्यक्ति थे। वे जानते थे कि कोई भी विशेषज्ञ या डाक्टर उन्हें मृत्यु से नहीं बचा सकता था। अत: वे परमेश्वर के भक्त के पास जाकर बोले – "है परमेश्वर के भक्त, पात्र में मृत्यु है। अब हम मरने पर हैं क्योंकि हमने विष खा लिया है। कृपया हमारी सहायता कीजिए अब हम कुछ ही क्षणों के मेहमान है।"

आप भी एक दिन यही पाठ सीखने जा रहे हैं। आपने अपना जीवन हँसी ठठ्ठे में बिता दिया है। तौभी आप कह रहे हैं। "हम उत्तम जीवन व्यतीत कर रहे हैं। "किन्तु एक दिन आ रहा है, जब आप देखेंगे कि आप मृत्यु की आशंका में हैं। केवल आप ही नहीं आपका समस्त परिवार संकट में है। केवल आप ही नहीं आपका समस्त परिवार संकट में है। आप सब नरक के उपयुक्त हैं। उस समय आप को बचाने के लिए कोई भी व्यक्ति सक्षम नहीं होगा। किन्तु कथा में वर्णित बुद्धिमान व्यक्ति समझदारी से परमेश्वर के भक्त के पास गए (पद ४१) उसकी आज्ञानुसार वे कुछ आटा ले आए और उसे पात्र में डाला, और विष का प्रभाव जाता रहा। प्रभु यीशु मसीह ने कहा – "मैं जीवन की रोटी हूँ। मुझे खोकर तुम अनन्तकाल तक जीवित रह सकते हो।" यही एक मात्र रोटी है, जो आपके जीवन में पाप के द्वारा उत्पन्न विष को नष्ट कर सकती है।

तो वे लोग भूखे थे। इसमें सन्देह नहीं कि विष-जनित हानि से उन्हें बचा लिया गया था। किन्तु उसकी क्षुधा कैसे तृप्त की जा सकती थी ? उन्हें आश्चर्य लग रहा थ – "भूख मिटाने के लिए हमें भोजन कैसे मिलेगा ?" तब वहाँ एक मनुष्य आया जिसने बीस जौ की रोटियाँ ला कर परमेश्वर के भक्त को दिया, और उसने कहा – "तुम इन्हें लोगों को परोस दो (पद ४३)। मनुष्य तो अधिक थे किन्तु उनमें विभाजित करने के लिए रोटियाँ कुल बीस ही थी। वे मनुष्य स्वस्थ तथा भूखें थे। उनमें बाँटने के लिए केवल २० ही रोटियाँ थी। पंजाब में मैंने देखा है, साधारणत: एक ही आदमी अठारह चपातियाँ खा जाता है, और

यहाँ हम देखते हैं, एक सौ से अधिक व्यक्तियों के लिए जब की केवल बीस ही रोटियाँ हैं। अत: स्वभावत: परोसनेवाले ने कहा – "बीस रोटियों से वे किस प्रकार तृप्त किये जा सकते हैं?" परमेश्वर के भक्त ने कहा – "लोगों को दे दो कि वे खाएँ, क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है – उनके खाने के बाद बच भी जाएगा।" अतएव वे खाने लगे और तब तक खाते रहे, जब तक वे न खा सके। उनका गला तक भर चुका था। तथा बहुत कुछ बच भी रहा।

आज ऐसे लोग हैं, जो सांसारिक साधनों से अपनी क्षुधा-तृप्ति को चेष्टाशील हैं। वे व्यय अधिक करते हैं, और खाते भी बहुत है। वे कीमती और सुन्दर वस्त्र धारण करते हैं, दिन में अनेक बार वस्त्र परिवर्तन करते हैं। प्रति मास वे नए वस्त्र खरीदते हैं।

क्या वे सन्तुष्ट हैं? कुछ ऐसे लोग हैं, जो अपने जल-पान के लिए नाना प्रकार के भोज्य पदार्थो का व्यवहार करते हैं। अत: जब आप उनसे पूछें "क्या आप सन्तुष्ट हैं? तो वे कहेंगे नहीं। यद्यपि उन्होंने इतना अधिक खर्च किया, और तृप्ति के साथ खाया, फिर भी सन्तुष्ट नहीं। वे मृत्यु का पान कर रहे थे, और वे आशारहित ही मृत्यु को प्राप्त होंगे। किन्तु जिन्होंने जीवन की रोटी खाई है, वे हर प्रकार से विषरहित-विषमुक्त होंगे। उन्हें परमेश्वर जो कुछ थोड़ा भी देता है, उसे ही प्राप्त कर वे सन्तुष्ट होते हैं। उनका हृदय आराधना, धन्यवाद एवम् प्रभु की स्तुति से ओत-प्रोत रहता है। विषपान से उनकी जो क्षति हुई थी, उसे उन्होंने पुन: प्राप्त कर लिया है।

एक ऐसा विष हे, जो आपके पेट, नाड़ी और मस्तिष्क को प्रभावित करता है। यह बहुत धीरे असर करता है। ऐसा ही पाप के साथ भी है। पाप में रहने के कारण आप प्रतिदिन विषपान कर रहे हैं, और अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। तो कुछ आपके पास रहे हैं, ओर अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। जो कुछ आपके पास है, वह व्यर्थ होगा; नष्ट होगा,

और इसी अवस्था में आपके जीवन का अन्त हो जाएगा। इस संसार से पराजय लज्जा और निन्दा लेकर आप विदा हो जाएँगे। अत: हम आपसे विनय करते हैं, कि आप आज की विश्वास के द्वारा जीवन की रोटी खा लें। यह आपके जीवन से विष के प्रभाव को दूर कर देगी, ताकि आप अपनी प्रत्येक क्षति की पूर्ति करना आरंभ कर दें। इससे आपको अनन्त ज्ञान, धन, शक्ति और सन्तोष प्राप्त होंगे, तथा अतीत की सभी क्षतियाँ पूर्ण हो जाएँगी। "दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया।" इसी प्रकार मूखता, पाप तथा अशुद्धि के द्वारा हुई क्षतियों की समस्त पुन:प्राप्ति की जा सकती हैं। केवल यीशु मसीह के हाथ से जीवन की रोटी खाएँ। प्रभु यीशु सभी भविश्यद्वक्ताओं और मनुष्यों से महान हैं। वह आज आपको जीवन की रोटी प्रदान कर रहा है।

सप्तम अध्याय
आज्ञापालन: पुन: प्राप्ति का रहस्य

अपने शीर्षक के तीन शब्दों की ओर हमारा ध्यान बारबार आकर्षित हो रहा है। कारण यह हैं, कि हम अपने अंत:करण में यह विश्वास करते हैं, कि इस छोटे से वाक्य में हम सबके लिए परमेश्वर का एक सन्देश है। बहुत सी बातें, हमें आरंभ में स्पष्ट नहीं लगती। किन्तु कभी-कभी अनेकों दिन, महीने और वर्षो में उनका अर्थ समझ में आता हैं। अब तक जो कुछ कहा गया है, संभव है कि हम उसे पूर्णत: न समझ पाएँ, परन्तु एक दिन हमें यह समझा दिया जाएगा।

अब ये शब्द "दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया," दोनों ही प्रकार के लोगों के लिए – अर्थात्, जो उद्धार प्राप्त हैं, तथा जो उद्धार-रहित हैं एक सन्देश लाते हैं। जब तब प्रभु यीशु मसीह से रहित जीवन बिताते हैं, तब तक हम जो कुछ भी करते हैं, और जो कुछ हमारे पास हैं, सब व्यर्थ है, और सब कुछ निरर्थक रुप से समाप्त हो जाता है। यही हम देखते हैं, कि जो महान व्यक्ति भी प्रभु यीशु मसीह को प्राप्त किए बिना यदि मरते हैं, तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि उनका सब कुछ व्यर्थ गया। हर्बर्ट स्पेंसर नामक महान दार्शनिक परमेश्वर और उसके वचन की हंसी उड़ाता था। उसने सोचा कि वह बहुत बुद्धिमान है। जब वह मृत्युशय्या पर था, तब उसके सम्बन्धी उसके पास आये और एक दिन उससे पूछा – "स्पेंसर तुम्हारी अन्तिम अभिलाषा क्या हैं? और तुम अपनी समाधि के स्तम्भ पर क्या खुदवाना पसन्द करोगे? उसने यह लिखने को कहा – "अत्याधिक दु:खी।" आज भी आप उसके समाधि स्तंभ पर ये ही शब्द पाएँगे। उसकी समस्त चतुराई और समृद्धि से कोई अन्तर नहीं आया, चूँकि वह पापों की क्षमा प्राप्त किए बिना ही मर गया। यदि आप बिना यीशू प्रभु के जीते और मरते है, तो आप अपने जीवन में जो कुछ भी

कर रहे हैं, सब कुछ व्यर्थ है। आप अपने साथ कुछ भी कर नहीं ले जा सकते, और आप बिना शान्ति, आनन्द और परमेश्वर के इस संसार से कूच कर जाएँगे।

हमारे प्रभु यीशु मसीह अपना जीवन हमें देने के लिए मृत्यु के पश्चात् पुन: जी उठे। इस कार्य के लिए उन्होंने मृत्यु पर जय प्राप्त की, और अब उन्हें अपने हृदय में ग्रहण करने के पश्चात् जो नया जीवन वे हमें देते हैं, वह नूतन जन्म कहलाता है। जब आप प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं, तो आपको यह समझने में अनन्तकाल लग जाएगा, कि उस पर विश्वास करने के द्वारा आप कितना प्राप्त करते हैं। वह केवल हमारे पापों को क्षमा नहीं करता, बल्कि उसके पास जो कुछ है, वह सब हमें दे देना चाहता है, यहाँ तक कि वह हमें वहीं रखना चाहता है, जहाँ वह स्वयं रहता हैं। सृष्टि रचना के पूर्व से ही वह हमारे लिए जिस स्वर्गीय सम्पत्ति की व्यवस्था कर रहा है, वह सब हमें दे देना चाहता है।

कुछ देशों मे कुमारी लड़कियों अपने घर में एक बहुत बड़ा सन्दूक रखती हैं। उस सन्दूक का नाम है, “आशा का सन्दूक।” यद्यपि कन्या को कई वर्षो तक अपना विवाह होने की आशा न हो, फिर भी वह बच्चों के लिए चीजें – जैसे रुमाल, फ्राँक इत्यादि, तथा परिवार के लिए और अपने लिए उपयोग की सामग्रीयाँ तैयार कर उस सन्दूक में गुप्त रुप से रखती जाती है। कन्या को छोड़ परिवार का कोई भी व्यक्ति नहीं जानता कि उस सन्दूक में क्या हैं। किन्तु आशा प्रतीक्षा के साथ वह वस्तुएँ तैयार कर रखती जाती है। शायद कई वर्षो तक रखती जाती है। यह तक साधारण दृष्टान्त है, कि पृथ्वी अथवा मनुष्य की सृष्टि से बहुत पहले से ही हमारा प्रभु हमें जानता तथा हमसे प्रेम करता था, और उसने हमारे लिए स्वर्गीय थाती का निर्माण आरंभ कर दिया था। यद्यपि वह हमारी दुर्बलताओं, असफलताओं तथा अभावों से परिचित था फिर भी उसने हमारे लिए योजना तैयार की, तथा अब उस उत्तराधिकारी का उपभोग करने के लिए वह हमें इस पृथ्वी पर तैयार कर रहा है। हम १

कुरिन्थीयों २:६ – १० में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए जो बनाकर रखा है, वह न तो कभी दिखाई पड़ा न कानों से सुना गया। ये सभी महान और उत्तम वस्तुएँ प्रभु के द्वारा निर्मित से वंतिच रखने को चेष्टारत है। परन्तु प्रभु भी पहले से ही शत्रु के आक्रमणों तथा परीक्षाओं को जानता था। अतएव उसने उन आक्रमणों पर विजय प्राप्त करने में हमारी सहायता करने की तैयारी कर ली।

अब देखिए कि जो लेाग चोर-डाकुओं के मध्य में जीवनयापन करते हैं, उन्हें चोरी होने से बचने के लिए विशेष सतर्कता रखनी पड़ती है। चोरों को दूर रखने के लिए उन्हें विशेष प्रकार के दृढ़ तालों तथा ठोस लोहे की छड़ो की आवश्यकता होती है। वे चोरों तथा उनकी धूर्तता को जानते है। अतएव वे उन्हें पकड़ने के रास्ते ढूढ़ निकालते है। परन्तु शैतान तो इन चोर-डाकुओं से कहीं – अधिक धूर्त एवम् चाल-बाज होता है। आप उसे मानवीय साधनों तथा अस्त्रों से जीत नहीं सकते। आपको स्वर्गीय एवम् आत्मिक हथियारों की आवश्यकता है। परमेश्वर ने युद्धकला तथा अस्त्र-शस्त्र दोनों का दिग्दर्शन कराने के लिए बाइबल में दाऊद की कथा अंकित की है। दाऊद की व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों प्रकार की क्षति उठानी पड़ी। दाऊद की अपनी क्षति तो उसकी असफलता, असावधानी तथा उदासीनता के कारण हुई, फिर भी परमेश्वर ने चाहा कि वह सब पुन: प्राप्त कर ले। परमेश्वर ने यह भी चाहा कि उसकी असफलता तथा मूर्खता के कारण जो राष्ट्रीय क्षति हुई; उसकी भी पूर्ति हो जाए।

परमेश्वर ने अपने भक्त इस्त्राएल को जी विस्तृत एवम् उपजाऊ भूमि दी थी, उसके सम्बन्ध में हम पढ़ चुके हैं। यह कहानी उत्पत्ति की पुस्तक के बारहवें अध्याय में आरंभ होती है। कसदियों के ऊर नामक नगर में इब्राहीम नामक एक व्यक्ति था। कसदिया एक सुसंस्कृत देश था, जिसे पुरातत्ववेताओं ने भी सिद्ध किया है। इब्राहीम धनी व्यक्ति था

उसके पास सोना-रुपा-दास-दासी, धन-दौलत तथा भूमि प्रचुर मात्रा में थी। किन्तु आत्मिक रुप से वह भिखारी था। उस समय न तो वह परमेश्वर को जानता था, न उसकी पूजा करता था, न उसका आदेश पालन करता था। परन्तु एक दिन अचानक प्रभु उसके समक्ष प्रकट हुआ, और उसने परमेश्वर की वाणी को अत्यन्त स्पष्ट रुप से सुना – "हे इब्राहीम, अपने देश, सम्बन्धियों और पिता का परित्याग करके उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।" इब्राहीम ने उस वचन पर विश्वास किया और घर आकर अपनी स्त्री तथा दास-दासियों को बुलाकर कहा – "आओं, हम लोग सब सामान बाँध लें, क्योंकि हमें यात्रा करनी है।" उसकी स्त्री ने अवश्य पूछा होगा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने उत्तर दिया होगा, मैं नहीं जानता।" जब उसके पड़ोसियों और मित्रें ने देखा कि सामान बांधा जा रहा है, तो उन्होने पूछा होगा; "तुम कहाँ जा रहे हो? उसने पुनः उत्तर दिया होगा – "मैं नही जानता।" जब उसके सम्बन्धियों ने आकर देखा होगा कि सारा तथा उसके घर के सभी व्यक्ति सामान सहेज रहे हैं, तो उन्होंने अवश्य पूछा – "इब्राहीम तुम लोग कहाँ जा रहे हो? हम लोग देखते हैं, कि तुम अपना सामान बांध रहे हो? जान पड़ता है कि तुम किसी लम्बी यात्रा में जा रहे हो। आखिर तुम जा कहाँ रहे हो?" उसने पुनः उत्तर दिया होगा – "मैं नहीं जानता। किन्तु यदि तुम नही जानते तो जानता कौन है?" "कोई भी नहीं जानता।" अब आप उन पड़ोसियों और मित्रों की कल्पना कीजिए, कानफूसी करत हुए और अति दुःखी होते हुए तथा यह कहते – "यह इब्राहीम तो पागल हो गया है, क्या आप केई ऐसा वैद्य बता सकते हैं, जो उसे स्वस्थ कर सके? जरा सोचिये तो वे सब चले जा रहे हैं, वे अपना घर, भूमि और सब कुछ छोड़कर चले जा रहे हैं। वे लौटकर नहीं आयेंगे। साथ ही वे यह भी नहीं जानते, कि वे कहाँ जा रहे हैं। "सभी को यह निश्चय हो गया कि इब्राहीम पगाल हो गया। उन सब को बहुत दुःख हो रहा था। कदाचित सारा भी दुःखित

थी।" मेरा प्रिय पति। बेचारा कितना भला व्यक्ति था। उसे क्या हो पाया है?"किन्तु इब्राहीम जानता था कि वह पागल नहीं है। वह जानता था कि उसने परमेश्वर की वाणी सुनी है। इसीलिए उसने आज्ञापालन किया। परमेश्वर ने इब्राहीम को उत्पत्ति १२:२, ३ में एक महान प्रतिज्ञा दी, "मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, मैं तुझे आशीष दूंगा, मैं तेरा बड़ा नाम करुंगा और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीष दे उसे मैं आशीष दूंगा और जो तुझे श्राप दें, उन्हें मै श्राप दूंगा और तुझमें पृथ्वी के समस्त कुल आशीष पाएँगे।" यहाँ सात आशीषें हैं, जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इब्राहीम से की।

जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा-पालन करता है तो वह उसे आशीष देता है। क्या परमेश्वर ने जो आशीष इब्राहीम को दी, उसने बढ़कर आशीष कोई प्राप्त कर सकता है? यद्यपि परमेश्वर ने इतने स्पष्ट रुप से कहा था, फिर भी इब्राहीम की सन्तान को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वचन को समझने में कई शताब्धियाँ लग गई। जब कनान देश को जाने के लिए उन लोगों के ने मिस्त्र छोड़ा तब परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उनसे कहा (व्यवस्था ७:१) कि उस देश में सात जातियाँ रहती हैं। ये उन सात आशीषों की विरोधी सात शत्रु हैं। चार सौ पचास वर्ष से भी पहले परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, कि वह भूमि इब्राहीम और उसकी सन्तान की होगी। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को भूला नहीं था। परमेश्वर कभी भूलता नहीं। जो कुछ वह कहता है, उसे स्मरण रखता है, और पूरा करता है। जो प्रतिज्ञायें वह करता है, उन पर स्थिर रहता है। किन्तु वह अपने लोगों को उत्तराधिकार देने के लिए अनेक शताब्धियों तक तैयार करता रहा।

व्यवस्थाविवरण के इसी अध्याय में परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा – कि ये सातों जातियाँ पूरी रीति से उस देश में से निकाल दी जाएँ। दोहरे उद्देश्य की सम्मुख रखकर यह कहा गया था। प्रथमत: वहाँ के निवासी सब प्रकार के कलुष, पाप और

अंधकार की शक्ति के दास बन गए थे। लैव्यवस्था १८ में उनके समस्त पापों की विस्तृत सूची दी गई है, भयानक, क्रुर और लज्जास्पद पापों का वर्णन वहाँ है। परमेश्वर ने धैर्यपूर्वक चार सौ वर्षो से अधिक प्रतीक्षा की, किन्तु उन्होंने पश्चाताप न किया। अत: अब समय आया कि उनका न्याय किया जाय, और उन्हें दण्ड दिया जाय। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपने लोगों से बातें की "हे लोगों तुम मेरी प्रजा हो, मेरी चुनी हुई प्रजा, मेरी बहुमूल्य प्रजा, मेरा अद्भुत खजाना। तुम मेरे सहकर्मी हो। अब तुम जाकर उन सात पापमय जातियों को देश से निष्कासित करो। अब समय आ गया है कि उनका न्याय किया जाए और दण्ड दिया जाय। परमेश्वर ने यह भी कहा –उनके साथ वचनबद्ध न होना और न संगठित होना। उनकी पुत्रियों को अपनी पत्नियाँ न बनाना, न अपनी पुत्रियाँ उन्हे विवाह में देना। उनकी मूर्तियों और मंडपो को नष्ट कर डालना।" परमेश्वर के इतनी स्पष्टता से कहने पर भी उन लोगों ने पूर्ण रुप से आज्ञापालन नहीं किया। यही उनकी प्रथम पराजय थी।

कितनी बार, यद्यपि हम परमेश्वर की। आज्ञा मानना चाहते हैं, पर पूरी तरह से नहीं मानते। संभव है, कुछ थोड़ी-सी ही बातो में हम उसकी आज्ञा नहीं मानते। हो सकता है कि मानवीय सहानुभूति स्नेह, अथवा मानवीय बुद्धि के द्वारा हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करते हों। यहाँ भी ऐसा ही हुआ था। एक भूल करने पर मुनष्य अनेकों भूलें करते जाते हैं। यहोशू ६:२१ में यही प्रदर्शित है। उन्होंने कहा; "अब ये लोग हमारे दास हैं। हम पानी भरवाने का काम इनसे कराएंगे इस प्रकार शैतान को अवसर मिल गया। फिर बाद में विवाहों मे भूलें हुई, और तब परमेश्वर की प्रजा ने मूर्ति पूजा भी आरंभ कर दी। यद्यपि वे उस देश में पहुँच गए परन्तु वे उसका उपभोग न कर सके।

यही अवस्था बहुत से विश्वासियों की है। वे नया जन्म प्रात कर चुके है। वे परमेश्वर के वचन को भी जानते हैं। किन्तु जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें दिया है, उनका

उपभोग वे अपनी आंशिक आज्ञाकारिता के कारण नहीं कर पाते। कितने विश्वासी अविश्वासियों के साथ विवाह सूत्र में बंध जाते है? अनेक बार ऐसे कुविवाहों के लिए माता-पिता ही उत्तरदायी होते हैं। वे स्वयं ही अंधकार में है, और उनका स्वय का विवाहीत जीवन असफल हे, अत: वे अपने विश्वासी बच्चों को भी अंधकार में दु:खी जीवन व्यतीत करने को बाध्य करते हैं। कभी-कभी तो नवयुवक और नवयुवतियाँ स्वयं ही अपने लिए वर वधु चुनते हैं। वे यह युक्ति उपस्थित करते है कि यद्यपि दूसरे ने नया जन्म नहीं पाया है, तथापि वह बाद में नया जन्म प्राप्त कर लेगा या कर लेगी। किन्तु जब विवाह सम्पन्न हो चुकता है, तब अविश्वासी साथी ही विश्वासी साथी को अपनी ओर आकर्षित करने लगता है। इसी कारण अनेक विश्वासी जीवन भर आंसू बहाते रहते है। वे अपनी त्रुटि दुर्बलता और अंधकार के कारण नष्ट हो गए।

कुछ बिन्यामीनियों ने यबूसियों को यरुशलेम में रहने दिया था। प्रथमत: वहाँ दासों की नाई रहते थे। तत्पश्चात वे एक बलवान जाति बन गए। २ शमू ०५ में हम पढ़ते हैं, कि जब दाऊद और उसके साथ यरुशलेम में आए तथा यबूसियों ने दाऊद की खिल्ली उड़ाई। दाऊद एक शक्तिशाली राजा था और वह सामर्थी पुरुषों के साथ वहाँ गया था, किन्तु फिर भी यबूसी जाति एक शक्तिशाली राज्य बन चुकी थी। उन्हें जब ज्ञात हुआ कि दाऊद आया है, तो वे कहने लगे दाऊद कौन हैं, ? एक अंधा भी जाकर दाऊद से युद्ध कर सकता है। उन्होंने यरुशलेम में इतनी शक्ति बढ़ा ली थी कि वे दाऊद की – जो स्वयं परमेश्वर का जन था – खिल्ली उड़ा रहे थे। इन यबूसियों के कारण ही समस्त इस्त्राएल राष्ट्र को एक महा क्षति उठानी पड़ी। परमेश्वर की चुनी हुई, बहुमूल्य और अद्भुत प्रजा होते हुए भी वे आत्मिक रुप से अंधे थे। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का उद्देश्य ज्ञान नहीं किया और प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी इच्छानुसार किया वे परमेश्वर को समझने की क्षमता

खो बैठे थे। वे यह भूल गये थे कि उसकी आराधना कैसे की जाय। अत: अब परमेश्वर पूर्णत: उनमें काम करने में असमर्थ था। यही कारण था, कि एक राष्ट्र के रुप में वे अन्य जातियों के हाथों लगातार आक्रान्त होकर पराजित होते रहे।

यह कितने दु:ख की बात है कि हम विश्वासी होकर भी विभिन्न प्रकार की क्षतियों के शिकार बन कर दु:ख झेलते रहते हैं। मैं उन मसीहियों से बातें नहीं कर रहा, जिन का नया जन्म नहीं हुआ। वे अब तक अंधकार में हैं, और वे नहीं जानते, कि वे क्या खो रहे हैं। मैं अभी उनसे कह रहा हूँ, जो कहते हैं, कि उनका नया जन्म हो चुका है। सन्देह नहीं, कि कुछ समय तक उन्हें असीम आनन्द, महान उत्साह और शान्ति तथा परमेश्वर के बचन की भूख थी, किन्तु अब हम उन्हें अंधकार, पराजय, असफलता, द्वेश, बजराता की स्थिति में देखते हैं क्योंकि न केवल एक किन्तु अनेकों यबूसियों ने उनके हृदय, घर और परिवारों में अधिकार कर लिया है।

वे यबूसी दाऊद का ठठ्ठा कर रहे थे। अपने हृदय और घर में यबूसियों को स्थान देने पर आप भी यही अनुभव करेंगे। वे हमारे स्वर्गीय दाऊद-हमारे प्रभु मसीह का मजाक करेंगे, और आप अपने पड़ोसियों और मित्रों यहाँ तक कि अपने सम्बन्धियों के द्वारा भी अपमानित होंगे। वे कहेंगे – किस बात में आप हमसे अच्छे हैं? ये लोग अपने को विश्वासी कहते हैं, और व्यभिचार में जीवन व्यतीत करते है। इसमें सन्देह नहीं कि ये ऐसे यबूसी हैं, जो आज भी अनेक स्थानों में प्रभु यीशु मसीह का ठठ्ठा कर रहे हैं।

इन यबूसियों को निकालना दाऊद के लिए कोई सरल कार्य नहीं था। परमेश्वर ने अपनी ही विधि से उसे तैयार किया। सर्व प्रथम दाऊद को परमेश्वर ने उस असह्य कष्टों में से पार निकाला, जो शाऊल, अबशालोम और अन्य व्यक्तियों द्वारा दाऊद पर आ पड़े थे। तब उसने उसे हेब्रोन पहुँचाया। वहाँ उसने उस साढे छ: वर्ष रखा। वहाँ से उसने उसे

मिय्योन नगर को पहुँचाया। तब कहीं जाकर वह यबूसियों को भगा सकने में समर्थ हो सका। अन्त में अब यबूसी सिय्योन में से खदेड़े गए। तब स्वर्गीय योजना आई, तब मन्दिर आया फिर महिमा का आगमन हुआ।

अब यबूसियों का निकाल भगाने के दो बड़े शक्तिशाली अस्त्र हैं। एक का नाम सिय्योन है, दूसरे का हेब्रोन। इन्हीं दो के द्वारा वह सब कुछ वापस पा सकने में समर्थ हुआ।

अब हेब्रोन क्या है? सिय्योन क्या है? जैसे-जैसे आप इनका अर्थ समझेंगे, आप खोया हुआ वापस पाना सीख जाएँगे। हेब्रोन और सिय्योन के द्वारा ही आप अपनी खोई हुई सभी वस्तुएँ पुन: प्राप्त कर सकते है। मैं परमेश्वर की महिमा के लिए यह कह सकता हूँ कि हेब्रोन और सिय्योन नामक युद्ध के दो अस्त्रों के द्वारा हम अपनी हर प्रकार की क्षति- चाहे वह व्यक्तिगत, पारिवारिक अथवा मांडलिक हो, पुन: प्राप्त कर सकते है। परमेश्वर हमें आषीष दे कि हम हेब्रोन और सिय्योन के द्वारा अपनी क्षतियों को पूर्ण करना सीख लें। मैं आत्मिक हेब्रोन और सिय्योन की बात कह रहा हूँ। क्या आप प्रार्थना नहीं करेंगे कि परमेश्वर इन दो अस्त्रों के उपयोग की शिक्षा आपको दे?

सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए, कि हमने क्या खोया है। तथा वह क्षति कितनी बड़ी है। तत्पश्चात् हमें यह जानना होगा कि वह क्षति किस प्रकार पूरी की जा सकती है, तथा किस प्रकार उसे कुछ बढ़ाया भी जा सकता है उदाहरण स्वरुप, अय्यूब नामक एक व्यक्ति था। पहले वह एक सांसारिक व्यक्ति था। वह वास्तव में भला और धनी व्यक्ति था। किन्तु वह अंधा था। मनुष्यों के सामने तो वह महापुरुष और सिद्ध मनुष्य था, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह आत्मिक रुप से अंधा, बहरा, निर्धन और अपूर्ण था। जब तक उसे परमेश्वर ने अग्नि परीक्षा में उसे न डाला, तब तक उसे यह पता न था। एक ही दिन में उसने अपने सभी बच्चों को खो दिया। एक ही दिन में उसके सभी भवन भस्म कर दिय

गए। एक ही दिन में उसके सब पशु भी नष्ट हो गए। उसकी क्षति महाभयंकर थी। उसके मित्रगण उस पर झूठा दोषारोपण करने लगे। उसकी अपनी पत्नी तक उसके विमुख हो गई। परमेश्वर ने इस अग्नि परीक्षा की अनुमति क्यों दी? उसने ऐसा इसलिए किया, कि वह अपनी वास्तविक अवस्था पहचान कर अपने यथार्थ उत्तराधिकार को प्राप्त कर सके। अय्यूब ४२:५, ६.१२. पद पढ़िये तो आप समझ जाएंगे, कि अय्यूब के जीवन में परमेश्वर ने ऐसी विपत्ति क्यों लाई। इसके द्वारा परमेश्वर अय्यूब के लिये यथार्थ बन गया, और वह जान गया कि प्रार्थना तथा परमेश्वर से बातचीत कैसे करना चाहिए। अन्त में उसने जो कुछ खोया था उससे कहीं अधिक प्राप्त किया। प्रारंभ में अय्यूब की भाँति हम यह नहीं जानते कि हम क्या खो रहे हैं। आत्मिक रुप से हम अपनी वास्तविक अवस्थ को नहीं जानते। अत: परमेश्वर किसी कष्टपूर्ण साधन के द्वारा हमारी आँखें खोलने को बाध्य होता है, ताकि हम अपने को उसी रुप में देख सकें, जिसमें वह हमें देखता है।

अब दूसरा उदाहरण लीजिए। हिमालय पर्वत पर माऊंटएवरेस्ट संसार का सर्वोच्च शिखर है। प्रात:काल सूर्योदय के समय उसका दृश्य परमसुन्दर दीख पड़ता है। दार्जिलिंग के निकट टाइगर हिल नामक एक स्थान है, जहाँ से आप माऊंटएवरेस्ट की चोटी देख सकते है। इस शिखर को देखने के लिए संसार के सभी भागों के लोग आते हैं। १६५६ ई. में हम तीन व्यक्ति, दो हम और एक हमारा पथ प्रदर्शन वहां गए। उस दिन शिखर-आरोहण करने के लिए हमें प्रात:काल बड़े तड़के जाना पड़ा था, जो हम बड़ी कठिनाई के साथ कर सके थे। वहाँ हमने संसार के सभी भागों से आए हुए लोगों को एकत्र देखा। तब सूर्योदय हुआ और सारा आकाश सुन्दरतापूर्वक रंजित हो उठा। उस दृश्य को देखकर लोग एक एक कर चले गए। केवल हम लोग चार व्यक्ति पीछे रह गए। मैंने अपने मित्र से पूछा – "आप बता सकते हैं, कि एवरेस्ट की चोटी किधन है? उसने संकेत से बता कर

कहा – वहाँ देखिए, वहां।" अतएव मैंने दृष्टि डाली और एक सुन्दर श्वेत बिन्दु देखा। मेरे देखते ही वह खिसकने लगा, तो मैंने कहा – "वह माऊंटएवरेस्ट कैसे हो सकता है? वह तो सरक रहा है; वह तो बादल है।" अतएव मैंने पुन: अन्य व्यक्ति से पूछा— "कृपया बताइए कि माऊंटएवरेस्ट किधर है? "उसने कहा – अपने पीछे की ओर देखिए और थोड़ी देर तक प्रतीक्षा कीजिए। जब कुहरा मिट जाएगा तब माऊंट एवरेस्ट दिखाई पड़ेगा। "मैं पीछे की ओर मुड़ा। कुछ क्षणोपरान्त कुरा खुल गया। तब हम लोगों ने माऊंट एवरेस्ट को देखा। वह आश्चर्यजनक दृश्य था। तथापि दो सौ से अधिक व्यक्तियों ने बादल को देखकर ही समझ लिया कि वह माऊंट एवरेस्ट था, और यह कहते चले गए कि "हमने माऊंट एवरेस्ट को देखा है। हमने माऊंट एवरेस्ट को देखा है।"

आत्मिक रुप से हमारी भी यही गति है। हम समझते हैं, कि हमने प्रभु को देखा है। परन्तु वास्तव में हमने अब तक उन्हें नहीं देखा है। यही कारण है परमेश्वर हमें कई दु:खद परिस्तिथियों से ले जाने को बाध्य होता है, ताकि हमें वह देखने को आँखें दे।

दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया। परमेश्वर की महिमा नीचे उतरी। परमेश्वर भी हमारे पास नीचे आएगा। हम लोग उसकी प्रजा होंगे, तथा हेब्रोन और सिय्योन के द्वारा हम अपनी प्रत्येक क्षति की पूर्ति कर लेंगे।

अष्टम अध्याय
क्षति के कुछ कारण

कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं, कि उनकी प्राप्ति से हमें अति आनन्द प्राप्त होता है। अभी हाल ही हम दो व्यक्तियों ने पाकिस्तान का भ्रमण किया था लाहौर में दो दिनों की सभा थी। हमने रावलपिंडी से लाहौर की यात्रा रात्रि में की, और हम वहाँ ६:३० सुबह पहुँचे, जबकि सभा का नियत समय ६:०० बे था। जैसे ही हम अहाते में पहुँचे कि एक भीड़ ने हमें घेर लिया। उन प्रिय जनों का स्वागत् पाकर बडा आनन्द मिला। हम एक एक कर उनका परिचय प्राप्त करने में संलग्न हो गए हम एक टैक्सी से आए थे। परिचयात्मक मिलने के पश्चात हमें हमारे कमरों में पहुँचाया गया, ताकि सभा में जाने के पहले हम नहा धोकर तैयार हो जाएं। अपने कमरें में आकर हमने देखा कि एक थैला गुम है। उस थैले में दाढ़ी बनाने का सामान तथा अन्य कुछ वस्तुएं थी। दाढ़ी बनाने के सामान की तो मुझे चिन्ता न थी, किन्तु चिन्ता पार-पत्र (पासपोर्ट और विसा) और अनुमति पत्रों की थी, जो उस थैले में थे। चिन्ता इसलिए थी, चूकि दूसरे ही दिन हमें लाहौंर छोड़ देना था। हम उस थैले की कहीं भी न पा सके, भले ही प्रत्येक व्यक्ति अहाते के भीतर उसे हर स्थान में ढूँढ रहा था। मैंने चिन्तातुर होकर सोचा – "हमें कब तक पाकिस्तान में रोक लिया जाएगा? कदाचित् हमें एक नए पासपोर्ट के लिए अवेदन पत्र देना पड़ेगा, और यहाँ और तीन सप्ताह रहना पड़ेगा" फिर मुझे यह विचार आया कि "हो सकता है टैक्सी-चालक हमारा थैला ले गया, हो सकता है ऐसा उसने अनजाने ही किया हो। "हमने अैक्सी के पिछले भाग में कुछ सामान रखा था, और कुछ सामने के भाग में। जो पीछे बैठे थे वे भूल गए। किन्तु अब हम क्या करें? हम टैक्सी का नम्बर भी लेना भूल गए। टैक्सी चालक अधिक ईमानदार भी नहीं होते, अत: हमने पुलिस स्टेशन को फोन करने का विचार किया। फिर भी मैंने सोचा कि

इनमें से कोई भी उपाय के द्वारा हम थैला प्राप्त नहीं कर सकते। अतएव मैंने कहा – "हे प्रभु मुझे पाकिस्तान में अधिक दिनों तक ठहरने नें कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु भारत में तेरे काम को हानि होगी। हमें सभा के लिए कालिम्पाँग जाना है। तत्पश्चात् हमने हैदराबाद में पवित्र महासभा की घोषणा कर दी है।" अतएव मैंने प्रार्थन की – "हे प्रभु क्या तू स्वयं ही वह थैली वापस ला देगा? यदि वह टैक्सी चालक के पास है, तो तू उसे दयाकर यहाँ वापस करने को कह दे। हमें दूसरी वस्तुओं के खोने की चिन्ता नहीं, किन्तु अपना पासपोर्ट हम चाहते है।" जब हम यह प्रार्थना कर चुके, तो कुछ मिनटों के पश्चात् एक व्यक्ति मेरे कमरे में आया। उसने कहा "भाई जी हमें थैली मिल गई है।" "मैंने पूछा-कैसे मिली?" टैक्सीवाला वापस आया था। वह तो दूर चला गया था। किन्तु किसी प्रकार उसे भय मालूम हुआ, और वह थैली ले कर वापस आ गया। आप, सभी के चेहरे पर उल्लास देख सकते थे। सभा का प्रत्येक व्यक्ति आनन्दित था। हमारी क्षति की पूर्ति हो चुकी थी, और उस पूर्ति पर परमेश्वर का बहुत-सा कार्य निर्भर था। थैला मिल जाने से हम ठीक समय पर, हैदराबाद की पवित्र सभा में भाग लेने को भारत वापस आ सके। अन्यथा तब तक लोग हैदराबाद में, हमारे पाकिस्तान से वापस आने की ही प्रार्थना करते रहते। इतनी बहुमूल्य वस्तु पा लेने पर कैसा आनन्द हमें अनुभव हुआ।

क्षतियाँ दो प्रकार की होती है। व्यक्तिगत क्षति और सामूहिक क्षति। पहली क्षति वह है जिसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से होता है – दूसरी का सम्बन्ध सम्पूर्ण कलीसिया से होता है। परमेश्वर का वचन कहता है, कि प्रभु में विश्वास करने के कारण हम प्रभु यीशु मसीह के शरीर के अंग हैं। शरीर का प्रत्येक अंग अत्यन्त आवश्यक और मूल्यवान है। कुछ अंग छोटे हैं, कुछ बड़े। कुछ अंग छोटे तो हो सकते हैं, किन्तु शरीर में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। जब एक अंग दु:ख भोगता है, तो समस्त देह दु:ख भोगती है।

आपकी उँगली में कोई चोट लग गई हो, यह एक छोटा सा फोड़ा या सूजन हो, किन्तु आप सो नहीं सकते, क्योंकि समस्त देह दु:ख पा रही है। इसी प्रकार जब हम क्षति का जीवन व्यतीत करते हैं, जब विश्वासी होने पर भी हमारा जीवन बंजर है, तो समस्त देह, अर्थात मसीह की कलीसिया दु:ख पाती है। हमारी हानि, सम्पूर्ण कलीसिया की हानि है। इसी प्रकार हमारी क्षतिपूर्ति से सब को आनन्द और आशीष प्राप्त होगी।

एक समय हमारे प्रभु ने पाँच हजार की भीड़ को जब की पाँच रोटियों से तृप्त किया था। स्वभावत: भूमि पर बहुत से उच्छिष्ट कण बच रहे। जब लोग तृप्त हो गए, तब हमारे प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा: - 'उच्छिष्ट कणों को बटोर लो, ताकि कुछ भी नष्ट न हो पाए।' (यूहन्ना ६:१२) ये कण क्यों एकत्र किये गए? वे केवल पशू और पक्षियों के लिए एकत्र नहीं किए गए। वे एक उद्देश्य के कारण एकत्र किए गए।

उसने यह भी कहा – तुम्हारा हाँ, ही हो, और 'नहीं' नहीं ही हो। कभी जब आप किसी के घर जाते हैं, तब वे पूछते हैं – "क्या आप चाय पीएँगे?" मान लीजिए कि अपने कह दिया – "जी हाँ" तब आप उनके चेहरे पर के परिवर्तन को देखिए। बात यह है कि उनके घर में न तो चीनी है न दूध। उन्होंने तो केवल लोग-व्यवहार के नाते कह दिया था। उनकी आशा थी, आप कहेंगे 'नहीं', किन्तु आपने कह दिया 'हाँ'। इसी प्रकार शायद आप भी अनेक निरर्थक बातें बोल देते हों। आप भल गए, कि आप को एक एक कण का हिसाब देना होगा। (मत्ती १२:३६)। इस मानदण्ड के अनुसार हममें से अनेकों को स्वीकार करना पड़ेगा कि हमने अनेकों बार प्रभु को दु:खित किया है।

पुन: हमें यह ज्ञात है, कि प्रभु में हम एक महान आत्मिक सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हैं। वह स्वर्गीय उत्तराधिकारी है। वह परम पवित्र है, जो कभी धूमिल न होगा। कोई भी व्यक्ति इसे पूर्णरुप से नहीं समझ सकता। वह इतना महान है कि प्रभु का वचन कहता हैं,

“आँखों ने नहीं देखा; कानों ने नहीं सुना; न ही उसने मनुष्य-हृदय में प्रवेश किया है, ऐसी वस्तुओं को परमेश्वर ने अपने से प्रेम करने वालों के लिए तैयार कर रखा है, (१ कुरन्थी २:६) कितना सत्य वचन है। पुन: हम प्रभु के वचन १ कुरन्थीयों ३:२१-२२ में हम पढ़ते हैं, “सब वस्तुएँ, तुम्हारी है; चाहे पौलुस हो या अपुल्लोस, कैफा हो या संसार हो। फिर भी, क्योंकि हम अपने स्वर्गीय उत्तराधिकारी का उपभोग करना नही जानते, इसलिए पराजय और असफलता का जीवन व्यतीत करते हैं। बाइबल के आधार पर हम यह जानते हैं, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सब कुछ दे डालने की योजना बनाई थी। आरंभ में, उत्पत्ति के प्रथम अध्याय में हम पढ़त है कि परमेश्वर ने आदम को सारी सृष्टि का शासक बनाया। यदि वह पाप न करता, तो वह परमश्ेवर के अभिप्राय में बाधा पड़ी। परन्तु परमेश्वर का प्रेम कभी भी परिवर्तित नहीं होगा क्योंकि परमेश्वर यिर्मयाह ३१:३ में कहते हैं “मैंने तुझसे अक्षय प्रेम किया है।” हम बदल सकते हैं, किन्तु उसका प्रेम कभी नहीं बदल सकता। परमेश्वर का उद्देश्य अटल है।

इमने उत्पत्ति १२ में देखा हैं, कि किस प्रकार परमेश्वर की महिमा इब्राहीम पर प्रकट हुई। उसने उसे अनन्तकाल तक के लिए सात महान आशीषें दीं – शर्त की वह प्रभु के प्रति आज्ञाकारी रहे। उसे अपना देश और सम्बन्धी परिवार के लोगों को छोड़कर नये स्थान में चले जाने का आदेश परमेश्वर ने दिया था। वहाँ परमेश्वर ने इब्राहीम और उसकी सन्तान के लिए एक उत्तराधिकार की व्यवस्था कर रखी थी।

तत्पश्चात् हमने यह देखा कि शैतान ने किस प्रकार छोटे और दुष्टतापूर्ण उपाय से उसके लोगों को उनकी विरासत से वंचित रखने का उपाय किया। कभी-कभी तो हम यह जानते भी नहीं कि हमारी हानि हो रही है। एक समय एक प्रचारक तृतीय श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। वे एक बेंच पर सो रहे थ। और सामने के एक बेंच पर उन्होंने अपना सूटकेस रखा

था। उसमें बहुत ही दृढ ताल पड़ा था, साथ ही वह एक जंजीर के द्वारा बेंच से भी बंधा हुआ था। वे उस सूटकेस की चौकसी कर रहे थे। अन्त में उन्हें नींद आ ही गई। नींद खुलते ही उन्होंने सूटकेस की ओर देखा। उसमें ताला अभी भी पड़ा था, किन्तु जब उन्होंने उसे खींचा, तब वह एकदम हल्का और खाली था। चोर किस प्रकार बिना ताला खोले ही अन्दर की वस्तुएँ ले जाने में सफल हुआ? वे यह सोच ही रहे थे, कि जब उन्होंने सूटकेस की दूसरी ओर पलट कर देखा, तब पाया, कि वह चाकू से काट दिया गया हैं, और उसमें से चीजें निकाल ली गईं हैं। यद्यपि उन्होंने रात-भर सूटकेस की चौकसी की थी, किन्तु अपनी क्षति का आभास उन्हें भोर में ही हुआ। बहुत से विश्वासी अपना आनन्द, अपनी शान्ति और विश्वास इसी प्रकार खो रहे हैं, किन्तु एक दिन आएगा, जब कि परमेश्वर का वचन सुनने के द्वारा, और परमेश्वर के प्रकाश के द्वारा उन्हें यह ज्ञात होगा कि अपनी लापरवाही और असफलता के कारण उनकी कितनी बड़ी हानि हो चुकी है।

इसी प्रकार एक असफलता के कारण सम्पूर्ण जाति को न्याय का सामना करना पड़ा, और परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि किस प्रकार परमेश्वर के पास जाएँ, और व लज्जा और अन्धकार का जीवन बिताते थे। किन्तु परमेश्वर नहीं बदला, न ही उसका प्रेम बदला, और उसने योजना बनाई कि सम्पूर्ण राष्ट्र को क्षति की पूर्ति प्राप्त हो। परमेश्वर का वचन हमें दर्शाता है, कि हेब्रोन और सिय्यान के द्वारा प्रत्येक आत्मिक क्षति की पूर्ति हो सकती है। अनेक वर्षो तक परमेश्वर अपने लोगों को इन बातों का अर्थ बता रहा था। हमें भी यह स्वर्गीय सत्य समझने में अनेक वर्ष लग सकते हैं। किन्तु परमेश्वर इतना धीर हैं, कि जब तक हम समस्त क्षति की पूर्ति प्राप्त न कर लें, वह हमें त्याग न देगा। क्षति पूर्ति के इस उद्देश्य को लेकर ही परमेश्वर ने इब्राहीम को हेब्रोन लाया।

परमेश्वर ने प्रकट होकर इब्राहीम से स्पष्टत: कहा था – "अपनी भूमि, अपनी सम्पत्ति, तथा अपने सगे – सम्बन्धियों का परित्याग करो। उस देश को जाओ, जिसे मैं तुम्हे दिखाऊँगा" उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। किन्तु एक छोटी-सी भूल के कारण उसने बहुत बड़ी क्षति उठाई। यह क्षति अनुचित साझे के कारण हुई।

जब वह यात्रा की तैयारी कर रहा था, तब उसका भतीजा उसके पास आकर बोला, "इब्राहीम चाचा, आप कहाँ जा रहे हैं?" उसेन उत्तर दिया, "परमेश्वर ने प्रकट होकर मुझसे कहा कि अपने सगे-सम्बन्धियों, धन-दौलत तथा अन्य पदार्थो को त्याग कर नये देश में जाओ।" बस लूत रोने लगा। उसने कहा, "पूज्य चाचा जी, आप मेरे लिये पिता से बढ़कर हैं। आज तक मैं बराबर आपके साथ रहा। मेरे चाचा जी मुझे यहाँ न छोड़िए। आप जो कहेंगे, मैं वही करुँगा। "इब्राहीम ने उत्तर दिया – मुझे इस बात का बड़ा खेद है, कि मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता। परमेश्वर ने कहा है कि तुम अपने सभी रिश्तेदारों को त्याग दो।" तब लूत ने कहा - 'कृपया मुझे न त्यागें। मैं आपके पुत्र-के तुल्य हूँ। यदि आप मुझे साथ न लेंगे, तो मैं निश्चय ही प्राणत्याग करुँगा। मैं आत्महत्या कर लूंगा।' इस प्रकार उसके आँसुओं से इब्राहीम ने धोखा खाया। उसका हृदय पिघल गया। उसने सोचा – "मैं उसे साथ ले लूँगा। वह अभी छोटा, पर बहुत ही भला बालक है। वह मेरे लिए उपयोगी होगा। मैं उसे ले ही चलता हूँ।"

किन्तु अनेक वर्षो के पश्चात् वह समय आ पहँचा, जब एक दूत इब्राहीम के पास दौड़ा हुआ आया और बोला – "कृपा कर जल्दी करें। आपके और लूत के दासों में मार-पीट हो रही है। कृपया आइये। अतएव इब्राहीम वहाँ गया और देखा कि लोग झगड़ रहे हैं। अन्त में इब्राहीम ने यह जान लिया कि परमेश्वर ने ठीक ही, कहा था। उसने कहा - 'हे प्रभु मैंने भूल की।' अतएव उसने लूत को बुलाकर कहा - 'मेरे तुम्हारे बीच किसी प्रकार का

झगड़ा न हो। तुम मुझसे प्रेम रखते हो, और मैं तुमसे। किन्तु ये दृष्ट लोग झगड़े पैदा कर रहे हैं। हम अब झगड़ा करना नहीं चाहते। अब तुम्हे मुझसे अलग हो जाने की बात पर विचार करना होगा। यदि तुम दाहिनी और जाओ, तो मैं बाँई और जाउँगा, और यदि तुम बाँयीं ओर जाओ, तो मै दाहिनी ओर जाऊँगा।"

इस कारण लूत ने अपनी आँखे उठाई, और चारों ओर की उपजाऊ भूमि को देखा। यह सदोम के निकट थी। उसने विचार किया – "इब्राहीम के साथ मुझे जितना मिलता था; उससे कही अधिक मैं प्राप्त कर सकता हूँ।" उसने वह भूमि चुन ली। वह वास्तव में अच्छी भूमि थी। किन्तु यह भूमि सदोम और अमोरा के बहुत ही निकट थी। उस समय सदोम और अमोरा के निवासी पाप में लिप्त होकर बहुत ही लज्जापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। परन्तु लूत ने सोचा, "मैं उस नगर से दो मील दूर हूँ।" बस इसी प्रकार उसने विचार किया। इससे प्रकट होता है, कि लूत को परमेश्वर की वस्तुओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह एक लोभी व्यक्ति था, जो अवसर देखकर लाभ उठाता था। यद्यपि उसने आरंभ में इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी – "मैं परमेश्वर का अनुसरण करता हुआ आपके साथ रहना चाहता हूँ।"

इसी प्रकार बहुत से लोग परमेश्वर से विमुख हो गये हैं। इसी कारण वे भारत तथा दूसरे देशों से इंग्लैड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया अथवा यूरोप जाते हैं। वे यह घोषित करते हुए भ्रमण करते हैं – "इतने वर्षो से मैं भारत में परमेश्वर की सेवा कर रहा हूँ।" किन्तु इनमें से बहुत से लोग तो दुष्ट और शैतान हैं। वे पैसे के लिए विदेश जाते हैं, परमेश्वर के लिए नहीं। वे मोटर-कार पाने और अपने घर बनाने के पैसा प्राप्त करने का उद्देश्य लेकर विदेश गए हैं। लूत की तरह वे भी उपजाऊ देश में गए हैं।

लूत के कारण परमेश्वर इब्राहीम से स्पष्टता से वार्तालाप नहीं कर सकता था। आरंभ से परमेश्वर उसका पथ प्रदर्शन कर रहा था किन्तु अन्त में वह रुक गया था। क्योंकि लूत के कारण इब्राहीम ने परमेश्वर की उपस्थिति की अनुभूति को खो दिया था।

यदि इस क्षति की पूर्ति का कोई मार्ग था, तो वह उनके विच्छेद के द्वारा ही था।

परमेश्वर पुन: इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ। किन्तु कब? जब लूत उससे अलग हो गया तब। कृपया इस अंश की चिह्नित करें "इसके बाद लूत उससे अलग हो गया" (उत्पत्ति १३:१४)। जब लूत इब्राहीम से अलग हो गया, तब परमेश्वर इब्राहीम पर प्रकट हुआ और कहा – "जितनी भूमि तुझे दिखाई पड़ी है, यह सब मैं तुझे और तेरे वंश को सदा सर्वदा के लिए दे दूंगा। मैं तेरी सन्तान को पृथ्वी की धूल की नाई बढ़ाऊँगा। तेरी सन्तान को वही गिन सकेगा, जो भूमि के धूलकणों को गिन सकेगा। उठ उस देश की लम्बाई और चौड़ाई से होकर चल, क्योंकि वह मैं तुझी को दूँगा।" अब परमेश्वर इब्राहीम को यह दिखा सका, कि क्या ही महान उत्तराधिकारी वह उसे और उसकी सन्तान को सर्वदा के लिए देना चाहता है।

यही आशीष प्रत्येक विश्वासी को दी जाती है। अपने जीवन में आए हुए किसी लूत के कारण आप भले ही आत्मिक रुप से अंधे हो गए हों। वह कोई सांसारिक मित्र, परमेश्वररहित पति या पत्नि, या अपवित्र संगति हो सकती है। सांसारिक सहानुभूति के द्वारा आप अपने जीवन में क्षति उठा रहे हैं। परमेश्वर कह रहा है, "लूत को साथ मत लो।" किसी पुरुष अथवा स्त्री के आँसुओं ने आपसे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करवाया होगा। आप आत्मिक रुप से अंधे हो गए हैं, और आप परमेश्वर की वाणी नहीं सुन सकते। आप परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द उठाने में असमर्थ हैं। आप अपने आत्मिक उत्तराधिकारी और सौभाग्य का उपभोग करने में असमर्थ हैं। आप केवल बालकों

की सी छोटी-मोटी वस्तुओं को चाहते है। परमेश्वर की वस्तुओं के लिए आप को कोई आकांक्षा नहीं है, क्योंकि आपके जीवन में लूत आ गया है। आपको तूरन्त उस लूत से अलग होना पड़ेगा। अथवा एक दिन आप देखेंगे कि परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण आपको कितनी हानि उठानी पड़ी है। उस लूत से आप शीघ्र ही अलग हो जाएँ, तब परमेश्वर, आपके सामने प्रकट होना, आपसे बातें करेंगा, और अपनी शक्ति से आपको परिपूर्ण कर देगा।

हमें बताया गया है, कि जब परमेश्वर इब्राहीम पर प्रकट हुआ, तब वह हेब्रोन में जाकर रहने लगा (उत्पत्ति १३:१८)। वहाँ वह स्तुति और आराधाना से भरा हुआ था। वह परमेश्वर से बातचीत करता था, और वहाँ उसने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई। यह सब तभी हुआ, जब वह लूत से अलग हो गया।

हेब्रोन का अर्थ क्या है? हेब्रोन का अर्थ है 'संगति'। पापी होने के कारण हम परमेश्वर के सन्मुख से निकाल दिये जाते है। कोई भी पापी परमेश्वर से न तो बात कर सकता है नही उसकी वाणी सुन सकता है। आप आश्चर्यकर्म देख सकते हैं, आप स्वप्न देख सकते हैं, किन्तु जब तक आपके पाप क्षमा नहीं हुए आप परमेश्वर से बात नहीं कर सकते। पापी होने के कारण हम परमेश्वर से बहुत दूर रहते हैं, किन्तु जब हमारे पापों की क्षमा हो जाती है, तब परमेश्वर हमारे बिलकुल निकट रहता है। आप उसके सम्मुख कभी भी जाकर उससे बातें कर सकते हैं। अब आप उसकी कृपा पाने के लिए ही उसके पास नहीं जाते, किन्तु इसलिए जाते हैं, क्योंकि आप उसके सन्मुख रहने को प्रिय जानते हैं।

आप एक शिशु को दिन भर उसकी माता की गोद में देखते हैं। यदि आप शिशु से पूछ सकें कि "प्रिय बालक क्या तुम घंटो अपनी माता की गोद में रहने से नहीं थकते? मैंने सुबह से दोपहर तक तुम्हें तुम्हारी माता की गोद में लगभग पाँच घंटे देखा है। प्रिय बालक

बताओं, क्या तुम नहीं थके? तो बालक निश्चय कहेगा – "नहीं, मैं तो नहीं थका। मुझे यहाँ बहुत आराम है।" क्या आप सोचते हैं कि यह कोई आश्चर्य की बात है?

कदाचित हैदराबाद की पवित्र सभाओं में भाग लेने के पश्चात आप यह कहना चाहेंगे। हम घंटो सभा में बैठते है। मेरी पीठ में दर्द होता है, मुझे बहुत भूख लगती है। मुझे कुछ भोजन चाहिए, मुझे कॉफी चाहिए। इन लोगों का और कोई धंधा तो हैं नहीं, वे हेब्रोन में घंटो रह सकते हैं। किन्तु हम तो बड़े लोग हैं हम जन-साधारण तो हैं नहीं इतने लम्बे समय तक हेब्रोन में रहने से हमारा समय नष्ट होता है। हम जानते है, कि भाषण दो बजे तक समाप्त होगा फिर तीन बजे तक भोजन परोसा जाएगा। वास्तव में यहाँ रहने से समय नष्ट होता है। यदि आप ऐसा कहते हैं, तो आप संगति का महत्व नहीं जानते। अपने जीवन में कोई लूत होने के कारण आप परमेश्वर की संगति का आनन्द उठाने में असमर्थ हैं। जब इब्राहीम लूत से अलग हो गया, तभी परमेश्वर उसके लिए अधिक वास्तविक हो उठा। वह परमेश्वर से उसी तरह बात कर सका जैसा एक मनुष्य दूसरे से करे। इसी कारण वह अपनी भूमि, पशु और अन्य बहुमुल्य वस्तुओं को परमेश्वर के लिए त्याग सका। परमेश्वर उसके लिए सत्य था।

जब लूत उसके साथ था, तब परमेश्वर चुप था। कई बार उसने सोचा होगा, "मैं क्या करु? मेरे और लूत के चरवाहों के मध्य लगातार झगड़े हो रहे हैं। मैं क्या करुँ? किन्तु परमेश्वर ने उसे उत्तर नहीं दिया, जब तक कि लूत चला न गया। फिर परमेश्वर ने स्वयं संभाषण आरंभ किया, "इब्राहीम उत्तर की ओर देख, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर देख। उठ उस देश की लम्बाई और चौड़ाई में से चल।" अब उसकी आँखे खुलीं और असने समझा तथा स्पष्ट रुप से परमेश्वर से बातें करने लगा।

यदि कोई हमसे प्रश्न करे "आप कैसे जानते हैं, कि परमेश्वर ने आपके पापों को क्षमा किया है? आप बार बार कहते हैं, कि परमेश्वर ने आपको क्षमा कर दिया है, आप कैसे इसे प्रमाणित कर सकते हैं?" तब हम कहेंगे, "मुझे पता नहीं किन्तु एक बात मैं जानता हूँ कि मैं परमेश्वर से बात कर सकता हूँ, और मेरा प्रभु प्रतिदिन मुझसे बातें करता हैं। मैं हर समय परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकता हूँ और उसके सम्मुख रहने में मुझे अति आनन्द प्राप्त होता है।"

किसी मनुष्य से बात करने की अपेक्षा हमें परमेश्वर से बात करने में अधिक आनन्द प्राप्त होता है। हम उसे जानते हैं, और वह हमें जानता है, और उसकी संगति के द्वारा हम अपनी अनेक क्षति की पूर्ति कर सकते हैं।

सर्वप्रथम हमारी संगति पिता तथा पुत्र से होती है। तत्पश्चात् एक-दूसरे से (१ यूहन्ना १:३) जब तक परमेश्वर के साथ हमारी सच्ची संगति नहीं है, तब तक अन्य विश्वासियों के साथ हमारी संगति कदापि नही हो सकती। ये दोनों बातें साथ साथ चलती हैं।

जब आप रेलगाड़ी मे यात्रा करते हैं, तो अपने सहयात्री को धूमपान करने से मान करते है, और वह मान जाता है। परन्तु जैसे ही स्टेशन में गाड़ी रुकती है, वे धूमपान करने का स्थान ढूँढ़ निकालते हैं। जब उसकी बीड़ी या सिगरेट चुक जाती है, अथवा उसके पास दियासलाई नहीं होती, तो वह किसी से जाकर माँग लेता है, क्योंकि वह उसके बिना बहुत देर तक नहीं रह सकता। उसका स्वार्थ उसी में है। शराबियों के साथ भी यही बात है। जब वे बाहर जाते हैं, तो उनका सबसे पहला प्रश्न यही होता है, कि "हमें शराब कहाँ मिल सकती है? वे केवल इसी में रत रहते हैं। हेब्रोन की पवित्र महासभा में भाग लेने वालों में से कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो साड़ियों खरीद कर धन ले जाने में अधिक रुचि रखते हैं। किन्तु

जब आप परमेश्वर की सच्ची प्रजा में संभागी हो जाते हैं, तब आपको अन्य वस्तुओं से अधिक परमेश्वर के लोगों की संगति प्रिय होती है। अनेक लोग पवित्र महासभा को इसलिए अच्छा कहते हैं क्योंकि वहाँ उत्तम रस्सम्, अच्छा उप्पम, और कड़क कॉफी प्राप्त होती है। सब कुछ आपकी अपनी रुचि पर निर्भर है। अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो सच्ची संगति मे रुचि रखते हैं। परमेश्वर से बात करने का आनन्द क्या आपने उठाया है? क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति में लम्बे समय तक बैठ सकते है? क्या आपने परमेश्वर के भवन में, परमेश्वर के लोगों की सच्ची संगति का आनन्द पाया है? ऐसी ही सच्ची परमेश्वर और उसके लोगों की संगति के द्वारा हमारी अनेक क्षति की पूर्ति हो सकती है।

आरंभ के विश्वासी संगति रखने में लगे रहते थे। (प्रेरित २:४२) वे लगातार दृढ़तापूर्वक साथ रहते थे। वे सब, भूमि, भवन, यश, नाम आदि के लिए इच्दुक न थे। वे केवल सच्ची संगति के लिए ही उत्सुक थे। जो लोग सच्ची मसीही-संगति के लिए लालायित रहते हैं, वे दिन-व-दिन आत्मिक उन्नति करते जाएगे। परमेश्वर के भवन में मिले हुए अधिकार का आनन्द उठाना, आप एक-दूसरे की संगति से सीखें।

इब्राहीम को पता था कि परमेश्वर के उपस्थित होने पर किस प्रकार उसकी आराधना की जाए और वह परमेश्वर से वार्तालाप करने को तत्पर रहता था। (उत्पत्ति १८:२२) वह परमेश्वर से मिलने को दौड़कर गया। एक दिन परमेश्वर लूत के समक्ष भी प्रकट हुआ। (उत्पत्ति १६:१) किन्तु इस अन्तर पर ध्यान दें। इब्राहीम परमेश्वर से मिलने को दौड़ गया। उसका आनन्द इतना अधिक था; जबकि लूत आगे गया और सिर झुकाया (उत्पत्ति १६:१-५)। इब्राहीम का आनन्द इतना अधिक था कि उसने अपने अतिथि स्वर्गदूतों को यह कहते हुए निमंत्रित किया – "भीतर आइये, अपने चरण परवारिए। मै आपके लिए थोड़ा भोजन प्रस्तुत करुँगा।" उसने दौड़कर अपनी पत्नी को

बुलाकर कहा – "जल्दी करो, सारा, जल्दी करो। जल्दी से भोजन तैयार करो।" उसके पास एक पला हुआ बछड़ा था। बड़े आनन्द से माँस तैयार कर उनके लिए उत्तम भोजन प्रस्तुत किया। अब लूत को देखिए। उन अतिथियों से उसने कहा – "भीतर आइए।" पर उन्होने आने से इनकार कर दिया। कई बार उसने अन्दर आने के लिए उन पर दबाव डाला। बाद में जब वे अन्दर आए, तब हमें ऐसा कोई वर्णन नहीं मिलता कि उनके लिए भोजन बनाने को लूत ने अपनी पत्नी या पुत्रियों को बुलाया। ऐसा क्यों हुआ? वे लोग सांसारिक व्यक्ति थे। यदि लूत ने जाकर अपनी पत्नी से कहा होता, "मेरी प्रिय पत्नी, शीघ्रता से इन अतिथियों के लिए भोजन तैयार करो।" तो आपके विचार से वह क्या उत्तर देती? शायद वह यही कहती – तुम स्वयं जाकर भोजन बना लो। मैंने तुमसे इसलिए शादी नहीं की है, कि तुम्हारे लिए खाना बनाती रहूँ। तुम स्वयं अपने लिए पका सकते हो। लड़कियों के साथ भी यही बात होती। यदि वह अपनी पुत्रियों के पास जा कर कहता, "प्रिय पुत्रियों, इन अतिथियों के लिए भोजन तैयार करने में तुम मेरी सहायता करो। तो आपके विचार से वे क्या कहती? शायद वे यही कहतीं – हम नहीं आ सकती, क्योंकि हमारे चेहरे पर पाऊडर पुता हुआ है और नाखून रंगे हुए हैं। आप स्वयं खाना बना लें।" अन्त में लूत को स्वयं ही भोजन बनाना पड़ा। कितना अन्तर है।

अब आप देखिए, कि इब्राहीम परमेश्वर को जानता था। बड़े आनन्द के साथ वह परमेश्वर से बातें करने को गया और वह परमेश्वर के लिए सब कुछ समर्पण करने को तैयार था। अब लूत के सम्बन्ध में पहले तो उसने अपना तम्बू सदोम के निकट लगाया (उत्पत्ति १३:१२) फिर उ॰ १४:१२ में हमे देखते हैं कि वह सदोम में निवास करने को गया। अन्त में अध्याय १६:१ में हम देखते हैं कि वह फाटक पर बैठा हुआ नगर का एक प्रधान पुरुष था। सदोम में वह एक प्राचीन बन गया था। इस प्रकार उसने अपने उन समरत

अधिकारों को खो दिया, जो परमेश्वर से प्राप्त थे, और एक सांसारिक धन और एक सांसारिक नाम के लिए वह आत्मिक रुप से अंधा बन गया।

हेब्रोन हमें 'संगति' के विषय बताता है। प्रथमत: परमेश्वर से संगति, द्वितीय सह-विश्वासियों से संगति। लूत के साथ मित्रता रखने से आप इस संगति में नही आ सकेंगे। और तब परमेश्वर अपनी अनन्तकाल की मित्रता आपको देगा।

हेब्रोन जिस दूसरी बात के विषय में बताता हैं, वह है 'विश्वास'। गुप्तचरों ने कनान देश के भीतर जाकर दैत्यों को देखा और अत्यन्त भयभीत हुए। किन्तु यहोशू १४:११-१३ में हम एक व्यक्ति के सम्बन्ध में पढ़ते हैं, जिसका नाम है कालेब। वहाँ अनेकों दैत्य हैं, फिर भी मैं उनपर विजय प्राप्त कर लूँगा। मैंने अनेक वर्षो से परमेश्वर को परख देखा है। अब भी मैं उस पर विश्वास करता हूँ। कृपया मुझे हेब्रोन प्रदान कीजिए। अत: यहोशू ने उसे हेब्रोन दे दिया; और अपने विश्वास के कारण कालेब सभी दैत्यों को भगा सकने में सफल हुआ।

तो हेब्रोन विश्वास के सम्बन्ध में कहता है। दैत्यों से मत डरिए। उनसे संग्राम करने को तत्पर रहिए। आपको बहुत से दैत्य दिखाई पड़ेंगे। बहुत से विघ्न सामने आएंगे। परन्तु अपने जीवित विश्वास के द्वारा आप प्रत्येक दैत्य अर्थात् बाधा पर विजय प्राप्त कर सकते है।

नवम अध्याय
दाऊद की चतुर्थ क्षति

यरुशलेम का निर्माण चार पहाड़ियों पर हुआ था, और, सिय्योन उनमें की एक पहाड़ी पर बसा था। सिय्योन में यबूसी लोग रहते थे। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके दाऊद ने सिय्योन पर विजय प्राप्त की, और यबूसियों को निकाल बाहर किया। फिर भी हम २ शमूएल २४:१७-२५ में अरौना नामक एक यबूसी का वर्णन पाते है। वह सिय्योन में रहता था। वह एक अच्छा आदमी था। वह परमेश्वर का भय मानता था। जब दाऊद उसके खलिहान को खरीदने के लिए उसके पास गया तो उसने कहा – "क्यों? मेरे प्रभु! मैं आपको सब कुछ बिना मुल्य दूँगा। बलिदान के लिए मैं आपको अपने बैल भी दूँगा।" दाऊद ने उत्तर दिया – "मैं परमेश्वर को ऐसी कोई भी वस्तु न चढ़ाउँगा, जिसका मूल्य मैंने न चुकाया हो।" अरौना के खलिहान की कहानी दाऊद की चौथी क्षति की कहानी है। परमेश्वर ने दाऊद को दो अवसरों पर खलिहान में पहुँचाया। (इतिहास १३ और २ शमूएल २४) खलिहान उस स्थान को कहते हैं जहाँ अनाज की दौनी होती है, और दानों को भूसी से अलग किया जाता है।

१ इतिहास १३ में हमने पढ़ा है, कि दाऊद ने यहोवा के सन्दूक को अपने स्थान पर लानें के लिए किस प्रकार अपने सेनापतियों से परामर्श किया। दाऊद को स्मरण रहना चाहिए था कि परमेश्वर ने सन्दूक को लाने के लिए एक विशेष आदेश दे रखा था। किन्तु उसने उस आदेश का पालन नहीं किया। वह सन्दूक केवल लेवियों के कंधो पर ही लाया जा सकता था। किन्तु दाऊद ने सन्दूक को एक नयी गाड़ी पर लाया जैसा पलिश्तियों ने किया था। कीदोन के खलिहान मैं दाऊद ने यह सीखा की परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके मनुष्य की रीतियों का पालन करना कितनी भारी भूल है।

अब २ शमूएल २४ में हम पढ़ते है कि किस प्रकार दाऊद अपने सेनापति योआब को आज्ञा देता है – "जाओ और गणना करो कि हमारे राज्य में कितने योद्धा है।" दाऊद अच्छी तरह जानता था कि अपनी शक्ति अथवा अपनी सैनिक सामर्थ्य के द्वारा कभी कोई युद्ध नही जीता। १ शमूएल २७:४० मे उसने स्वयं स्वीकार किय है – "यहोबा तलवार या भाले के द्वारा विजयी नहीं बताता, क्योंकि युद्ध तो यहोवा का है।" फिर भी उसने अपने राज्य में प्राप्य योद्धाओं को संख्या का प्रदर्शन करना चाहा। उसे गर्व हो गया था, तथा अपनी विजय के लिए वह अपनी सेवा पर निर्भर हो गया। योआव ने उससे कहा "महाराज! आपने स्वयं तो कोई युद्ध नहीं जीता है। यहोबा ने ही आपके लिए युद्ध किया है। आप क्यों इन पुरुषों को गणना करना चाहते है?" चाह वे जितने भी हो; "परमेश्वर ही उन्हें सौ गुणा बढ़ा देता है, फिर भी वे आपका बचा नहीं सकते। परमेश्वर ही है, जिसने आपकी सहायता की है।" फिर भी दाऊद का घमंड नहीं गया, और उसने गणना करने पर जोर डाला। सो राजा की आज्ञा का पालन हुआ। यह सत्य है कि दाऊद ने पश्चाताप् किया तथा यहोवा के सम्मुख रोया – "मैंने यह काम करके बहुत पाप किया है, और अब मैं तुमसे विनय करता हूँ कि अपने दास के पाप को दूर कर क्योंकि मैने भारी मूर्खता की है।" किन्तु दाऊद के पाप के परिणाम स्वरुप परमेश्वर ने देश पर तीन दिन की महामारी भेजी, और सत्तर हजार लोग मर गए। कितनी भारी क्षति। कितनी भयंकर क्षति। अन्त में परमेश्वर ने अरौना के खलिहान में विनाश करनेवाले स्वर्गदूत का हाथ रोक दिया।

यह दूसरा अवसर है जब कि परमेश्वर दाऊद को खलिहान में लाया। क्यों? उसके जीवन से भूसी को दूर कर देने के लिए। दाऊद ने समझा था – "मैं तो बुद्धिमान हूँ। मैं सब कुछ जानता हूँ।" वास्तव में वह बहुत कुछ जानता था, क्योंकि १ शमूएल १६ से हमें ज्ञान होता है कि सम्पूर्ण राज्य में वही सबसे बुद्धिमान व्यक्ति था। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि

में उसके मस्तिष्क में बहुत कूड़ा-करकट भरा था। यही कारण है, कि परमेश्वर ने उसे नम्र बनाने के लिए, उसे झुकाने के लिए तथा उससे मानवीय बुद्धि तथा आत्मविश्वास को दूर करा देने के लिए अरौना के खलिहान में पहुँचाया।

२ इतिहास ३:१ में हम पढ़ते हैं कि यह वही स्थान था, जो बाद में चलकर मन्दिर के लिए चुना गया। दाऊद तथा देश की भयंकर क्षति होने पर परमेश्वर ने क्षमा प्रदान किया और सम्पूर्ण क्षति की पूर्ति की। प्रत्युत उससे भी कहीं अधिक किया। परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर के लिए स्वर्गीय योजना प्रदान की, जिसे कुछ दिनों के पश्चात् दाऊद के पुत्र सुलैमान ने बनवाया। उसने अपने पिता के समस्त निर्देशों का पालन किया। उसने मन्दिर का निर्माण करवाया। जब सब काम समाप्त हो गया, और मन्दिर बन गया, तब सुलैमान ने मन्दिर में बलिदान चढाया। वह दिन सम्पूर्ण देश के लिए सर्वाधिक प्रसन्नता का दिन था। कई शताब्दियों से हो रही समस्त क्षति की पूर्ति उस दिन ही हुई थी। लोगों ने परमेश्वर की महिमा देखी, और प्रभु आकर उनके बीच में रहने लगा। मन्दिर में उपस्थित करुबों के भव्य से वह लोगों से बातें कर सकता था, और सभी देशों के लोगों को वहाँ आकर सुलैमान के आगे झुकना पड़ा। सम्पूर्ण जाति को भीषण क्षति उठानी पड़ी थी, भयंकर हानि। पाप और कलुष का सर्वत्र राज्य था। वे लगातार पलिश्तियों, यबूसियों और दूसरे लोगों के द्वारा हराये जा रहे थे, अब तो कहानी ही बदल गई थी। अब तो वे परमेश्वर की प्रजा थे। और परमेश्वर उनके मध्ये में था – अपनी समस्त महिमा के साथ उनके मध्य में था। अब वास्तविक क्षति-पूर्ति हुई थी, और वे सचमुच में परमेश्वर की प्रजा कहला सकते थे।

सिय्योन का क्या अर्थ है? (२ इतिहास ३:१ ,२ इतिहास २६-२८,१ राजा ६:७ तथा २ इतिहास ७:१ पढ़िए) सिय्योन का पूरा अर्थ बताने में कई घंटे बिताने पड़ेंगे। अत: हम इसके कुछ ही अंशों पर विचार करेंगे।

प्रथमत: सिय्योन में यहोवा दाऊद को मन्दिर-निर्माण के लिए निर्धारित भूमि पर लाया। यरुशलेम चार पहाड़ियों पर बसा हुआ नगर है, और सिय्योन उन पहाड़ियों में से एक है। अब परमेश्वर सिय्योन में अपने मन्दिर-निर्माण के लिए एस स्थान चाहता था। यबूसियों के अधिकार में होने के कारण वहाँ परमेश्वर की स्थान नहीं मिल सकता था। किन्तु अनेकानेक वर्षो की तैयारी के पश्चात् परमेश्वर दाऊद को सिय्योन में ठीक उसी स्थान पर लाया जहाँ उत्पत्ति २२ में इब्राहीम विकट परीक्षा से होकर गुजरा था। परमेश्वर दाऊद को वैसी जगह पर लाया जहाँ वह मानवीय बुद्धि से सम्पूर्णत: रहित कर दिया गया, जहाँ उसे अच्छी तरह फटक कर भूसी से अलग कर दिया गया। अब उसके सन्मुख मन्दिर के लिए उपयुक्त स्थान को प्रकट किया गया।

दूसरी बात, परमेश्वर ने दाऊद की मन्दिर-निर्माण की योजना बताई। १ इतिहास २५:१६ में परमेश्वर ने उसे मन्दिर की सम्पूर्ण योजना और नमूना अति सूक्ष्मता से बताया।

तीसरी बात १ राजा ६ में हम देखते हैं, कि सुलैमान ने कार्य आरंभ करके उसे पूर्ण भी किया। जब तक वह बनता रहा, वहाँ हथौड़े आदि किसी भी औजार का कोई शब्द सुनाई न पड़ा। कारण यह था कि स्वर्गीय योजना के अनुसार ये सभी पत्थर सुन्दरता के साथ खान में ही गढ़े गए थे। यह प्रभु के लोगों की एकता, मेल और संगती की ओर इंगित करता है। उनमें कोई झगड़ा, विवाद अथवा मन मुटाव न था। वे पवित्रआत्मा के द्वारा संचालित थे।

चौथी बात है कि जब मन्दिर-निर्माण का कार्य समाप्त हुआ तो परमेश्वर की अग्नि नीचे उतरी और उसकी महिमा से सारा स्थान परिपूर्ण हो गया। परमेश्वर ने वार्तालाप आरंभ किया। यही सिय्योन है, सच्चा सिय्योन जहाँ प्रत्येक हृदय तथा प्रत्येक कलीसिया में स्वर्गीय योजना के अनुसार परमेश्वर राज्य करता है।

कुछ लोग सोचते हैं, कि मंडप बना कर मेज, प्याला थाल तथा कुछ संगीत की पुस्तकों को एकत्र करके वे गोष्ठी का गठन कर सकते है। यह इस प्रकार कभी नहीं हो सकता। आपको भूसी से अलग करने तथा स्वर्गीय योजना के अनुसार स्वर्गीय मंडली का निर्माण के लिए परमेश्वर आपको कई खालिहानो से होकर ले जाएगा। यह सम्पत्ति, भवन अथवा भूमि पर निर्भर नहीं करता। परमेश्वर स्वर्गीय मंडली-आत्मिक मंडली चाहता है, जहाँ वह शासन कर सके, और जिसके द्वारा वह स्वतंत्रतापूर्वक अपने लोगों से बातें कर सके। जब स्वर्गीय योजना प्रकट होती है, तो महिमा सम्पूर्ण रुप से दिखाई पड़ती है। सिय्योन के द्वारा ही वह अपना ज्ञान और सामर्थ्य प्रकट करता है। वहीं हम परमेश्वर को सम्पूर्णता और महिमा को देख सकते हैं।

दाऊद ने हेब्रोन और सिय्योन के द्वारा सब कुछ पुन:प्राप्त कर लिया। क्या आप अपनी प्रत्येक क्षति को पूर्ण करनाचाहते है? यदि हाँ, तो हेब्रॉन और सिय्योन का अर्थ समझिये। प्रार्थना के द्वारा ही प्रभु सब कुछ अपने लिए प्रस्तुत कर देंगे। तभी हम इन शब्दों को अपने नाम के साथ मिला कर दुहरा सकते हैं – "दाऊद ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया। बरक्तसिंह ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया। बेन्जामिन ने सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया।" विश्वास के द्वारा इन सभी शब्दों की पूर्णता हम सब के जीवन में हो।

दश अध्याय
पुनः प्राप्ति के रहस्य

मनुष्य होने के नाते हम दो प्रकार की हानि उठाते है। प्रथम प्रकार की क्षति तो तब होते है, जब कि हम उद्धार का कोई अनुभव नहीं होता। उस समय हम जो कुछ करते हैं, वह असफलता और क्षति ही है। उस सुप्रसिद्ध सिकन्दर के साथ भी यही बात हुई थी जिसने अनेक देशों को जीतकर तथा प्रचुर सम्पत्ति एकत्र करके कहा था, कि जब कोई देश ऐसा न रहा जिसपर मैं विजय प्राप्त करुँ। तीस वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई। मृत्यु के समय उसने एक प्रार्थना की थी जब उसका शव निकाला जाए, तब उसके दोनों हाथ कफन से बाहर निकाल दिए जाएँ। उसने यह भी कहा था, कि जब उसकी शव यात्रा निकाली जाय, तब एक व्यक्ति आगे आगे यह कहता जाए "महान सिकन्दर इस जगत में खाली हाथों आया, और संसार से खाली हाथ जा रहा है।" उसकी मृत्यु के पश्चात लोगों ने उसके आदेश का पालन किया, और इस बात की घोषणा की कि इतना महान सम्राट भी अपनी अर्जित सम्पत्ति अपने साथ नहीं ले जा सका। यह बात सब के लिए लागू होती है। एक पापी के रुप में आप जो कुछ भी अजित करें अथवा जो भी सफलता प्राप्त करें सब व्यर्थ ही है। आप को पाप का दर्द भोगना ही पड़ेगा, और अनन्तकाल तक भोगना पड़ेगा। न्याय के दिन दण्ड से कोई भी आदमी आपको बचा नही सकता। वे चाहे आपके सम्बन्धों, पड़ासी, अथवा मित्र ही क्यों न हों। यही कारण है कि मनुष्य मृत्यु से डरता है।

वॉल्टेयर नामक एक प्रसिद्ध लेखक था, जो महान विद्वान भी था। वह बाइबल में विश्वास नहीं करता था, और अपने आपको नास्तिक कहा करता था। परमेश्वर पर उसका विश्वास नहीं था। बल्कि विश्वास करने वालों की वह हँसी उड़ाया करता था। एक समय वह बहुत बीमार पड़ा और चिकित्सक उसके रोग का निदान न कर सके। सारी रात वह

बहुत भयभीत होकर चिल्लाता था। उसका चेहरा इतना डरावना हो जाता था, कि कोई भी सेविका उसके पास एक रात से अधिक न टिकती। बस इसी प्रकार संकट और अंधकार में उसकी मृत्यु हो गई।

अब आप मृत्यु का सामना किस प्रकार करना चाहते हैं? एक दिन आपको अपने सभी कामों का ब्यौरा परमेश्वर को देना होगा। यदि आप पाप में मरते हैं, तो परमेश्वर के न्याय के लिए तैयार रहें, और अग्नि की झील में अनन्त दण्ड भोगने को तैयार हो जाएँ। परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर है, किन्तु साथ ही वह न्याय का भी प्रभु है। वह पवित्र परमेश्वर है, वह पाप को सहन नहीं कर सकता।

तीन विशिष्ट नियम हैं, जिनका हमें विचार चाहिए १ – पवित्रता का नियम, २:- न्याय का नियम ३ – प्रेम का नियम। यदि आप पाप में रहें, तो पवित्रता का नियम भंग करते हैं। यदि आप पाप में मरते हैं, तो न्याय का नियम आपके लिए दण्ड का विधान करता है। किन्तु प्रेम का परमेश्वर आपको जीवन और मुक्ति का मार्ग प्रदान करता है। आप दण्ड से मुक्ति पा सकते है, तथा ऐसा जीवन प्राप्त कर सकते हैं, जो परिपूर्ण फल देने वाला हो। प्रभु यीशु मसीह इन तीनों नियमों को पूर्ण करने के लिए मनुष्य बनकर क्रुस पर बलिदान हुआ। जो उसे स्वीकार करते हैं, वे नयाजन्म पाकर अपने आप में इन तीनों नियमों को पूर्ण पाते है।

जो लोग नूतन जन्म पा चुके हैं, वे द्वितीय प्रकार की क्षति उठाते हैं। संभवत अपनी ज्ञानहीनता के कारण अथवा अपनी मूर्खता और पाप के द्वारा उन्हें क्षति उठानी पड़ती है।

अज्ञानता के कारण बहुत बड़ी हानि हो सकती है। लगभग पैंतीस वर्ष पूर्व अपनी पहली यात्रा पर मैं एक रात लन्दन में था। वह बड़ी ठन्डी रात थी। दूसरे दिन प्रात:काल उस घर की मालकिन ने पूछा “श्रीमान बरक्तसिंह, रात में अच्छी नींद आई? मैंने उत्तर दिया

“नही महाशय, मैं तो रातभर काँपता रहा। इतनी ठन्डी थी कि मैंने अपना गर्म कोट पहन लिया मोजे भी पहन लिए, तो भी इतनी ठन्डी लगी कि मैं रात भर काँपता रहा।” उसने मुझसे पूछा “क्यों क्या आपके पलंग पर कोई कम्बल नहीं था?” “नहीं महाशया” मैंने उत्तर दिया, “मुझे कोई कम्बल नहीं मिला।” इस पर उसने कहा “आइये देखिये।” वह मेरे कमरे में आई और उसने चादर उठाई। तब मैंने देखा कि वहाँ एक नही तीन-तीन एकदम नए कम्बल चादर के नीचे पड़े है। अपने जीवन में इतने अच्छे कम्बल मैंने कभी नहीं देखे थे। इस प्रकार के बिस्तर देखने का यह मेरा प्रथम अवसर था। मुझे ज्ञात नही था, कि कम्बलों के अन्दर कैसे जाऊँ। मैं वहाँ मूर्खो की तरह सारी रात कांपता हुआ कम्बलों के ऊपर पड़ा रहा जबकि तीन तीन बिलकुल नए कम्बल मेरे नीचे पड़े रहे। यह क्षति ज्ञानहीनता के कारण उठानी पड़ी।

ऐसे बहुत से नूतन जन्म पाए हुए लोग हैं, जिनके पास बाइबल की अच्छी पुस्तकें हैं, किन्तु उनके लिए मुहर लगाई हुई बन्द पुस्तकें हैं। वे उन्हें अच्छी तरह सम्भालकर रखते हैं। पर वे नहीं जानते कि उसके भीतर क्या है। २५ रु. लगाकर वे सुनहरी किनारी वाली बाइबल खरीदते है। परन्तु पुस्तक का व्यवहार करना अथवा परमेश्वर के वचन में मिलने वाली प्रतिज्ञाओं की माँग करना अथवा आनन्द उठाना नहीं जानते।

कई साल पूर्व पंजाब में एक धर्म प्रचारक आया। वहाँ के गाँवों में लोग बड़ी अच्छी एक फुट परिधि की और एक इँच मोटी रोटी बनाते हैं। इस प्रकार की रोटी को तवे पर धीमी आँच पर सेंकना पड़ता है। एक रात को लोगों ने उस प्रचारक को घर लाकर उन गोल चपटी रोटी पर सब्जी रख कर परोसी। उस प्रचारक ने सब सब्जी खाकर औरयह कहते हुए वह रोटी लौटाा दी, कि “यह थाल वापस ले जाइए।” उसने नही जाना कि वह रोटी थी। इसे ज्ञान का अभाव कहते हैं। विश्वासी होने पर भी परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान और समझ न रहने के कारण आप महान क्षति उठाते हैं। कभी-कभी आप अपनी ही भूलों

और मूर्खता के द्वारा अपने जीवन में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मंडली के लिए महान क्षति का कारण बन जाते हैं।

परमेश्वर ने इब्राहीम को महान आशीष का वचन दिया था। उत्पत्ति १२:१-३ में परमेश्वर ने उसे और उसकी सन्तान को अनेक शाश्वत आशीष के वचन दिए। परन्तु चालीस साल के संकट तथा अरण्य की परीक्षा के पश्चात् इस्त्राएल के बच्चों ने अपनी आशीषों को समझा। उन्हे कनान का सारा देश, मिस्त्र परित्याग के पश्चात् ही प्राप्त ही गया होता। परन्तु उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन पूर्ण रुप से नहीं किया। प्रारंभ में ही वे एक छोटी सी बात में असफल हो गए, और वही असफलता बड़ी असफलता के रुप में परिवर्तित हो गई। छोटी-छोटी हानियाँ बहुत बड़ी हानियाँ हो जाया करती हैं।

फिर भी, प्रेम का परमेश्वर और उसके उद्देश्य तब भी नहीं बदले। वह उनसे तब तक व्यवहार करता, जब तक कि उन्होंने अपनी समस्त क्षति प्राप्त न कर लीं। इस्त्राएल की कथा में हम परमेश्वर का अपरिवर्तित प्रेम तथा उनका उपरिवर्तित विधान पाते हैं, जो अपने लोगों से तब तक व्यवहार करते रहते हैं, जब तक कि उनकी समस्त क्षति पूर्ण नहीं हो जाती। परमेश्वर के इस दिव्य नियम को कोई नहीं बदल सकता। चाहे कोई हो, धनी या निर्धन, राजा या रंक, उपदेशक अथवा सामान्य मनुष्य, स्वर्गीय नियम कभी नहीं बदले जा सकते। यदि हम अपनी मूढ़ता के कारण उन्हें बदलने की चेष्टा करें, तो एक दिन हमें अवश्य ही भयंकर क्षति उठानी पड़ेगी।

परमेश्वर ने हम सबको अपना सहकर्मी बनाया है। वह हममें तथा हमारे द्वारा अपने उद्देश्य को पूर्ण करना चाहता है। एली की कथा में हमें एक उदाहरण मिलता है। वह प्रमुख पुरोहित था। परन्तु वह परमेश्वर के प्रति असफल रहा। परमेश्वर उसे डाँट-फटकार कर दण्ड देना चाहता था। परन्तु उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसके द्वारा वह ऐसा करता। उसे कई वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। तब कहीं जाकर उसे शमूएल मिला जिसे

वह अपने मुखपात्र के रुप में व्यवहृत कर सकता था। जब शमूएल छोटा बच्चा था, उसी समय परमेश्वर ने उससे बातें कीं। उसने उसे नाम लेकर पुकारा – "शमूएल। शमूएल।" पहले शमूएल ने समझा यह मनुष्य की आवाज है। परन्तु तीसरी बार उसने पहचाना, कि वह परमेश्वर की आवाज थी। परमेश्वर एली से सीधे ही कह सकता था – तुमने पाप किया है, अब मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। परन्तु उसने वैसा नहीं किया। उसने कई वर्षों तक प्रतीक्षा की और तब शमूएल के द्वारा एली को ड़ाँटा। यह परमेश्वर की योजना थी। परमेश्वर सहयोगी और सहकर्मी चाहता है। परन्तु यह एक महान उत्तरदायित्व तथा गौरव का कार्य है। इसके लिए तैयारी की आवश्यकता है। बाइबल में वर्णित सभी कथाओं के द्वारा हम यह शिक्षा ग्रहण करते है, कि परमेश्वर के चुने हुए लोगों ने उसे बार-बार पीड़ित किया है. परमेश्वर ने उन्हें आरंभ से ही कह रखा था, "तुम मेरी अद्भुत निधी (धन) हो (निर्गमन १६:५) फिर भी वे अंधे रहकर उसे शोकित ही करते रहे। इस पर भी परमेश्वर ने उनका परित्याग नहीं किया। वह उनके साथ व्यवहार करता ही रहा, और अपना सहकर्मी बनाने के लिए अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उन्हें तैयार करता रहा। परमेश्वर कई वर्षों का समय ले सकता है, परन्तु अपने स्वर्गीय विधान में परिवर्तन नहीं करेंगा।

परमेश्वर के वचन के द्वारा हम अपनी क्षति की प्रकृति तथा उसके कारणों पर विचार करते आ रहे हैं। अब हम इस बात का अध्ययन करें, कि किन अस्त्रों तथा साधनों के द्वारा हम अपनी क्षति की पूर्ति कर सकते है। जैसा हम पहले भी देख चुके है कि परमेश्वर हमारी क्षति की पूर्ति के निमित्त 'हेब्रोन' तथा 'सिय्योन' नामक दो महान साधनों का उपयोग करता है। इन दो अस्त्रों के द्वारा परमेश्वर ने अपने लोगों की सभी क्षतियों की पूर्ति करा दी।

इब्राहीम लूत के प्रति अपनी मानवीय सहानुभूति के कारण क्षति सहता रहा। परन्तु जब वह लूत से अलग हुआ तब परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुआ। जब तक वह लूत के साथ रहा, परमेश्वर इब्राहीम पर प्रकट न हो सका, न ही उसने उससे बातें की। इसी प्रकार अनेकों विश्वासियों ने परमेश्वर से वार्तालाप करने का अपना अधिकार खो दिया है।

हेब्रोन का अर्थ है 'संगति'। सर्वप्रथम परमेश्वर से संगति, अर्थात् पिता और पुत्र से संगति। दूसरा है हमारी परस्पर की संगति, जैसा हम १ यूहन्ना १:३, ४, ७ में देखते है। एक पापी परमेश्वर से बातचीत नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर उसमें वास कर सकता है। एक पापी परमेश्वर की इच्छा ज्ञात नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर की योजना, उद्देश्य और रहस्य को समझ सकता है। परमेश्वर का जीवन उसमें उंड़ेला नहीं जा सकता। चाहे वह आश्चर्यकर्म देखे, और परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर भी दे, फिर भी परमेश्वर उससे बहुत दूर होगा।

अपने पार्थिव जीवन में जब प्रभु यीशु मसीह ने अनेक आश्चर्यकर्म किए, तब बहुत से लोग उनके विषय में कहने लगे, "यह मसीह है। यह मसीह है। यही हमारा मसीहा है।" इसी प्रकार हम यूहन्ना २:२३-२५ में पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु मसीह ने अपने आपको उनके हाथों नहीं छोडा। वे कह रहे थें, "हे प्रभु! हम तुझमें विश्वास करते है।" पर प्रभु यीशु मसीह कह रहे थे, "मैं तुम पर विश्वास नहीं करता।" वे जानते थे, कि उनके हृदय पापमय हैं, और वे अपना पापमय जीवन छोड़ने को तैयार नहीं है। वे केवल उत्तेजित करने वाली बातें चाहते हैं। जब तक हम अपने पापों के लिए पश्चाताप् नहीं करते, तथा हृदय से प्रभु यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते, तब तक उसका जीवन हमारे अन्तःकरण में प्रवाहित नहीं हो सकता।

मार्ग में चलते समय आपको कोई भिखारी मिल सकता हैं, जो कहता हो, "पिताजी!" "किन्तु आप उसे मेरा प्रिय पुत्र" नही कहेंगे क्योंकि आप जानते हैं, कि वह

आपसे केवल पैसे चाहता है। हिन्दी में एक कहावत है, कि जब काम पड़े बाँका, तो गधे को कहे काका। इसी प्रकार कुछ लोग हैं, जो परमेश्वर से कुछ माँगते समय उसे "पिता" कहकर पुकारते है। ऐसे लोग अंधकार में हैं, वे सत्य संगति का अर्थ नहीं जानते।

जब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं, और हमारे हृदय स्वच्छ कर दिए जाते हैं, तब हममें प्रभु के सम्मुख रहने की आकांक्षा होती है। परमेश्वर की संगति से ही, हममें उसके लोगों के साथ सच्ची आत्मिक संगति रखने की योग्यता आती है। आधुनिक युग में अनेक व्यक्ति "चाय-संगति या कॉफी संगति को प्राथमिकता देते हैं। यदि हम उन्हें चाय दें, तब वे हमारे यहाँ आएँगे, किन्तु यदि चाय या कॉफी न दें, तो वे आना स्वीकार नहीं करते।" वे कहते हैं, "वे कहते हैं, "हम मीटिंग के लिए इतनी दूर कैसे जा सकते हैं?" "किन्तु चाय की दावत के लिए वे दस मील भी जा सकते हैं। यदि यही आप पर भी लागू होता है, तो आप भी सत्य-संगति का अर्थ नहीं जानते। जितना ही अधिक हमें परमेश्वर के साथ चलना भाता है, तथा जितना ही अधिक हम परमेश्वर के निकट रहते हैं, उतना ही अधिक हम परमेश्वर तथा उसके प्रियजनों की संगति की संगति का आनन्द प्राप्त करने को व्यग्र रहे हं। ये दोनों बातें साथ-साथ चलती हैं, अलग नहीं हो सकती। बहुत लोग ऐसे हैं, जो परमेश्वर के लागेां की संगति को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। कुछ लोग अपने धन के घमंड के कारण कहते हैं, "ऐसे-वैसे लोगों की संगति मैं कैसे कर सकता हूँ? वह नीच-जाति का ईसाई है, मैं उच्च जाति का ईसाई हूँ।" अन्य व्यक्ति बड़े अभिमान के साथ कहते हैं, "मैं बी.ए. (शायद फेल) है, और मै इतना धन कमा रहा हूँ।"

एक समय एक शहर में चार्ल्स नामक एक व्यक्ति था। वह प्रतिमाह ५५ रु.वेतन पाता था। उसने एक नर्स से विवाह किया, जिसकी मासिक आय १२० रु. थी। अत: वे दोनों मिलकर कुल १७५ रु. प्रतिमाह कमाते थे। एक दिन एक व्यक्ति ने चार्ल्स को सड़क पर देखा और कहा, "क्या आप कृपा कर सुसमाचार सभा में आएँगे?" उसने उत्तरी

दिया, "सभा?" किन्तु पाँच दिनों के पश्चात् मुझे श्री चार्ल्स के पास से एक सूचना मिली: "कृपया आकर मेरी पत्नी के लिए प्रार्थना कीजिए।" मैंने उसके यहाँ जाकर उसे रोते देखा। उसकी पत्नी बहुत बीमार थी। उसकी जीभ दाँतों के बीच दबकर फूलती जा रही थी। डॉक्टरों की हर प्रकार की चिकित्सा भी व्यर्थ हो गई। उसे मुझसे कहा, "कृपया मेरी पत्नी के लिए प्रार्थना करिए। देखिए, मेरे इन बच्चों का क्या होगा?" और वह रोने लगा। मैं अपने मन में सोच रहा था, अब तुम नहीं कहोंगे, "मुझे ५५ रु. मिलते हैं, ओर मेरी पत्नी को १२० रु. मिलते हैं।" बल्कि तुम यह कहोगे, क्या हमारे १७५ रु. हमें बचा सकते हैं? क्या मेरे ५५ रु. मुझे बचा सकते हैं? क्या मेरी पत्नी के १२० रु. मुझे बचा सकते है?"

जब कठिनाइयाँ आती है, तब आप ईश्वर को याद करते हैं, किन्तु जब आप उन्नति कर रहें हैं, और अधिक धन कमा रहे हैं, तब आप परमेश्वर की संगति का तिरस्कार करते हैं, और परमेश्वर की मंडली से यह कर कर दूर रहते हैं, "हम धनी लोग किस प्रकार इन निर्धन व्यक्तियों के साथ मिल सकते हैं।" ऐसी धारणा के कारण ही अनेक विश्वासी आत्मिक रुप से, परमेश्वर के सम्मुख दरिद्र और निर्धन हो गए हैं। क्योंकि वे संगति की शक्ति और मूल्य को नहीं जानते। यही कारण है कि आज अनेकों ऐसे मसीही मिलते हैं, जो प्रभु के लागों की संगति से अधिक सांसारिक मित्रों के साथ प्रसन्न रहते हैं। वे नहीं जानते कि उनकी कितनी अधिक आत्मिक क्षति हो रही है। सच्ची संगति के आनन्द का उपभोग करने के लिए आपको हर प्रकार के लूत से स्वतंत्र रहना पड़ेगा। साँसारिक मित्रता का सम्पूर्णत: परित्याग करना पड़ेगा।

हेब्रोन का अर्थ विश्वास भी है। यहोशू की पुस्तक में हमने देखा कि किस प्रकार कालेब नामक व्यक्ति ने हेब्रोन को माँगा, यद्यपि वह जानता था, कि वहाँ दैत्य रहते हैं। उसे परमेश्वर पर विश्वास था, कि वह उसे हर प्रकार के दैत्य पर विजय प्राप्त करने में

सफलता देंगा। हेब्रोन में रहने के लिए, हमें परमेश्वर पर पूरा विश्वास रखना होगा, ऐसा विश्वास जो मार्ग में आने वाले किसी भी दैत्य से हमें भयभीत न होने दे। मसकुस ११:२३ के अनुसार विश्वास के द्वारा पहाड़ भी हटा दिया जा सकता है।

पुन:, हेब्रोन शरणस्थान भी था। यहोशु २१:१०, ११, २७ में हमे पढ़ते हैं, कि परमेश्वर के लोगों के द्वारा छ:नगर शरणस्थान के लिए अलग किये गये थे। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को अनजाने, और भूल से मार डाले, तो वह निकटतम शरण-नगर में भागकर बच सकता था, ताकि मृत व्यक्ति के मित्र और सम्बन्धीगण उसे मार न डालें। उन शरण नगरों में हेब्रोन भी एक था (यहोशू २०:३)। लोग जब इस प्रकार की कठिनाई में पड़ जाते थे, तो वहाँ जाकर शरण ले सकते थे।

संसार में बहुत से लोग ऐसे हैं, जो अपनी मूर्खता के कारण अनजाने पाप कर बैठते हैं। किसी प्रकार परिस्थितियों के वशीभूत होकर अपरिहार्य स्थिति में पड़ कर वे भूल करने को प्रेरित होते हैं। चाहे अपने मित्रों के द्वारा, अथ्वा दुष्ट पड़ोसियों के कारण, अथवा एकान्त स्थान में रहने के कारण, अथवा दरिद्रता तथा कठिनाइयों के कारण वे पाप कर्म कर बैठते हैं। या अपनी मूर्खता के कारण अपने निर्मम पड़ोसियों के द्वारा बहुत दु:ख-तकलीफ उठाते हैं। ऐसे लोग हेब्रोन के द्वारा शान्ति पाते हैं। उनका मजाक इसलिए उड़ाया जाता है, कि वे अपनी मूर्खता के कारण प्रलोभन में पड़ गए हैं। किन्तु हेब्रोन में प्रेम, दया, तथा प्रार्थना के द्वारा वे सब कुछ पुन:प्राप्त कर लेते है।

हम अभिमान न करें। हम सब भूल कर सकते हैं। शैतान के द्वारा हम सब धोखा खा सकते है। यदि आप किसी दुर्बल विश्वासी की पाप में पड़ते देखें, तो उसका तिरस्कार न करें। उनका परित्याग न करें। पर प्रेम सहानुभूति तथा संगति के द्वारा उसे ऊपर उठा कर सम्भाल लीजिए। (गलतियों ६:१-३)।

हेब्रोन का यह तीसरा अर्थ है। हमें उनका भार वहन करना है, जो आत्मिक रुप से दुर्बल हैं। जब वे गिर जाएँ, अथवा किसी विपत्ति में पड़ें, तो स्वयं दु:ख भोगकर तथा परिश्रमसाध्य प्रार्थना के द्वारा प्रेम एवम् दयापूर्वक हम उन्हें ऊपर उठा लें।

कई वर्ष पहले एक मनुष्य मेरे पास आया और कहा, "कृपया मेरी पत्नी और पुत्री के लिए प्रार्थना कीजिए।" उसने मुझे बताया, कि जब वह अपने काम पर था, वे दोनों घर छोड़कर चली गई। फिर वह रोने लगा और बोला, - "मेरा परिवार तो भँग हो गया। कृपया मेरे लिए प्रार्थना कर दें।" अत: मैंने उसके लिए प्रार्थना की, और वह चला गया। उसके चले जाने पर मेरे मन में यह विचार उठा, कि यद्यपि वह मनुष्य मेरे निकट दु:खी और शोकित होकर आया था, तथापि मैंने तो औपचारिक रुप से ही उसके लिए प्रार्थना की। मैंने अपने को दोषी पाया, तथा प्रार्थन करनी आरंभ की – "हे परमेश्वर मुझे उनके लिए प्रार्थना का सच्चा बोझ दे, जिन्हें शैतान ने धोखा दिया है। वे अवश्य बचाए जाएँ।" मैं तीन घंटे तक प्रार्थना करता रहा, तब प्रभु ने मुझे यह संकेत दिया, कि मेरी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी।

ठीक दूसरे दिन प्रात:काल की सभा के उपरान्त मुझे समाचार दिया गया, कि दो बहिनें मुझसे मिलना चाहती हैं। वे वही बहिनें थी जिनके लिए मैं प्रार्थना कर रहा था। वे मेरे निकट प्रार्थना के लिए आई थी। उन्होंने रोते हुए कहा – "भाई जी, हम शैतान के द्वारा भटक गई थीं। हम लोग बड़ी दूर चली गई थीं, तब अचानक मन में यह विचार उठा, कि आपके पास प्रार्थना के लिए आएँ। इसलिए हम आपके पास आई हैं। कृपा कर यह प्रार्थना करें, कि परमेश्वर हमारी मूर्खता तथा हमारे पापों को क्षमा कर दें।" टूटा हुआ परिवार जुड़ गया।

तिरस्कार के द्वारा हम भूले-भटकों को पुन: वापस नहीं ला सकते। हम विश्वासी जन कभी-कभी बड़ कठोर हो जाते हैं। जब हम किसी दुर्बल विश्वासी को देखते हैं, तो हम उसकी निन्दा करना, ठठ्ठा करना तथा तिरस्कार करना आरंभ कर देते हैं। उनकी भूल की कहानियों का प्रचार करना आरंभ कर देते हैं। उनकी ओर से हम अपना मुँह फेर लेते हैं। उन्हें देखकर तनिक मुस्कुरा भी नहीं सकते। अनेकानेक आत्माएँ भटक गई है। कारण यह रहा कि दृढ़ विश्वासी जन उनके प्रति कठोर ही बने रहे। हमारा प्रभु अच्छा चरवाहा है। वह खोई हुई भेड़ों को ढूँढ़ता है। निर्बल भेड़ों को वह अपने कंधे पर लादकर लाता है। यदि आप अपनी समस्त क्षति की पूर्ति करना चाहते हैं, तो इन गिरे हुओं के लिए शरणगढ़ बनिए। प्रार्थना के द्वारा उन्हें दृढ़ बनाएँ तथा प्रेम के द्वारा उन्हें ऊँचा उठा लें।

चौथी बात यह हैं कि हेब्रोन का परमेश्वर के ऊपर सम्पूर्णत: निर्भर होना। दाऊद ने एक बड़ी भारी भूल की। परमेश्वर से परामर्श किए बिना ही वह पलिश्तियों के साथ मिल गया, और परिणाम यह हुआ, कि सिकलग में आग लगा दी गई। उसकी पत्नियाँ, बच्चे और संगी-साथी सभी खो गए। जब उसने पश्चाताप किया, तथा प्रभु में ढाढ़स बाँधा, तो उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, कि "वह अमालेकियों का पीछा करे या न करे।" यहोवा ने कहा, 'करो।' उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया, और सब कुछ पुन: प्राप्त कर लिया। उस दिन से उसने प्रत्येक बात के लिए परमेश्वर से परामर्श करना आरंभ कर दिया। "हे प्रभु क्या मैं यहूदा के किसी नगर को जाऊँ?" ओर प्रभु ने कहा – "चले जाओ।" तब उसने पुन: पुछा, "हे प्रभु मैं कहाँ चला जाऊँ?" और प्रभु ने कहा – "हेब्रोन।" अत: दाऊद हेब्रोन गया। वह हर छोटी बात के लिए भी परमेश्वर का निर्देशन चाहता था (२ शमूएल ५:१६, २३, २४)। वह प्रत्येक छोटी बात के लिए परमेश्वर के पूछता था – "क्या यह करुँ? क्या कह करुँ? क्या इसे करूँ? इस प्रकार दाऊद हेब्रोन

वापस आया। परमेश्वर ने उसे वहाँ उस सात साल एवम् छ:मास तक रखा, ताकि दाऊद अपनी बुद्धि अथवा अन्य किसी की बुद्धि पर निर्भरशील न रहकर परमेश्वर पर निर्भर रहना सीख ले।

वह एक शक्तिशाली महान सम्राट था। जब उसके शत्रु पलिश्ती उसके विरोध खड़े हुए, तब कह सकता था, "हम क्या करें?" किन्तु नहीं, उसने हर विषय पर परमेश्वर से सलाह ली। हानि को वापस प्राप्त करने की यह चौथी विधी है।

कई विश्वासी तथा परमेश्वर के सेवक इस कारण महान क्षति उठाते हैं, क्योंकि वे अपनी योजनाओं के लिए परमेश्वर से सलाह नहीं लेते। बस, कभी-कभी वे परमेश्वर के निकट जाकर उसकी इच्छा ज्ञात करते हैं। अन्य अवसरों पर वे अपनी बुद्धि का अथवा अपनी उन पत्नियों का भरोसा करते हैं, जो बड़ी सरलता से अपने पतियों का विचार बदल सकती हैं। पति घर आकर पत्नि से कहता हैं; "प्रिय पत्नी, परमेश्वर ने आज सभा में मुझसे बात की।" किन्तु वह कहती हैं, "मुर्ख न बनो! तुम तो अपनी पत्नी और बालकों को भूल रहे हो। परमेश्वर इस प्रकार नहीं बोलता।" यही कारण हैं कि बहुत से मूर्ख पतियों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है। वे पत्नी के आधीन रहनेवाले पति हैं; जो पत्नियों की बातों में आते है। इस प्रकार अनेक विश्वासियों ने हानि उठाई है। परमेश्वर की सलाह लेने के बदले उन्होंने अपनी पत्नी, मित्रों पड़ोसियों अथवा अपने मस्तिष्क की सलाह ली है। एक कहता है, "मैं तो स्नातक हूँ। मैं यूनानी और इब्रानी भाषा जानता हूँ। बहुत सी दूसरी बातें मैं जानता हूँ। मैं अपना समय प्रार्थना में क्यों नष्ट करुँ? मैं अपनी सामान्य बुद्धि से काम करुँगा।" इस प्रकार लोग अनेक त्रुटियाँ करते है।

२ शमूएल २:१ में जब वह हेब्रोन आया, वह शून्य नम्र और विछिन्न हो गया। हर विषय में उसने परमेश्वर की सलाह ली। "क्या मैं ऊपर जाऊँ? क्या मैं ऊपर जाऊँ?" मैं किधन जाऊँ? "क्या मैं ऊपर जाऊँ?" "कब मैं ऊपर जाऊँ?" यह पुन: प्राप्ति की चतुर्थ

रीति है। अपनी बुद्धि पर निर्भर न हों, न ही अपनी शारीरिक शक्ति और मानवीय रीतियों का भरोसा करें। आत्मनिर्भरता का सम्पूर्णत: परित्याग करें और हर बात के लिए परमेश्वर के पास जाएँ। आप उसके यह भी पूछें, कि आप अपना पैसा किस प्रकार व्यय करें।

बहुत से ऐसे पति हैं, जो अपना वेतन अपनी पत्नी को देते हुए कहते हैं, "श्रीमती जी यह मेरा वेतन है।" बाद में जब कभी पति पाँच रुपए माँगता है, तो वह कहती है, "उन पाँच रुपयों का क्या हुआ जो मैंने उस दिन दिए थे?" पति कुछ उत्तर नहीं दे पाता। जो कुछ वह कहती है, वह मानता है। यदि आप ऐसे पतियों से पूछें, "तुम अपना सब पैसा क्यों अपनी पत्नी को दे देते हो?" तो वे कहते हैं, "यदि मैं उसे पैसा न दूँ तो वह मुझे शान्ति से न रहने देगी। वह मेरी जेबों की तलाशी लेती रहेगी। तब अन्त में हारकर मुझे सब कुछ उसे देना पड़ेगा।" ऐसे व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करना नहीं जानते। आपको सीखना चाहिए कि हर बात के लिए आप परमेश्वर के पास आएँ। समय, धन, शक्ति, सामर्थ्य तथा सभीं बातों के विषय परमेश्वर से सलाह लें।

इसी तरह मंडली के प्रत्येक कार्य के लिए भी परमेश्वर की सलाह लें। इस विषय पर हमने पूर्व के एक अध्याय में सारांष में अध्ययन किया है। बहुत से व्यक्ति कलीसिया के अध्यक्ष बनना चाहते हैं, और मत समर्थन प्राप्त करने के लिए अनेक महीनों तक लड़ते-झगड़ते रहते हैं। एक शहर में मैंने एक नवयुवक को मत माँगते देखा। वह कह रहा था, "कृपया प्राचीन बनने के लिए मुझे मत प्रदान कीजिए।" मैंने उससे पूछा, "तुम कलीसिया के प्राचीन क्यों बनना चाहते हो?" उसने मुझसे कहा, "ये अध्यक्ष जो वृद्ध हो गए हैं, बिल्कुल अच्छे नहीं है। इन्हें निकाल देना होगा। यदि मैं चुनाव में जीत जाऊँ तो इन्हें निकाल दूँगा।" तब मैंने कहा, - "क्या आप बता सकते हैं, कि बाइबल के अनुसार प्राचीन की आत्मिक योग्यता क्या होती है? वे कैसे बनाए जाते हैं, और वे कौन होते हैं?" वह

चुप रहा, तब मैंने कहा, "अपनी बाइबल ले आओ।" अतएव वह अन्दर गया। मैं ओसारे पर बैठा था। पाँच मिनट बीते, दस मिनट बीते। बीस मिनट भी बीत गए। परन्तु वह अब तक अन्दर ही था। तब उसकी बहिन ने आकर धीरे से, कहा – "उसके पास बाइबल नहीं हैं।" तोभी ऐसा व्यक्ति जिस के पास न तो बाइबल थी, न बाइबल के सम्बन्ध में कुछ जानता था, वह प्राचीन बनना चाहता था।

जब ऐसे समिति-सदस्य तथा प्रीचन महीने में एक बार सभा करते हैं, तब सभा के आरंभ में एक छोटी-सी प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं – "पास्टर महाशय, कृपाकर एक छोटी सी प्रार्थना कीजिए।" प्रार्थना के पश्चात् वे यह भी कहते है। – "प्रभु यीशु मसीह, अब हम लोग ऐसी बातों के लिए लड़ने-झगड़ने जा रहे हैं, जिन्हें हम नहीं चाहते कि आप जाने। अतएव कृपाकर बाहर चले जाएँ। हमारे रुपए-पैसे के बारे में आपको कुछ भी नहीं जानना चाहिए। जब हमें आवश्यकता होगी, आपको बुला लेंगे।" तत्पश्चात् वे तीन घंटे तक लड़ते-झगड़ते रहते हैं। आपने वे पांच रुपए, या दो रुपए या वह एक रुपया कैसे खर्च किया?" कृपया उसका हिसाब बताए? अमुक तीन रुपए के लिए बिल बताइये।" आदि-आदि। झगड़ा समाप्त होने के बाद वे कहते हैं – "प्रभु यीशु मसीह कृपया अब अन्दर आ जाइये। हम घर जाने को तैयार हैं। प्रभु हमें आशीष दीजिए।" यह क्या तमाशा है?

बस यही कारण है कि इन धर्म सभाओं में आप उजड़ापन और मृत्यु पाते हैं। इन तथा कथित धर्म सभाओं के प्राचीन इतना भी नहीं जानते कि परमेश्वर की इच्छा को कैसे जानें और उससे प्रार्थना कैसे की जाए। फिर भी वे कलीसिया के नेता बनकर शासन करना चाहते हैं। वे नाम-सम्मान यश गौरव तथा धन चाहते हैं, बस!

हेब्रोन में आप यह सीखते हैं, कि आप प्रत्येक बात के लिए व्यक्तिगत रुप से अथवा सामूहिक रुप से परमेश्वर से यह कहते हुए पूछ लें – "हम लोग क्या करें? हम कहाँ जाएँ?"

इसी प्रकार हमने यह देखा हे, कि बहुत से लोग विवाह के सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करना नहीं जानते। वर या वधू निश्चित कर लेने के पश्चात् वे पास्टर के पास जाकर कहते हैं – "हे पुरोहित, कृपया प्रार्थना करें।" वधू ढूँढ़ते समय वे योग्यताओं की एक लम्बी सूची तैयार करते हैं। लड़का चाहे मैट्रिक फेल हो, पर पत्नी की खोज करनते समय वह यह मांग उपस्थित करता है, कि लड़की को ग्रेजुएट होना चाहिए। स्वयं वह नौकरी करता हो, या न करता हो, वह यह चाहता है, कि उसकी पत्नी शिक्षिका का काम करके उसके लिए धन उपार्जन करे। वह स्वयं काला-कलूटा हो, परन्तु उसे अवश्य ही अति सुन्दरी मिलना चाहिए। उसे संगीत का भी ज्ञान होना चाहिए इत्यादि-इत्यादि। दूसरी जगहों में लोग सुन्दरता को भले ही महत्व न दें किन्तु दहेज की रकम, ५००० रु. या १०००० रु. उनकी दृष्टि में मुल्य रखती है। वे केवल धन चाहते हैं, परमेश्वर की इच्छा नहीं। बस! इसी प्रकार अनेक विश्वासीयों का विनाश होता हैं। वे विच्छिन्न परिवारों में दु:खी जीवन व्यतीत करते हैं। कारण यह हैं कि उन्होंने परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करना नहीं सीखा है। दाऊद ने भी अनेक कष्टमय वर्षों के पश्चात् यह शिक्षा प्राप्त की कि प्रभु से सर्वदा पूछे, - "हे प्रभु, क्या मैं जाऊँ? क्या मैं जाऊँ?"

एकादश अध्याय
परमेश्वर के दिव्य विधान

विश्वासी होने के कारण हमें अनेक संकटों तथा क्षति के बीच से पार होना पड़ता है। इनमें से कई तो हमारी अपनी मूर्खता एवम् असफता के कारण घटित होते हैं। जो भी हो, यदि हम दिव्य नियमों का पालन करें, तो हम इन सबको पुन: प्राप्त कर सकते हैं।

हमने देखा कि परमेश्वर ने किस प्रकार दाऊद को कतिपय दिव्य विधियों के पालन के द्वारा अपनी सभी व्यक्तिगत तथा राष्ट्रगत क्षतियों को पुन:प्राप्त करने के योग्य बनाने के निमित्त हेब्रोन तथा सिय्योन पहुँचाया।

हेब्रोन में सात वर्ष छ:मास रहने के पश्चात् दाऊद सिय्योन आया। जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, कि हेब्रोन का अर्थ संगति है, तथा परमेश्वर ने दाऊद को पहले हेब्रोन में तैयार किया, जहाँ उसने संगति का पूरा-पूरा अर्थ समझा। हेब्रोन के बाद दाऊद को सिय्योन लाया गया। इस स्थान के विषय में सात बातें सीखनी हैं। जैसे-जैसे आप इन बातों को जानते है और किस प्रकार संगति के द्वारा अपनी प्रत्येक क्षति की पूर्ति कर सकते हैं (२ शमूएल ५:६, ७, १०)

१. परिवेश

उस समय यबूसियों ने सिय्योन पर अधिकार कर लिया था। कारण यह था, कि बिन्यामीन उन्हें यरुशलेम से भगा सकने में असफल हो गए थे। व्यवस्थाविवरण ७ के अनुसार इस्त्राएलियों के लिए उचित था, कि वे उस देश की रहनेवाली सातों जातियों को निष्कासित करें, तथा उनके साथ न तो कोई प्रतिज्ञा करें, और न उनके साथ विवाह-सम्बन्ध

स्थापित करें। वे उनकी वेदियों को तोड़ तथा मूत्तियों को चूर-चूर कर दें, ताकि उनके वहाँ रहने के सभी चिन्ह नष्ट हो जाएं। परन्तु मानवीय बुद्धि के प्रयोग द्वारा उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ दिया। सभी सातों जातियाँ वहाँ रहती रहीं, जिससे इस्त्राएलियों के समस्त राष्ट्र को भारी क्षति उठानी पड़ी।

२ शमूएल ५ में इस बात का वर्णन है, कि दाऊद ने यबूसियों को हराकर सिय्योन पर अपना अधिपापत्य स्थापित किया तथा नगर में अपनी राजगद्दी को सुदृढ़ बनाया। परन्तु शोक की बात है, कि वह अभिमान में अंधा हो गया। (२ शमूएल २४. १- १०) अपने पापी अहंकार में आकर उसने प्रजा की गणना करना आरंभ किया, जिसके लिए परमेश्वर को उसे दण्ड देना पड़ा।

अभिमान महापाप है। अनेकों विश्वासियों ने अभिमान के कारण भारी क्षति उठाई है। सम्भव है: कि वे उच्चकोटि के विश्वासी हों। वे परमेश्वर के वचन में विश्वास भी रखते हों। प्रभु की सेवा के लिए वे बड़ा त्याग भी करते हों। फिर भी उनके उत्साह-पूर्ण क्रिया-कलापों के साथ ही उनकी सबसे बड़ी असफलता उनका अहंकार है। दाऊद की भी यही अवस्था थी। योआब ने उसे आगाह भी किया, कि वह प्रजा की गिनती न कराए। परन्तु उसने कुछ भी न सुना। फलस्वरुप उसके आदेश का पालन हुआ। अतएव परमेश्वर को उसे दण्डित करना पड़ा। तत्पश्चात् भविष्यद्वाक्ता के आदेशानुसार दाऊद अरौना के खलिहान में गया। वहाँ जाकर उसने परमेश्वर की एक वेदी बनाई, और ऐसा करने से उसे सिय्योन पहुँचाया, क्योंकि वह (परमेश्वर) वेदो के लिए, तत्पश्यात् मन्दिर के लिए एक स्थान चाहता था।

परमेश्वर अपना कार्य अपनी ही रीति से करता है। वह हमारी रीति से कार्य नही करेगा। 'हवा जिधर चाहती उधर बहती है।' कई स्थानों मे हम बहुत वर्षो तक कार्य करने

पर भी कोई प्रतिफल नहीं देखते, और कई स्थानों में बहुत थोड़े समय तक कार्य करने के बाद भी हम बहुत फल देखते हैं। क्यों? प्रत्येक स्थान के लिए परमेश्वर ने अपना समय निर्धारित कर रखा है, और हम परमेश्वर के कार्य की विधि न जानने के कारण बहुत समय और शक्ति नष्ट कर डालते हैं।

उदाहरणस्वरुप हैदराबाद में कार्य आरंभ करने की बात को लीजिए। कई मित्रों ने हमें वहां जाने के लिए आमंत्रित किया, किन्तु प्रभु ने हमें स्वतंत्रता नहीं दी। वास्तव में हम हैदराबाद के बहुत निकट आ गए थे, फिर भी परमेश्वर ने वहाँ जाने की स्वतंत्रता हमें नहीं दी। किसी प्रकार जब निर्धारित समय आ पहुँचा, तब हमें अत्यन्त शान्ति मिली। हमने कहा – "अब हैदराबाद के लिए परमेश्वर का उपयुक्त समय आ पहुँचा।" अनेक स्थानों में जहां हम परमेश्वर से प्रार्थना करने के पश्चात् पहुँचे, उस स्थान में परमेश्वर का कार्य आरंभ करने का उपयुक्त समय था। हमने देखा कि पमरेश्वर हम से पहले वहाँ पहुँच गया, मानों यरीहो की दीवार गिर पड़ी और परमेश्वर अपनी योजना के अनुसार अपना काम कर रहा है।

सर्वप्रथम हम परमेश्वर की अपनी योजना में पहुँचाए जाएँ। सिय्योन के सम्बन्ध में जानने योग्य यह सर्वप्रथम बात हैं। दूसरी बात यह है, कि उसकी सेवा के लिए हम अपने ज्ञान, बल चातुर्य एवम् सद्गुणों पर निर्भर न रहें। जब हम अपने आप को सम्पूर्णत: परमेश्वर पर आश्रित बना देते हैं, तभी हमें परमेश्वर की सेवा के लिए उपयुक्त स्थान प्राप्त होता है। अपनी सामर्थ्य तथा अपनी महिमा प्रदर्शित करने के लिए परमेश्वर अपना स्थान स्वयं चुनता है।

२. नमुना (१ इतिहास २८:११)

परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर का स्थान प्रकाशित करने के पश्चात लिखित रुप से मन्दिर का नमूना प्रदान किया।

सिय्योन का यह दूसरा स्वर्गीय सिद्धान्त है। यह हमारे व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन तथा मंडली के जीवन के लिए स्वर्गीय योजना है। विश्वासी के रुप में हम सभों के लिए परमेश्वर ने स्वर्गीय येाजना बना रखी है। वह चाहता है कि हम उस स्वर्गीय योजना की जानकारी प्राप्त करें। परमेश्वर के मन्दिर का स्थान प्रकट हो जाने के पश्चात् परमेश्वर कार्य आरंभ करता है, और हमारे जीवन के लिए निर्धारित योजना हमारे प्रति स्पष्ट हो जाती है।

ऐसे अनेकों व्यक्ति हैं, जो यह नहीं जानते कि परमेश्वर ने उनके जीवन के लिए कौन सी योजना निर्धारित कर रखी है। ये अनिश्यिता में जीवन व्यतीत करते हुए परमेश्वर की योजना एवम् इच्छा का ज्ञान न रखने के कारण इधर-उधर भटक कर भारी क्षती उठाते हैं। परन्तु हममें से प्रत्येक के लिए उसके, पारिवारिक तथा मांडलिक जीवन के लिए एक स्वर्गीय योजना बनी हुई है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें सिय्योन में अवश्य आना होगा। परमेश्वर के भक्तों की संगति के द्वारा हम उसकी योजना सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। जो परमेश्वर के भवन से दूर रहते हैं, उन्हे परमेश्वर की योजना प्राप्त करना बहुत कठिन है। यदि आप केवल वचन के लिए ही परमेश्वर के मन्दिर में आते हैं, तो वचन आपको भले ही मधुर लगे, किन्तु आप परमेश्वर की योजना को नही समझ सकते। किन्तु जब तक आप इन दो बातो को सीख न लें, तब तक परमेश्वर अपनी स्वर्गीय योजना आपको नही दे सकता प्रथम-परमेश्वर के लोगों के साथ सम्पूर्ण संपति और दूसरी स्वयं परमेश्वर के

साथ संगति रखना। किसी प्रकार इस दोहरी संगति के द्वारा परमेश्वर अपनी योजना, प्रतिदिन, प्रतिमाह और प्रतिवर्ष प्रकट करेगा। परमेश्वर की योजना की प्रतिदिन प्रकट होते देखकर महान आनन्द मिलता है। साथ ही हम कह सकते हैं, "मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर आज मुझे यहाँ रखना चाहता है। मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर ने मुझे यहाँ पहुँचाया हैं। मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर ने मुझे यहाँ रखा है। मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझ से कह रहा हैं: तुम आज यहाँ जाओ, और कल वहाँ जाओ।" ऐसा हमारे साथ प्रतिदिन निश्चित रुप से होना चाहिए, कभी-कभी नहीं। याद रखिए, जब दाऊद बिल्कुल विच्छिन्न हो गया, तभी परमेश्वर ने उसे स्वर्गीय योजना दी।

३. सामग्री (१ इतिहास २६:२७)

'जो लूट का सामान लड़ाइयों में मिलता था, उसमें से कुछ उन्होंने यहावा का भवन दृढ़ करने लिए पवित्र किया।' सामग्री एकत्र करना द्वितीय दैवी सिद्धान्त है। यहोबा के भवन के लिए स्वर्गीय योजना प्रदान करने के पश्चात् योजना की पूर्ति के लिए प्रभु को सामग्री की आवश्यकता पड़ी। जब आप मिट्टी की दीवार बनाना चाहते हैं, तब आपको दीवार के लिए मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु जब आप पक्की दीवार बनाना चाहते हैं, तब आप को उत्तम सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। परमेश्वर के भवन के निर्माण के लिए भी यही होता है। यदि आपने इसे सीख लिया है, तो आप यह भी जानेंगे कि उसे कैसी सामग्री की आवश्यकता है।

जब परमेश्वर ने दाऊद को अपनी योजना बताई तो दाऊद को यह ज्ञात हो गया कि परमेश्वर क्या चाहता है। अतएव दाऊद ने प्रत्येक युद्ध से सामग्री एकत्र कर ली। उसने लूट का सामान एकत्र किया। उसने जान लिया कि परमेश्वर अपने भवन के लिए सोना,

चांदी, पीतल तथा अन्य दूसरी वस्तुएँ चाहता है (१ इति २६:१-२)। इस कारण उसने इस सामग्रियों को एकत्र कर लिया।

अब हम अपने जीवन में देखें। अपने जीवन काल मैं हमें अनेक युद्धों का सामना करना पड़ता है। ऐसे युद्ध हमारे जीवन में लगभग प्रतिदिन अथवा प्रति सप्ताह आते रहते हैं। हमारे हृदयों में संग्राम एवम् विवाद चल रहे है। शत्रुओं के द्वारा तथा कभी-कभी दरिद्रता या अन्य समस्याओं के द्वारा हमें अनेकों कलहों का सामना करना पड़ता है। परमेश्वर इन युद्धों को हमारे जीवन में प्रवेश करने की स्वीकृति प्रदान करता है, ताकि हमे आवश्यक सामग्री परमेश्वर के भवन के लिए जुटा सकें। दाऊद को बहुत से युद्ध करने पड़े, ताकि वह लूट का बहुत सामान एकत्र कर सके। परमेश्वर की योजना के अनुसार उसके भवन के लिए सामान भेंट कर सकने के कारण दाऊद बहुत आल्हादित हुआ। परमेश्वर सामग्री चाहता है। एक बार जब आप परमेश्वर की योजना में प्रवेश कर लेते हैं, तब किसी भी प्रकार की परीक्षा और योजना में प्रवेश कर लेते हैं, तब किसी भी प्रकार की परीक्षा और समस्याएँ आपको निराश नहीं कर सकती। कठिनाइयाँ चाहे कैसी ही कष्टदायक हों, आप निराश नहीं होंगे, क्योंकि आप जानते हैं, कि इन दु:खों के द्वारा परमेश्वर अपने भवन के लिए सामग्री एकत्र करने में आपकी सहायता कर रहा है। दाऊद को मन्दिर का सामना एकत्र करने के लिए कई वर्ष लग गए, अत: जीवन-भर हमें भवन के लिए सामग्री एकत्र करना ह। किन्तु यह तो हम तभी समझ पाएँगे, कि हमने क्या और कितना एकत्र किया है, जब हम स्वर्ग जाकर स्वर्गीय यरुशलेम को देखेंगे।

४. एक ज्ञानी प्रधान-शिल्पी

जब दाऊद को मन्दिर का स्थान मिल गया, और उसे योजना प्राप्त हो गई, तथा सामान भी एकत्र कर लिया, तब उसे एक सिद्ध शिल्पी की आवश्यकता हुई।

जब कोई इमारत बनाई जाती है, तब एक इंजीनियर का होना आवश्यक है। एक ऐसा व्यक्ति भी चाहिए, जिसके आधीन सम्पूर्ण इमारत बननो का भार हो। उसे यह निश्चय होना चाहिए कि सम्पूर्ण इमारत योजना के अनुसार बन रही है। अब दाऊद को ऐसे एक व्यक्ति की आवश्यकता थी। क्योंकि परमेश्वर के भवन का निर्माण एक बहुत विशाल कार्य था, और साधारण मनुष्यों से यह नही हो सकता था। दाऊद ने अब सुलैमान को बुलाकर कहा – "हे मेरे पुत्र सुलैमान परमेश्वर ने तुझे अपने भवन के निर्माण के निमित्त चुना है। उसने तुझे चुना है। अब तु दृढ़ होकर काम में लग जा। यह योजना देख, और यह सामग्री सम्भाल। अब तू भवन निर्माण के कार्य में लग जा। अत: सुलैमान एक ज्ञानी सिद्ध शिल्पी बना।

हम नए नियम में देखते हैं, कि पौलुस प्रेरित एक ज्ञानी प्रधान शिल्पी था, और उसके द्वारा परमेश्वर की योजना वितरित हुई। यह सिय्योन का चतुर्थ दिव्य सिद्धान्त है। परमेश्वर को योजना के अनुसार निर्मित होने के लिए हमें एक सिद्ध और ज्ञानी शिल्पी की आवश्यकता है। केवल शिक्षा देने से काम नहीं चलने का, हमें प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक और पास्टर की आवश्यकता है, तब हम परमेश्वर की योजना के अनुसार निर्मित होंगे (इफीसियों २:२०)। प्राचीनकाल की कलीसिया में आने-जानेवाले विश्वासयोग्य व्यक्ति थे, जिनकी विश्वासयोग्यता के कारण परमेश्वर का कार्य दृढ़ आधार भूमि पर अवस्थित था। ऐसा ही प्रत्येक काल में है। यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर का कार्य दृढ़ और सबल हो, तो आपके पास परमेश्वर के चुने हुए पात्र होना चाहिए।

तब परमेश्वर ने सुलैमान को चुना (१ राजा २:१२:१३:११) तब उसने परमेश्वर से बुद्धि माँगी (१ राजा ३:५,६) इसी प्रकार वह प्रधान राजमिस्त्री बन सका। उसने दैवी बुद्धि माँगी और समझने वाला हृदय मांगा, ताकि वह भले और बुरे का भेद कर सके। उसने धन, दीर्घ जीवन, और स्वास्थ्य नहीं मांगा, उसने केवल स्वर्गीय बुद्धि माँगी, ताकि वह एक ज्ञानी, सिद्ध शिल्पी बन सके।

जिन्हें यह दिव्य ज्ञान प्राप्त है, वे इस ज्ञान के द्वारा परमेश्वर की इच्छा और विचारधारा को स्पष्ट रुप से समझ सकते हैं। यदि परमेश्वर का कार्य शान्तिपूर्ण रुप से होनेवाला है, तो प्रेरितों के योग्य दृष्टि रखनेवाले तथा अनुभव शील व्यक्तियों का प्रादुर्भाव अवश्य होगा।

५. चतुर कारीगर

पाँचवी बात यह है, कि यद्यपि सुलैमान के पास प्रचुर धन-सम्पत्ति थी, उसके राज्य में चतुर कारीगर भी थे, फिर भी वह जानता था, कि परमेश्वर के भवन निर्माण के लिए वे यथेष्ट न होंगे। अत: उसने हीराम को लिखा जो कि सोर का राजा था, "लबानोन से तू मेरे लिए देवदारु की लकड़ी तथा ऐसे कारीगर भेज, जो लकड़ी और पत्थर पर नक्काशी कर सकें।"

परमेश्वर को अपने कार्य के लिए सब प्रकार के कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ती है। संसार के सभी भागों से परमेश्वर के लिए कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। जिस प्रकार सुलैमान ने संसार के बहुत से देशों से कुशल कारीगर बुलाए, जो लकड़ी और पत्थरों पर कार्य कर सकें। इसी प्रकार परमेश्वर के कार्य के लिए हमें संसार के सभी देशों के स्त्री-पुरुष चाहिए क्योंकि केवल एक ही देश के सदस्यों के द्वारा परमेश्वर का भवन नहीं बन सकता। चाहे कोई देश कितना ही ज्ञानबान, और धनाड्य हो, यह परमेश्वर का

भवन अकेले नहीं बना सकता। हमें लकड़ी और पत्थर समस्त संसार से प्राप्त करना है। यह सिय्योन का पाँचावा दिव्य सिद्धान्त है। जब हम परमेश्वर का भवन बनाना आरंभ करते हैं, तभी हम यह अनुभव करते हैं, कि हमें देश विदेश से सहकर्मियों की कितनी आवश्यकता है। तभी परमेश्वर का कार्य निर्बाध गति से चल सकता है।

६. साम्यता और एकता (१ राजा ६:७)

छठी बात यह है कि यद्यपि लोग भारी-भारी पत्थरों और इमारती लकड़ियों को विशाल लाटों तथा भवन के लिए शहतीरों के काम में लगा रहे थे, फिर भी मन्दिर में हथियार चलने की कोई भी ध्वनि नहीं हो रही थी। कारीगर पूर्ण शान्ति एवम् निर्विन्घतापूर्वक काम करते जा रहे थे, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने काम में दक्ष था, तथ उन्हें परमेश्वर-प्रदत्त योजना का ज्ञान था। दूसरे कारीगर पत्थर निकालने का काम कर रहे थे वे जो पत्थर निकालते थे, ठीक-ठीक बैठ जाते थे। उन्हें काटने-छाँटने की आवश्यकता न पड़ती थी क्योंकि वे विश्वास के साथ निर्मित किए जाते थे।

यदि हम परमेश्वर की योजना स्पष्ट रुप से समझ लें, स्वर्गीय सामग्री, कुशल शिल्पी, और शिक्षित सहकर्मी प्राप्त करले, तब परमेश्वर का कार्य शान्तिपूर्वक और निर्विघ्न रीति से चलता रहेगा जहाँ योजना नहीं है, वहाँ झगड़ा झंझट और द्वन्द होता है। जिनके पास परमेश्वर की योजना नहीं है, वे झगड़ना और विवाद करना पसन्द करते है। परमेश्वर की योजना जानना अति आवश्यक है, ताकि परमेश्वर का कार्य सिद्ध एकता और साम्यता के साथ चलता रहे।

७. परमेश्वरकी महिमा (२ इतिहास-७:१, २)

सातवी बात हैं, जब सुलैमान ने प्रार्थना समाप्त की, तब परमेश्वर की अग्नि ने होमबलियों, तथा मेलबलियों को भस्म कर डाला, तथा सम्पूर्ण भवन परमेश्वर की महिमा

से भर गया। जब काम समाप्त हो गया, तभी परमेश्वर की महिमा नीचे उतरी। इसी प्रकार जब परमेश्वर का कार्य समाप्त हो जाएगा, तभी हम उसकी महिमा को देखेंगे। अपूर्ण कार्य से परमेश्वर की महिमा नहीं हो सकती। जब मन्दिर का निर्माण कार्य समाप्त हुआ, परमेश्वर की महिमा नीच उतरी। ऐसा ही मन्दिर के सम्बन्ध में भी हुआ, जब कार्य समाप्त हुआ, और परमेश्वर की योजना सम्पादित हुई, तब पमरेश्वर की महिमा नीचे उतरी, तब परमेश्वर अपनी सम्पूर्णता में वार्तालाप करने और स्वयं को प्रकट करने लगा। सम्पूर्ण देश और राज्य आनन्द और आल्हाद से भर उठा (२ इति.७:८-१२) प्रत्येक ने उस आनन्द का भाग पाया। परमेश्वर वार्तालाप करने लगा, और कहा, "मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है, मैं ने इस स्थान को अपने लिए बलिदान का घर करके स्वीकार किया है (पद १२)। मेरा मन और मेरी आँखे सदा-सर्वदा इस पर बनी रहेंगी।" इस प्रकार परमेश्वर उन लोगों के साथ रहने के लिए अपनी सम्पूर्णता में उतर आया। परमेश्वर ने अपनी योजना के अन्तर्गत दाऊद को सिय्योन में पहुँचाया, ताकि वहाँ अपने आप को अपने सब लोगों के सामने अभिव्यक्त कर सकें।

सिय्योन में जो सात स्वर्गीय नियम अथवा सिद्धान्त हैं, उन्हें हम फिर से दुहरा लें। १- मन्दिर के लिए परमेश्वर द्वारा निर्वाचित स्थान की जानकारी प्राप्त करना। २ – मन्दिर के लिए स्वर्गीय योजना। ३ – मन्दिर की सामग्री। ४ – एक कुशल राज-मिस्त्री जिसे भवन निर्माण के समस्त निरीक्षण का दर्शन हो। ५ – कुशल करीगरों की आवश्यकता समस्त संसार के देशों से है। ६ – सम्पूर्ण कार्य बहूत ही निर्बांध रुप से शान्ति, एकता और साम्यता से हो। ७ – प्रभु की महिमा के नीचे आकर भवन में भर जाना। तब सिय्योन में परमेश्वर का उद्देश्य यथार्थ रुप से पूर्ण हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ प्रकट होकर महिमा में राज्य किया।

द्वादश अध्याय
परमेश्वर की सामर्थ्य का रहस्य

इस अध्ययन माला में, परमेश्वर के वचन से हम इस बात पर विचार कर रहे हैं, कि हमारी आध्यात्मिक क्षति को पूर्ति कैसे की जा सकती है। हमने इस बात का संकेत किया है कि परमेश्वर ने इस बात की योजना कैसे बनाई, कि मनुष्य हेब्रोन तथा सिय्योन के द्वारा अपनी समस्त क्षति की पूर्ति कैसे कर सकता है। हेब्रोन का अर्थ है, संगति, सर्वप्रथम परमेश्वर के साथ तत्पश्चात् यह विश्वासी के रुप में पारस्परिक संगति। सिय्योन का अर्थ हे, परमेश्वर का स्वर्गीय भवन अथवा अध्यात्मिक भवन। जितना ही अधिक हम इस बात को समझते जाते है कि आध्यात्मिक भवन क्या है, उतना ही अधिक हम अपनी क्षति की पूर्ति करते जाते हैं। हम इस बात का वर्णन कर चुके हैं, कि परमेश्वर ने दाऊद को किस प्रकार धीरे-धीरे सिय्योन पहुँचाया क्योंकि उसके सिय्योन में पहुँचाए जाने के पश्चात् ही राष्ट्रीय क्षति की पूर्ति हो सकी। जब सुलैमान ने परमेश्वर की आज्ञानुसार मन्दिर का निर्माण किया, तब परमेश्वर ने अपनी पूरी महिमा के साथ सिय्योन में पदार्पण किया। वह अधिक स्पष्ट भाषा में सम्पूर्ण राष्ट्र से बातें करने लगा। समस्त जनता ने परमानन्द पाकर हर्ष मनाया। वे बड़ी आशा और विश्वास के साथ परमेश्वर के भवन आए। सरल भाषा में हम यह कह सकते हैं, कि परमेश्वर उनके लिए अधिक यथार्थ हो गया।

भजन संहिता ५७:२ के द्वारा हम सिय्योन के विषय और भी अधिक जानकारी प्राप्त करते है। “यहोवा याकूब के निवासों से बढ़कर सिय्योन से प्रीति रखता है।”

याकूब के निवास

याकूब उस व्यक्ति का प्रतीक है, जिसे परमेश्वर चुनता है। परमेश्वर ने याकूब को उसकी सारी मूर्खता, त्रुटि, तथा दुर्बलता के रहते हुए भी निर्वाचित किया। किन्तु याकूब को अपने विषय परमेश्वर की इच्छा को समझ सकने के पूर्व अनेक अनुभवों के मध्य से पार जाना पड़ा। बीस वर्ष से अधिक समय तक याकूब अपने परिश्रम के द्वारा परमेश्वर की उन आशीषों के द्वारा ज्येष्ठ पुत्र के अधिकारों की चर्चा सुनता आ रहा था। अत: अपनी माता की सहायता से अपने पिता को धोखा देकर उसने वह भाग प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

पुन: अपने ससुर के घर में भी उसने ऐसा ही किया। जब उसने अपने ससुर का घर छोड़ा, तब वह बहुत कष्ट में था। यद्यपि याकूब के पास बहुत धन और पशु थे, फिर भी हम उसे भयभीत देखते हैं (उत्पत्ति)। भजन संहिता ८७:२ में याकूब के समस्त निवास उन कार्यो की और संकेत करते हैं जो उसने परमेश्वर की आशीष प्राप्त करने के लिए स्वयं के परिश्रम, युद्ध और मानवीय प्रयत्नों के द्वारा किया। वह मानवीय विधि से पहिलौठे का अधिकार प्राप्त करना चाहता था।

इसी तरह के अनेक विश्वासी भी है। वे मानवीय प्रयत्नों के द्वारा परमेश्वर की आशीष का आनन्द प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। वे मानवीय बुद्धि के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु अन्त में वे निराश हो जाते हैं। यद्यपि वे कई वर्षो तक बाइबल पढ़ते हैं, और मानवीय ज्ञान के द्वारा वे बाइबल को समझना चाहते हैं, फिर भी उनके जीवन से यह प्रदर्शित होता है, कि वे पराजित ही हुए हैं। परमेश्वर की सेवा में वे बहुत धन व्यय करते हैं, परन्तु कोई फल दिखाई नहीं पड़ता। वे परमेश्वर के लिए बहुत दु:ख झेलते हैं, परन्तु उनके जीवन में कोई आनन्द नहीं। वे घंटों प्रार्थना करते है, परन्तु अपनी प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं पाते। क्यों? क्योंकि वे इन कामों को याकूब के समान

अपने प्रयत्नों के द्वारा कर रहे हैं। मानवीय प्रयत्नों, मानवीय योजनाओं तथा मानवीय ज्ञान के द्वारा वे स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। ऐसे व्यक्ति मानों याकूब के निवासों में रह रहे हैं।

सिय्योन के फाटक (भजन संहिता ८७:१-२)

'सिय्योन के फाटक' (पद २) परमेश्वर का प्रेम सिय्योन की ओर है। फाटक इस बात का संकेत करता है, कि कोई बाहर है, जो भीतर आना चाहता है। धर्मशास्त्र (बाइबल) कहता है, 'यहोवा सिय्योन के फाटकों से प्रीति रखता है।' परमेश्वर सिय्योन के फाटकों में प्रवेश करने में प्रीति रखता हैं, तथा आनन्दित होता है। यदि हम भी परमेश्वर के पूर्ण प्रेम का रसास्वादन कर सकें तो हम अवश्य ही सिय्योन के अंग हो जाएंगे।

सिय्योन की नींव पवित्र पर्वत पर किया गया है (पद १) सिय्योन की नींव अतिदृढ और अटल है। यह नींव पवित्र पर्वत पर है। जब हम परमेश्वर के समान पूर्णत: पवित्र बनने की कामना करते हैं तो वह हमें दृढ़ आधार पर ले आता है।

परमेश्वर का नगर (पद ३) इस स्थान का यह दूसरा नाम है। 'सिय्योन' और 'परमेश्वर का नगर' एक दूसरे के स्थान पर व्यवहृत किया जा सकनेवाले शब्द हैं।

'सर्वोन्नत ही उसकी स्थापना' करेगा (पद ५) जो याकूब के निवासों में निवास कर रहे हैं, वे अपनी स्थापना के लिए मानवीय शक्ति पर भरोसा करते हैं। किन्तु जो सिय्योन में आ जाते हैं, वे वे स्वयं परमेश्वर के द्वारा प्रतिष्ठित होते हैं।

'परमेश्वर गणना करेगा' (पद ६) जो सिय्योन में निवास करते हैं – परमेश्वर उनके सम्बन्ध में लिखित विवरण रखता है। हम अपनी शक्ति पर भरोसा रखकर जो कुछ

करते हैं, सब व्यर्थ है। किन्तु परमेश्वर के निवास में रहकर हम जो कुछ करते हैं, उन सबका विवरण अनन्तकाल तक स्मरण रहने के लिए लिपिबद्ध किया जा रहा है।

'गायक' (पद ७)। याकूब के निवास स्थानों मे आँसू, विषाद और निराशा होंगे। परन्तु सिय्योन मे गायक, वादक, होंगे, जो स्वर्गीय संगीत गाते रहेंगे। यह परम आनन्द की ओर संकेत करता है। सिय्योन का आनन्द इतना महान है, कि गवैये (वादक-गण) अपने वाद्य बजा-बजा कर एक साथ आनन्दित हो रहे है।

मेरे सभी स्त्रोत तुझ में हैं (पद ७) स्त्रोत का अर्थ है, जलपूर्ति का उद्‌गम। कोई नहीं जनता कि एक सोते में जल किस परिणाम में है। उसमें से निरन्तर स्वच्छ जल रहता है, वह कभी सूखता नहीं। इसलिए परमेश्वर यहाँ कहता है, कि जो सिय्योन में निवास करते हैं, उनके लिए आनन्द देने वाले अनेकानेक स्त्रोत हैं।

सिय्योन में ही हम अपनी प्रत्येक क्षति की पूर्ति कर सकते हैं। यही कारण हैं, कि प्रभु हमारा ध्यान निरन्तर सिय्योन की ओर आकृष्ट करता है।

इब्राहीम और मल्कीसेवेक

उत्पत्ति १४:१८,१६। परमेश्वर के वचन में सिय्योन के सम्बन्ध का यह प्रथम प्रसंग है। 'शालेम' का अर्थ है शान्ति। शालेम अथवा यरुशलेम का अर्थ है 'शान्ति का नगर'।

१. जूते का एक फीता भी नहीं

इब्राहीम एक बड़ी परीक्षा का सामना करने ही वाला था। उसमे सदोम के राजा के शत्रुओं को युद्ध भूमि में पराजित किया और बहुत से सदोम-वासी तथा प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति लेकर वापस आया। राजा ते कृतज्ञतावश इब्राहीम को पुरस्कार देना चाहा। अत:

जो सम्पत्ति उन्होंने लूटी थी, सब उसने इब्राहीम को देनी चाही। इब्राहीम के लिए यह कैसी बड़ी परीक्षा थी। किन्तु सदोम के राजा के द्वारा ठगे जाने के पूर्व तथा इस प्रलोभन में पड़ने के पूर्व ही परमेश्वर ने शालेम के राजा, तथा परमप्रधान परमेश्वर के महायाजक मिल्कीसेदेक को भेजा, जिसने उसे आशीर्वाद दिया (पद १६)। इस कारण जब सदोम के राजा ने उसे समस्त सम्पत्ति प्रदान करनी चाही, तब इब्राहीम ने एक धागा अथवा एक जूते का फीता तक स्पर्श करने से अस्वीकार कर दिया। वह युद्ध-भूमि में था, उसके जूते घिस गये होंगे, और वस्त्र फट गए होंगे। शायद उसे अपने जूतों के लिए फीते की और वस्त्र सीने के लिए धागे की आवश्यकता रही होगी। किन्तु सदोम के राजा से इतनी साधारण वस्तुएँ लेना, भी उसने स्वीकार न किया।

इतना दृढ़ संकल्प धारण करने के लिए दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। इब्राहीम को इतना दृढ़ विश्वास कैसे प्राप्त हुआ? परमप्रधान परमेश्वर का महायाजक मेल्कीसेदेक सिय्योन से आया। उसी से इब्राहीम ने वास्तविक आशीर्वाद प्राप्त किया। क्योंकि मेल्कीसेदेक ने उसे परमप्रधान परमेश्वर के नाम पर आशीष दी, जो स्वर्ग और भूमि का स्वामी है। सदोम के राजा से कहीं बढ़कर इब्राहीम ने मेल्कीसेदेक से आशीष प्राप्त के साथ ही मल्कीसेदेक के द्वारा इब्राहीम को सिय्योन की एक झलक प्राप्त हुई, जिसने उसके विश्वास को बढ़ाया, और उसे इस योग्य किया, कि इतनी बड़ी परीक्षा में भी स्थिर रह सके।

२. रोटी और दाखमधु

मेल्कीसेदेक ने इब्राहीम को केवल आशीष ही नहीं दी, बल्कि उसने उसे सिय्योन से लाकर भोजन भी दिया। उसने उसे रोटी और दाखमधु दिया (उत्पत्ति १४:१८)। इब्राहीम

थका-माँदा था, क्योंकि वह युद्ध-भूमि से आया था। फिर भी यदि सदोम का राजा उसे मूर्गा, माँस अथवा बिरियानी भी देता, तो इब्राहीम अवश्य ही कह देता, "नहीं, धन्यवाद, मैं आपसे मुर्गा माँस अथवा अन्य कोई वस्तु नहीं चाहता।" क्योंकि इब्राहीम ने उन्हें शत्रुओं से छुटकारा दिलाया था, इसलिए सदोम का राजा, इब्राहीम और उसके सैनिकों को आनन्दपूर्वक भोजन कराता। किन्तु सदोम के राजा ने उसे जो भी उत्तम पदार्थ दिए, उन सबसे इब्राहीम ने अपना मुख इसलिए फेर लिया, क्योंकि परमेश्वर ने पहले से ही मेल्कीसेदेक को सिय्योन से भोजन के साथ भेज दिया था। परमप्रधान परमेश्वर का याजक इब्राहीम के लिए रोटी और दाखमधु लाया था, जिससे उसकी सारी थकान मिट गई थी। इसी प्रकार जब आप परमेश्वर के सिय्योन में आ जाते हैं, तब आपकी सारी थकान और सुस्ती भाग जाती है।

जब लोग अपने को अस्वस्थ अनुभव करते हैं, तो प्रभु के भवन से दूर रहने का छोटा सा बहाना भी काफी समझते हैं। वे कहते हैं, 'हम हेब्रोन नहीं जा सकते। हम तो पूर्णत: स्वस्थ नहीं है, और सभा बहुत देर तक होती रहती है। बीती रात्रि हमें पूरा आराम भी नहीं मिला।' वे सोचते हैं कि दूर रहने से वे स्वस्थ हो जाएँगे। अत: वे दूर रहते हैं, और, और भी अस्वस्थ हो जाते है। कुछ ऐसे हैं, जो निराश ओर उदास होने पर परमेश्वर के भवन से दूर रहते हैं। कदाचित् किसी ने कुछ कहकर उनका मन दु:खाया है, और वे दूर रहते हैं, किन्तू दूर रहने से उनकी स्थिती और भी गिर जाती है। परमेश्वर के भवन में आने के द्वारा ही, परमेश्वर के लोग, स्वर्गीय भोजन प्राप्त करते हैं, और उन्हें दिव्य शक्ति और आनन्द प्राप्त होता है, जिससे वे स्वस्थ, ताजा और सुदृढ़ बनते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के सम्मुख आते हैं। वे भी इब्राहीम की तरह सभी प्रलोभनों से बचे रहते, और परीक्षा में स्थिर रहते हैं।

३. दशमांश:

इब्राहीम ने यह विश्वास किया, कि प्रत्येक आशीष परमेश्वर ने दी है।

अब जब मेल्कीसेदेक ने उसे आशीष दी, तब इब्राहीम ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने ही उसे शत्रुओं के हाथ से मुक्त किया है, तथा इतनी अधिक आशीषें दी हैं। इस कारण उसने अपनी समस्त संम्पत्ति का दशमांश परमेश्वर को दिया। दशमांश उसके विश्वास को अभिव्यक्त करता है। यह उसके धन्यवाद प्रदर्शित करने की भावना को भी प्रकट करता है। इसके द्वारा इब्राहीम मानों कह रहा था, "परमेश्वर ने मुझे आशीषित किया है। अपनी शक्ति और अपने प्रयत्न से हमें जो कुछ भी प्राप्त हो सकता था, उससे कहीं अधिक परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

यह बिल्कुल सत्य है, जब तक परमेश्वर हमें आशीष नही देता, तब तक हम किसी भी वस्तु का उपभोग नहीं कर सकते। यद्यपि हम कठिन परिश्रम करते हैं, प्रचुर मात्रा में सम्पत्ति अर्जित करते हैं, फिर भी यदि परमेश्वर हमें उत्तम स्वास्थ्य प्रदान न करे, तो हम उस धन का आनन्द कैसे उठा सकते है। यदि परमेश्वर परिवार में शान्ति न दे, तौभी हमारी सम्पूर्ण सम्पत्ति व्यर्थ होगी। जो कुछ हमारे पास है, उसका उपभोग करने के लिए हमें परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता है। उसकी कृपा के बिना न तो हमें कुछ मिल सकता है, और न हम किसी वस्तु का आनन्द उठा सकते हैं।

इब्राहीम और मोरिय्याह पर्वत

२ इतिहास ३:१ के अनुसार मोरिय्याह पर्वत वह स्थान है, जहाँ इब्राहीम अपनी अन्तिम परिक्षा में उत्तीर्ण हुआ (उत्पत्ति २२)। परमेश्वर इब्राहीम के सन्मुख दस बार प्रकट हुआ। दसवीं बार वह वह उसके सामने मोरिय्याह पर्वत पर प्रकट हुआ। परमेश्वर

का मित्र बनने के लिए उसे इन दस परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना पड़ा। परमेश्वर उसे इस अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए सिय्योन में ले आया।

इसके बाद परमेश्वर उससे पूर्णरुप से आबद्ध हो गया। इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था। जो कुछ परमेश्वर ने उसे करने को कहा, सब कुछ उसने किया। उसने अपने एकलौते पुत्र को लिया, उस पर होमबलि की लकड़ी लादी और मोरिय्याह पर्वत को चला (उत्पत्ति २२:६) प्रश्न या सन्देह किए बिना ही उसने अपने पुत्र को वेदी पर रखा, तथा उसे बलिदान करने के लिए छुरा लेकर हाथ उठाया ही था, कि परमेश्वर ने उसे पुकारा – "हे इब्राहीम, हे इब्राहीम, बालक पर अपना हाथ न उठा (उत्पत्ति २२:११,१२)।०१४७ जब वह मुड़ा तो देखा, एक मेम्ना झाड़ी में उलझा हुआ है। उस मेढ़े को वहाँ से भाग निकलने का कोई उपाय नहीं था। परमेश्वर ही उसे वहाँ लाया था। अतएव वह परमेश्वर के हाथ से बचकर कैसे निकल सकता था? कोई मनुष्य उसे वहाँ नही लाया था। वह मेढ़ा किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वहाँ जा फँसा था, तथा परमेश्वर इब्राहीम से उसके द्वारा बात कर रहा था। वह कह रहा था – "हे इब्राहीम तूने मेरी आज्ञा का अक्षरश: पालन किया है। तूने कभी सन्देह नही किया। जो कुछ मैंने आदेश दिया, सब कुछ तूने किया। बिना किसी सन्देह के तूने मेरी आज्ञा का पालन किया है। तू इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।"

फिर परमेश्वर इब्राहीम से कह रहा था, "उस झाड़ी मे उलझे हुए मेढ़े को तू देखता है? इसी प्रकार मैं भी तेरे साथ बंधा हुआ हूँ। प्रारंभ में मैंने तुझे आदेश दिया, और तुने उस आदेश का पलान किया। अब तू मुझे आदेश दे, और मैं तेरी आज्ञा का पालन करुँगा।" कितना बड़ा सम्मान! अब इब्राहीम परमेश्वर इब्राहीम से बंध गया । आज भी वह इब्राहीम की सन्तान से अपनी प्रतिज्ञा को निभा रहा है। यद्यपि इब्राहीम की सन्तान परमेश्वर को भूल

गई, और उसके विरोध में विद्रोह किया, फिर भी परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ" – क्योंकि वह इब्राहीम के साथ वचन बद्ध हुआ था।

इसी प्रकार जब आप सिय्योन में प्रविष्ट हो जाते हैं, और किसी प्रकार का भय या सन्देह आपके मन में नहीं रहता, तो परमेश्वर आप से बंध जाता है। आप परमेश्वर को कुछ भी आदेश दें, परमेश्वर उस आदेश का पालन करेंगा। क्या कोई मनुष्य हमें इतना दे सकता है? अपने ऊपर तथा अपनी मानवीय बुद्धिबल पर भरोसा करके हम विजय नहीं प्राप्त कर सकते। सिय्योन में आने पर परमेश्वर हमारे साथ पूर्ण रुप से आबद्ध हो सकता है, तथा विश्वास के द्वारा हमारी समस्त क्षति की पूर्ति हो सकती है। इब्राहीम ने अनेकों भूलें की थी। उसने अपनी पत्नी की बात मानकर हाजिरा को पत्नी बनाकर भयंकर भूल की। इस भूल के कारण इशमाएल हमेशा के लिए परमेश्वर की सन्तान के लिए संकट का कारण बन गए। फिर भी सिय्योन में इब्राहीम ने सब कुछ प्राप्त कर लिया। हम भी अनेकों भूलें कर सकते हैं। किन्तु परमेश्वर के भवन या सिय्योन में आकर हम समस्त क्षति की पूर्ति प्राप्त कर लेंगे।

सिय्योन में आकर इब्राहीम को सच्चा विश्वास प्राप्त हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि आरंभ में भी उसे कुछ विश्वास तो था। क्योंकि जब परमेश्वर ने उससे बाते कीं, तो उसने आज्ञा मानकर कसदियों के ऊर देश को त्याग दिया। यह एक महान त्याग था, क्योंकि उसने घर-द्वार और परिवार सबको छोड़ दिया। फिर भी यह तो विश्वास का अपरिपक्व सोपान (कच्ची सीढ़ी) था। उत्पत्ति २२ में सिय्योन आने के पश्चात् ही उसे सच्चा विश्वास प्राप्त हुआ। उसने यह विश्वास किया, कि यदि उसने अपने पुत्र को वेदी पर बलिदान कर दिया, तो प्रभु उसे अवश्य ही जीवित कर देगा। वेदी पर वह अपने पुत्र को बलिदान करने ही वाला था, किन्तु साथ ही वह यह जानता था, कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को परिवर्तित

नहीं कर सकता, बल्कि वह उसे पुनर्जीवित करेगा। ऐसा विश्वास प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है।

परमेश्वर के भवन से दूर न रहें, न उसे तुच्छ समझें। परमेश्वर के सन्तों की संगति को तुच्छ न समझें। परमेश्वर के भवन में अपना पूरा-पूरा भाग लें। तब आप अवश्य ही अपनी समस्त क्षति की पूर्ति कर सकेंगे।

इब्राहीम के जीवन से इन दो बातों की शिक्षा ग्रहण करना बहुत आवश्यक है। अपनी सम्पत्ति और ज्ञान के द्वारा परमेश्वर की सम्मानित करें - यह मानें, कि परमेश्वर ही आपको आशीष दे सकता है - यह प्रथम शिक्षा है। दूसरी शिक्षा यह है कि हम परमेश्वर के भवन में दृढ़ किन्तु सरल विश्वास को लेकर आएँ। तब आप सम्पूर्णत: और सत्य रुप से परमेश्वर के उद्देश्य में आबाद्ध हो जाएँगे।

- इति -